आज़ादी का अमृत महोत्सव

एनएचपीसी NHPC

राजभाषा ज्योति

अंक: 40 अक्तूबर, 2021 – मार्च, 2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव विशेषांक

हिंदी कवि सम्मेलन - झलकियां

अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक
एनएचपीसी लिमिटेड
फरीदाबाद

संदेश

हमारा निगम राष्ट्र की एक अग्रणी जल विद्युत उत्पादन संस्था है और विगत कई वर्षों से जल विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में अपने सराहनीय कार्यों द्वारा नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर है। हमारा निगम विद्युत उत्पादन के जरिए देश के विकास में योगदान देने के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए भी दृढ़ता के साथ कार्य कर रहा है। गत वर्षों के दौरान कोविड़ महामारी की वजह से विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, परंतु हमने अपने निगम में किसी भी कार्यक्षेत्र की प्रगति में, चाहे जल विद्युत विकास से संबंधित हो या राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन से संबंधित हो, कोई बाधा नहीं आने दी है। यह आप सभी की कर्मठता और कर्तव्यनिष्ठा का द्योतक है। मुझे यकीन है कि भविष्य में भी हम अपने–अपने कार्यक्षेत्र में और अधिक ऊर्जा व उत्साह से कार्य करते रहेंगे और राष्ट्र निर्माण में सहयोग देते रहेंगे।

हिंदी एक वैज्ञानिक, समृद्ध, सशक्त और जीवंत भाषा है। राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रसार वास्तव में इसके सरल रूप में प्रयोग से ही संभव होगा। इसके लिए हमें अनुवाद पर निर्भरता समाप्त करके मूल रूप में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना होगा। मेरा मानना है कि यदि उच्च अधिकारी स्वयं हिंदी में कार्य करेंगे तो इससे अधीनस्थ कार्मिकों को भी हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। इसलिए मेरा सभी उच्च अधिकारियों से विशेष रूप से आग्रह है कि अपने कार्यालीन काम–काज में अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी का प्रयोग करें और अपने अधीनस्थ कार्मिकों को भी हिंदी में काम करने के लिए निरंतर प्रेरित और प्रोत्साहित करें।

भाषा के प्रचार–प्रसार में पत्र–पत्रिकाओं की अहम् भूमिका होती है और ये सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। निगम के कार्मिकों में रचनात्मक और मौलिक लेखन को बढ़ावा देने तथा उनकी सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से **'राजभाषा ज्योति'** पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि **'राजभाषा ज्योति'** का यह अंक हिंदी के प्रचार–प्रसार में उपयोगी सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित,

(अभय कुमार सिंह)

कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)
एनएचपीसी लिमिटेड
फरीदाबाद

संदेश

भाषा समाज का दर्पण होती है। समाज में होने वाली प्रत्येक गतिविधि का प्रतिबिंब उस देश की भाषा में झलकता है। हिंदी हमारे देश की प्रमुख भाषा है। हिंदी में अन्य भाषाओं के शब्दों को अपने में समाने की अद्‌भुत क्षमता है। हर दृष्टि से हिंदी की महत्ता को देखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया था। इसलिए हिंदी में काम करना हमारा संवैधानिक दायित्व है।

निःसंदेह किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास में उसकी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक राष्ट्र में एक प्रमुख भाषा होती है जो उस राष्ट्र के अधिकांश लोगों के संप्रेषण की भाषा – संपर्क की भाषा होती है। इतिहास साक्षी है कि जिस देश ने अपनी भाषा को अपने समस्त कामकाज की भाषा बनाया, उस देश ने सदैव तरक्की की है। जापान, फ्रांस, रूस, जर्मनी आदि देश इस बात के गवाह हैं कि अपनी भाषा के प्रति उनके नागरिकों की प्रतिबद्धता के कारण ही ये देश ज्ञान–विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी हैं।

निगम में भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए पूरी निष्ठा से प्रयास करते हुए कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा के उत्तरोत्तर प्रयोग को बढ़ावा दिया गया है। निगम के वातावरण को राजभाषामय बनाने के लिए पूरे वर्ष राजभाषा प्रचार–प्रसार के लिए अनेक कार्यक्रम यथा हिंदी पखवाड़ा, हिंदी कवि सम्मेलन, राजभाषा सम्मेलन, संगोष्ठियां आदि आयोजित किए जाते हैं। राजभाषा हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए कार्मिकों को प्रेरित व प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से निगम में अनेक राजभाषा प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई हैं। साथ ही, हिंदी कार्यशालाओं व प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से कार्मिकों को हिंदी में काम करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। मुझे आशा है कि हम सभी जिस प्रकार राष्ट्र निर्माण के लिए निरंतरता से कार्य कर रहे हैं, उसी प्रकार राजभाषा हिंदी के उतरोत्तर प्रयोग बढ़ाने में सहभागी बनेंगे।

'राजभाषा ज्योति' के इस अंक में **'आज़ादी का अमृत महोत्सव'** के अवसर पर राष्ट्रीय आंदोलन और भारतीय संस्कृति पर विशेष रूप से ज्ञानवर्धक लेख प्रकाशित किए जा रहे हैं। मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक भी विगत अंकों की तरह ही उपयोगी, ज्ञानवर्धक व संग्रहणीय होगा।

(लूकस गुडिया)

संपादकीय

इस समय संपूर्ण राष्ट्र आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। अब से एक वर्ष पूर्व 12 मार्च, 2021 को पूण्यभूमि साबरमती आश्रम से इसका शुभांरम करते हुए माननीय प्रधानमंत्री ने कहा था कि अमृतकाल का समय हमारे ज्ञान, शोध और नवोन्मेष का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है जिसकी जड़ें प्राचीन परम्पराओं और विरासत से जुड़ी होंगी और जिसका विस्तार आधुनिकता के आकाश में अनन्त तक होगा।

वस्तुतः आज़ादी के अमृत महोत्सव का उद्देश्य अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता, अपने संस्कारों को संपोषित और अपनी आध्यात्मिकता और विविधता को संरक्षित और संवर्धित रखते हुए राष्ट्र को प्रौद्योगिकी, शिक्षा, स्वास्थ्य के क्षेत्र में निरन्तर आधुनिक और आत्मनिर्भर बनाने में हर भारतीय को सहयोग के लिए प्रेरित करना है। दूसरे शब्दों में इसका उद्देश्य आत्मनिर्भर, श्रेष्ठ, स्वस्थ और समृद्ध भारत के निर्माण में हर भारतीय को जोड़ना है। दरअसल यह नए विचारों का अमृतकाल है। इस महाउत्सव में स्वतंत्रता की ऊर्जा – क्रांतिकारियों, स्वतंत्रता सेनानियों, देशभक्तों द्वारा स्वाधीनता के लिए किए गए संघर्ष का ऐसा अमृत है जो हमें सदैव देश के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देता है। हमारे मन में नए विचारों और नए संकल्पों का सृजन करता है।

देश को स्वतंत्र कराने में अनेक राष्ट्रनायकों और सेनानियों ने अपनी समस्त सुख–सुविधाएं और प्राण तक न्यौछावर कर दिए थे। इसमें महारानी लक्ष्मीबाई का शौर्य, सत्याग्रह आंदोलन में गांधीजी का अद्भुत नेतृत्व, लोकमान्य तिलक का पूर्ण स्वराज का आह्वान, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिंद फौज का गठन और दिल्ली मार्च, स्वामी विवेकानंद द्वारा भारतीय संस्कृति और अध्यात्म का उन्नयन और प्रसार हर भारतीय के लिए कालजयी प्रेरणा के अनन्त स्रोत हैं।

आज़ादी के अमृत महोत्सव काल में **'राजभाषा ज्योति'** का नया अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। क्रांतिकारी राष्ट्रनायक नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, वीरागंना महारानी लक्ष्मीबाई, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के भूले–बिसरे नायक, स्वामी विवेकानन्द– राष्ट्रभक्त समाजसेवी, राष्ट्र चेतना के कवि – रामधारी सिंह दिनकर आदि विशेष लेखों के माध्यम से इस अंक को **आज़ादी के अमृत महोत्सव विशेषांक** के रूप में प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त इस अंक में गत अंकों की भांति प्रौद्योगिकी आदि विभिन्न विषयों पर भी ज्ञानवर्धक और रोचक सामग्री प्रकाशित की गई है।

आशा है सुधी पाठकों को **'राजभाषा ज्योति'** का यह 'विशेषांक' पसंद आएगा। इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी, ज्ञानवर्धक और रोचक बनाने के लिए आपके सुझावों और प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

(डॉ. राजबीर सिंह)
समूह महाप्रबंधक (राजभाषा)

राजभाषा ज्योति

अंक: 40 अक्तूबर, 2021 - मार्च, 2022

राजभाषा विभाग
एनएचपीसी लिमिटेड

मुख्य संरक्षक
श्री अभय कुमार सिंह
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता
लूकस गुड़िया
कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)

संपादक
डॉ. राजबीर सिंह
समूह महाप्रबंधक (राजभाषा)

उप संपादक
श्री जितेंद्र प्रताप सिंह
उप प्रबंधक (राजभाषा)

हरि ओम शुक्ल
उप प्रबंधक (राजभाषा)

पत्राचार का पता
राजभाषा विभाग
एनएचपीसी लिमिटेड
सैक्टर–33, फरीदाबाद, हरियाणा–121003

ई–मेलः rajbhasha-co@nhpc.nic.in

'राजभाषा ज्योति' पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं। एनएचपीसी प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रम

क्रांतिकारी राष्ट्रनायक–नेताजी सुभाष चन्द्र बोस	05
स्वामी विवेकानंद–राष्ट्रभक्त समाजसेवी	12
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम–महिलाओं की भूमिका	18
भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन–भूले–बिसरे नायक	23
वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई	28
एक विश्व–एक स्वास्थ्य के लक्ष्य में भारत की भूमिका	33
राजभाषा कार्यान्वयन उपलब्धियां : 2021–22	36
हिंदी कवि सम्मेलन का आयोजन – रिपोर्ट	42
अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन – रिपोर्ट	44
राष्ट्रीय चेतना के कवि – रामधारी सिंह दिनकर	46
टनल निर्माण में सुरक्षा उपाय	50
मंत्र की शक्ति	52
भारतीय दर्शन – एक परिचय	58
निगम मुख्यालय में एकीकृत प्रबंधन प्रणाली (आईएमएस) की उपयोगिता और उसका कार्यान्वयन	63
विशाल बैटरी : पम्प स्टोरेज हाइड्रो पावर प्लांट	69
ध्यान – विज्ञान	73
अब हमारा एक ही सपना, आत्मनिर्भर हो भारत अपना (कविता)	74
आजादी का अमृत महोत्सव (कविता)	75
हास्य योग अपनाएं और टेंशन–डिप्रेशन दूर भगाएं	76

क्रांतिकारी राष्ट्रनायक–नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

डॉ. राजबीर सिंह, समूह महाप्रबंधक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय

जन्म व पारिवारिक पृष्ठभूमि

सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को कटक (उड़ीसा) में हुआ था। उनके पिताजी का नाम जानकीनाथ बोस और माताजी का नाम श्रीमती प्रभावती था। वे अपने चौदह भाई–बहनों में छठे पुत्र और नौंवी संतान थे। सुभाष के पिता पेशे से वकील थे और 1885 में कोलकाता से कटक आकर बस गए थे। इनका परिवार एक उच्च मध्यवर्गीय परिवार था। जानकीनाथ जी गंभीर प्रकृति के व्यक्ति थे और अधिक खर्चीले नहीं थे। उन्होंने अपने बच्चों के लिए न तो अत्यधिक सुख–सुविधाएं जुटाई और न ही उन्हें किसी प्रकार का अभाव अनुभव होने दिया। स्वयं भी अनुशासन में रहते थे और अपने बच्चों को भी अनुशासन में रखा और परिश्रम के महत्व को समझाया। सुभाष चन्द्र बोस के जीवन पर इसका स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है।

शिक्षा

सुभाष चन्द्र बोस जनवरी 1902 में जब पांच वर्ष के हुए तो उन्हें स्कूल पढ़ने के लिए भेजा गया। सुभाष चन्द्र बोस ने अपनी अपूर्ण आत्मकथा में अपने स्कूल जाने का अनुभव व्यक्त करते हुए लिखा है कि 'मुझे यह नहीं पता कि दूसरे बच्चे इस तरह की परिस्थितियों में कैसा महसूस करते होंगे, परन्तु मैं बहुत खुश था। अपने बड़े भाई–बहनों को तैयार होकर रोजाना स्कूल जाते देखना और घर पर तुम्हें सिर्फ इसलिए छोड़ दिया जाना कि अभी तुम बड़े नहीं हुए हो, जबकि तुम अब छोटे भी नहीं हो, यह एक पीड़ादायी अनुभव होता है। कम से कम मैंने ऐसा ही सोचा था। इसलिए स्कूल जाने की बात पर मैं बहुत खुश था।'

सुभाष की प्रारम्भिक शिक्षा एक मिशनरी स्कूल में हुई जिसमें सुभाष को महसूस होता था कि स्कूल में दी जाने वाली शिक्षा भारतीय परिस्थितियों के अनुसार नहीं है उसमें बाइबल का अध्ययन अनिवार्य था किंतु संस्कृत या 'गीता' का नहीं। साथ ही बच्चों को इंग्लैण्ड के इतिहास और भूगोल की शिक्षा तो दी जाती थी किंतु भारतीय इतिहास और भूगोल की शिक्षा नहीं। यह सुभाष को बहुत अखरता था। तथापि सुभाष बहुत ही मेधावी थे और सदैव अपनी कक्षा में प्रथम आते थे।

सुभाष ने 1909 में कटक के रैवेन्शा कालिजिएट स्कूल में दाखिला लिया। इस स्कूल के प्रधानाचार्य बाबू बेनी माधवदास थे। सुभाष पर इनके सौम्य व्यक्तित्व का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। इस स्कूल से सुभाष ने मार्च, 1913 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की और पूरे स्कूल में दूसरा स्थान प्राप्त किया। सुभाष ने मात्र 15 वर्ष की आयु में विवेकानन्द साहित्य का पूर्ण अध्ययन कर लिया था।

इसके बाद इन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए कोलकाता के प्रसिद्ध प्रेसीडेन्सी कॉलेज में दाखिला लिया। इन्होंने प्रथम दो वर्ष अपनी शिक्षा के साथ–साथ ऋषिकेश, हरिद्वार, मथुरा, वृदांवन, बनारस जैसे अनेक

तीर्थ स्थानों की यात्रा की और अपने समय के जाने–माने व्यक्तियों से मुलाकात की। इन्होंने 1915 में इंटरमीडिएट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की और बीए में दर्शन–शास्त्र विषय चुना। इसी बीच जनवरी, 1916 में एक आकस्मिक घटना घटी।

हुआ यह कि इतिहास का एक अंग्रेज प्रोफेसर था फेरेल ओटन, वह बहुत बदतमीज और बदमिजाज था जब–तब भारत विरोधी बकवास किया करता था। वह एक दिन कुछ छात्रों से उलझ गया तो लड़कों ने अच्छी तरह उसकी पिटाई कर दी, सुभाष के सामने ही सब कुछ हुआ। सुभाष ने लड़कों का साथ दिया। बस, फिर क्या था – बड़ा हंगामा हुआ और उन्हें कॉलेज से निकाल दिया गया। जांच कमेटी की रिपोर्ट से पहले ही कार्यवाही कर दी गई। कोलकाता का सियासी माहौल गरमा गया। कई गिरफ्तारियाँ हुई, कुछ और छात्र भी कॉलेज से निकाले गए और सुभाष को वापस कटक भेज दिया गया।

पहले तो सुभाष इस घटना से थोड़े विचलित हुए किंतु काफी चिन्तन–मनन के बाद मन शांत हो गया। इसका उल्लेख करते हुए उन्होंने लिखा है–

'मेरे प्रिंसिपल ने मुझे कॉलेज से निकालकर, अनजाने में ही सही, मेरे साथ बहुत भलाई की थी। सन् 1916 में घटी इस घटना ने मेरे अंदर अजीब सा उत्साह और आत्मविश्वास भर दिया था। मैंने पहली बार अपने बलबूते पर एक कदम उठाया था और नेतृत्व की दिशा में यह मेरा पहला कदम था। इसका लाभ मुझे आगे मिलने वाला था। मैंने थोपे गए इस अवकाश के समय का कटक में समाज–सेवा और आत्मिक शिक्षा प्राप्त करने में उपयोग किया।'

उधर सुभाष के पिता और भाइयों के प्रयास से निष्कासन का आदेश वापस ले लिया गया और सन् 1917 में सुभाष ने कोलकाता के स्काटिश चर्च कॉलेज में प्रवेश पा लिया। उनका एक अमूल्य वर्ष बेकार चला गया था। इस बार वे गंभीरता के साथ पढ़ाई में जुट गए। कठिन परिश्रम और मनोयोग की बदौलत सन् 1919 में उन्होंने दर्शनशास्त्र में प्रथम श्रेणी में स्नातक (ऑनर्स) की उपाधि ले ली।

आईसीएस में चयन एवं त्यागपत्र

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस सेना में भर्ती होना चाहते थे किंतु आंखें खराब होने के कारण सेना में भर्ती न हो सके तो टेरीटोरियल आर्मी में भर्ती हो गए। पिता की इच्छा थी कि सुभाष आईसीएस बने इसलिए न चाहते हुए भी सुभाष आईसीएस की परीक्षा देने 15 सितंबर, 1919 को इंग्लैण्ड गए और वहां मात्र 9 माह में तैयारी करके 1920 में वरीयता सूची में चौथा स्थान प्राप्त कर आईसीएस की परीक्षा उत्तीर्ण की। इससे उनके घरवालों को तो प्रसन्नता हुई लेकिन उनके मन में अन्तर्द्वन्द्व मचा हुआ था। वे विदेशी सरकार की नौकरी नहीं करना चाहते थे। इस विषय में उन्होंने अपने बड़े भाई शरतचन्द्र से पत्र–व्यवहार किया और अपने मन के भाव व्यक्त करते हुए आईसीएस की नौकरी से त्यागपत्र देने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने कहा कि उनके मन–मस्तिष्क पर स्वामी विवेकानन्द और महर्षि अरविन्द घोष के आदर्शों ने कब्जा कर रखा है। वे अंग्रेजों की गुलामी नहीं कर सकते। इस संबंध में उन्होंने देशबंधु चितरंजन दास से भी पत्र व्यवहार किया और अपने मन का अन्तर्द्वन्द्व व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा कि वे आईसीएस से त्यागपत्र देकर भारत में तीन क्षेत्रों अध्यापन, पत्रकारिता और समाजसेवा में से किसी एक क्षेत्र में काम करना चाहते हैं। देशबंधु ने सुभाष के विचारों का समर्थन करते हुए अपने पत्र में लिखा था कि भारत में उत्साही, कर्मठ और युवा समर्पित कार्यकर्ताओं का अभाव है। जब सुभाष भारत लौटेंगे तो उनके पास काम की कोई कमी नहीं होगी। इससे सुभाष को निर्णय लेने में आसानी हुई और आईसीएस की आनन्दलोक की नौकरी से त्याग पत्र देकर जुलाई, 1921 में मनौविज्ञान एवं नैतिक विज्ञान में ट्राईपास (ऑनर्स) की डिग्री के साथ स्वदेश वापस लौट आए।

स्वतंत्रता आंदोलन में प्रवेश

इंग्लैण्ड से वापस आकर सबसे पहले सुभाष 20 जुलाई, 1921 को गांधी जी से मिले और उनसे स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अंग्रेजों के विरूद्ध किए जाने वाले आंदोलन और उनकी योजना के बारे में जानना चाहा। सुभाष ने लिखा है कि वे उनकी योजना से प्रभावित नहीं हुए। उसके बाद सुभाष देशबंधु चितरंजन दास से मिले और उनसे मुलाकात करके उन्हें लगा कि उन्हें अपना गुरू मिल गया है। उन्होंने तत्काल देशबंधु के साथ मिलकर काम करने का निश्चय कर लिया।

उस समय गांधी जी अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग आंदोलन चला रहे थे और बंगाल में उसका नेतृत्व देशबंधु कर रहे थे। सुभाष भी इस आंदोलन में जुड़ गए। गांधी जी द्वारा 05 फरवरी, 1922 को चौरी चौरा घटना के बाद आंदोलन वापस ले लिया। देशबंधु इससे सहमत नहीं थे और उन्होंने स्वराज पार्टी बनाकर कोलकाता महापालिका का चुनाव लड़ा और जीतकर कोलकाता के महापौर बन गए। उन्होंने सुभाष को कोलकाता महापालिका का मुख्य कार्यकारी अधिकारी बनाया। सुभाष ने अपने कार्यकाल में कोलकाता का पूरा ढ़ांचा बदल दिया। सभी रास्तों के अंग्रेजी नाम बदलकर भारतीय नाम दिए। बहुत जल्द ही सुभाष देश के एक बहुत ही लोकप्रिय युवा नेता बन गए। राष्ट्रीय स्तर पर भारत का संविधान बनाने के लिए कांग्रेस द्वारा मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में गठित आठ सदस्यीय आयोग में सुभाष भी एक सदस्य के रूप में नामित किए गए। 1928 में कांग्रेस अधिवेशन में सुभाष ने पूर्ण स्वराज की मांग रखी लेकिन गांधी जी ने 'डोमिनियन स्टेटस' का प्रस्ताव मनवा लिया। लेकिन एक वर्ष तक भी जब अंग्रेजी सरकार ने गांधी जी के 'डोमिनियन स्टेटस' पर कोई कार्रवाई नहीं की तो उन्होंने वर्ष 1930 के अधिवेशन में पूर्ण स्वराज की पुनः मांग रखीं और तय किया गया कि 26 जनवरी का दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

उससे अगले वर्ष 26 जनवरी, 1931 को कोलकाता में सुभाष राष्ट्रध्वज फहराकर एक विशाल मोर्चे का नेतृत्व कर रहे थे तभी पुलिस ने उनके ऊपर लाठियां बरसाई और उन्हें घायल करके जेल भेज दिया। जब नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जेल में थे तो गांधी जी ने समझौता कर लिया और अंग्रेज सरकार ने सभी कैदियों को रिहा कर दिया।

सबसे पहले नेताजी 16 जुलाई, 1921 को छह माह के लिए जेल गए। उसके बाद जेल जाने का निरन्तर क्रम चलता रहा। इस प्रकार नेताजी सुभाष चन्द्र आजादी के आंदोलन के दौरान कुल 11 बार जेल गए।

1930 में सुभाष कारावास में ही थे कि उन्हें चुनाव में कोलकाता का महापौर चुना गया। इससे मजबूरी में अंग्रेज सरकार को उन्हें रिहा करना पड़ा। किन्तु 1932 में उन्हें फिर से जेल में डाल दिया गया जहां उनकी तबीयत काफी खराब हो गई। चिकित्सकों ने उन्हें यूरोप जाकर इलाज कराने की सलाह दी। इस प्रकार सुभाष 1933 से 1936 तक यूरोप में रहे और यहां वे इटली के नेता मुसोलिनी से मिले और उन्हें भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सहायता के लिए तैयार किया। इसी प्रवास के दौरान वे विठ्ठलभाई पटेल में भी मिले और आजादी के लिए रणनीति तैयार की। विठ्ठलभाई पटेल ने अपनी सारी सम्पति नेताजी के नाम कर दी ताकि वो स्वतंत्रता आंदोलन में काम आ सके किंतु कुछ नेताओं ने उनकी सम्पति सुभाष को नहीं मिलने दी।

नेताजी ने इसी प्रवास के दौरान अपनी पुस्तक लिखनी शुरू की और उसके लिए एक अंग्रेजी टाइपिस्ट की जरूरत पड़ी। उनके एक मित्र ने एमिली शेंकल नाम की जर्मन महिला से मुलाकात कराई जिनसे वे काफी प्रभावित हुए तथा कुछ वर्ष बाद 1942 में सुभाष चन्द्र बोस ने एमिली से विवाह कर लिया जिनसे उन्हें एक पुत्री अनिता का जन्म हुआ।

हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष पद पर आसीन

वर्ष 1938 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हरिपुरा में होना तय हुआ। इस अधिवेशन से पहले गांधी जी ने कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए सुभाष का नाम प्रस्तावित किया। यह कांग्रेस का 51वाँ अधिवेशन था। इसलिए कांग्रेस अध्यक्ष सुभाष चन्द्र बोस का स्वागत 51 बैलों द्वारा खींचे हुए रथ से किया गया।

इस अधिवेशन में सुभाष का अध्यक्षीय भाषण बहुत ही प्रभावी हुआ। उन्होंने बढ़ती जनसंख्या, गरीबी, अशिक्षा, भाषा, राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीय योजना–हर विषय पर बहुत ही बेबाकी से अपनी बात कही। किसी भी भारतीय राजनीतिक व्यक्ति ने शायद ही इतना प्रभावी भाषण कभी दिया हो। अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में सुभाष ने योजना आयोग की स्थापना की। जवाहरलाल नेहरू इसके पहले अध्यक्ष बनाए गए। सुभाष ने बंगलौर में मशहूर वैज्ञानिक सर विश्वेश्वरय्या की अध्यक्षता में एक विज्ञान परिषद की स्थापना भी की।

कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा

गांधी जी ने 1938 में कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए सुभाष को चुना तो था मगर उन्हें सुभाष की कार्यपद्धति पसंद नहीं आई। इसी दौरान यूरोप में द्वितीय विश्वयुद्ध के बादल छा गए थे। सुभाष चाहते थे कि इंग्लैंड की इस कठिनाई का लाभ उठाकर भारत का स्वतंत्रता संग्राम अधिक तीव्र किया जाए। उन्होंने अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में इस ओर कदम उठाना भी शुरू कर दिया था परन्तु गांधी जी इससे सहमत नहीं थे।

जब 1939 में नया कांग्रेस अध्यक्ष चुनने का समय आया तब सुभाष चाहते थे कि कोई ऐसा व्यक्ति अध्यक्ष बनाया जाए जो इस मामले में किसी दबाव के आगे बिल्कुल न झुके। ऐसा कोई दूसरा व्यक्ति सामने न आने पर सुभाष ने स्वयं कांग्रेस अध्यक्ष बने रहना चाहा। लेकिन गांधी जी उन्हें अध्यक्ष पद से हटाना चाहते थे। गांधी जी ने अध्यक्ष पद के लिए पट्टाभि सीतारमैया को चुना। कविवर रविन्द्रनाथ ठाकुर ने गांधी को पत्र लिखकर सुभाष को ही अध्यक्ष बनाने का निवेदन किया। प्रफुल्लचन्द्र राय और मेघनाद साहा जैसे वैज्ञानिक भी सुभाष को ही फिर से अध्यक्ष के रूप में देखना चाहते थे। लेकिन गांधीजी ने इस मामले में किसी की बात नहीं मानी। कोई समझौता न हो पाने पर बहुत बरसों बाद कांग्रेस पार्टी में अध्यक्ष पद के लिए चुनाव हुआ।

सब समझते थे कि जब महात्मा गांधी ने पट्टाभि सीतारमैय्या का साथ दिया है तब वे चुनाव आसानी से जीत जाएंगे। लेकिन वास्तव में सुभाष को चुनाव में 1580 मत और सीतारमैय्या को 1377 मत मिले। गांधी जी के विरोध के बावजूद नेताजी सुभाष चन्द्र बोस 203 मतों से चुनाव जीत गए। मगर चुनाव के नतीजे के साथ बात खत्म नहीं हुई। गांधी जी ने पट्टाभि सीतारमैय्या की हार को अपनी हार बताकर अपने साथियों से कह दिया कि अगर वे सुभाष के तरीकों से सहमत नहीं हैं तो वे कार्यकारिणी से हट सकते हैं। इसके बाद कांग्रेस कार्यकारिणी के 14 में से 12 सदस्यों ने इस्तीफा दे दिया।

1939 का वार्षिक कांग्रेस अधिवेशन त्रिपूरी में हुआ। इस अधिवेशन के समय सुभाष तेज बुखार से इतने बीमार हो गए थे कि उन्हें स्ट्रेचर पर लिटाकर अधिवेशन में लाना पड़ा। गांधीजी स्वयं भी इस अधिवेशन में उपस्थित नहीं रहे और उनके साथियों ने भी सुभाष को कोई सहयोग नहीं दिया। अधिवेशन के बाद सुभाष ने समझौते के लिए बहुत कोशिश की लेकिन गांधी जी और उनके साथियों ने उनकी एक न मानी। परिस्थिति ऐसी बन गई कि सुभाष कुछ काम ही न कर पाए। आखिर में तंग आकर 29 अप्रैल 1939 को सुभाष ने कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया।

फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना और स्वतंत्रता अभियान

सुभाष चन्द्र बोस ने 3 मई, 1939 को कांग्रेस के अन्दर ही फॉरवर्ड ब्लॉक के नाम से अपनी पार्टी की स्थापना

की। कुछ दिन बाद उन्हें कांग्रेस से ही निकाल दिया गया। बाद में फॉरवर्ड ब्लॉक अपने आप एक स्वतंत्र पार्टी बन गई। द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू होने से पहले से ही फॉरवर्ड ब्लॉक ने स्वतंत्रता संग्राम को और अधिक तीव्र करने के लिए जन जागृति शुरू की।

सुभाष को ब्रिटेन और जर्मनी में युद्ध छिड़ने की सूचना 3 सितम्बर 1939 को मद्रास में मिली। उन्होंने घोषणा की कि अब भारत के पास सुनहरा मौका है उसे अपनी मुक्ति के लिए अभियान तेज कर देना चहिए। 8 सितम्बर 1939 को युद्ध के प्रति पार्टी का रुख तय करने के लिए सुभाष को विशेष आमन्त्रित के रूप में कांग्रेस कार्य समिति में बुलाया गया। उन्होंने अपनी राय के साथ यह संकल्प भी दोहराया कि अगर कांग्रेस यह काम नहीं कर सकती है तो फॉरवर्ड ब्लॉक अपने दम पर ब्रिटिश राज के खिलाफ युद्ध शुरू कर देगा।

अगले ही वर्ष जुलाई में कोलकाता स्थित हालवेट स्तम्भ को, जो भारत की गुलामी का प्रतीक था, सुभाष चन्द्र बोस की यूथ ब्रिगेड ने रातों–रात उसे मिट्टी में मिला दिया। सुभाष के स्वयं सेवक उसकी नींव की एक–एक ईंट उखाड़ ले गए। यह एक प्रतीकात्मक शुरुआत थी। इसके माध्यम से सुभाष ने यह संदेश दिया था कि जैसे उन्होंने यह स्तम्भ धूल में मिला दिया है उसी तरह वे ब्रिटिश साम्राज्य की भी ईंट से ईंट बजा देंगे।

इसके परिणामस्वरूप अंग्रेज सरकार ने सुभाष सहित फॉरवर्ड ब्लॉक के सभी मुख्य नेताओं को कैद कर लिया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान सुभाष जेल में निष्क्रिय रहना नहीं चाहते थे। सरकार को उन्हें रिहा करने पर मजबूर करने के लिए सुभाष ने जेल में आमरण अनशन शुरू कर दिया। हालत खराब होते ही सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया। मगर अंग्रेज सरकार यह भी नहीं चाहती थी कि सुभाष युद्ध के दौरान मुक्त रहें। इसलिए सरकार ने उन्हें उनके ही घर पर नजरबन्द करके बाहर पुलिस का कड़ा पहरा बिठा दिया।

नजरबन्दी से भेष बदलकर विदेश प्रस्थान

नजरबन्दी से निकलने के लिए सुभाष ने एक योजना बनाई। 17 जनवरी 1941 की रात के एक बजे वे पुलिस को चकमा देते हुए एक पठान मोहम्मद जियाउद्दीन के वेश में अपने घर से निकले। शरदबाबू के बड़े बेटे शिशिर ने उन्हें अपनी गाड़ी में कोलकाता से दूर गोमोह तक पहुंचाया। गोमोह रेलवे स्टेशन से फ्रण्टियर मेल पकड़कर वे पेशावर पहुंचे। पेशावर में उन्हें फॉरवर्ड ब्लॉक के एक साथी, मियाँ अकबर शाह मिले। मियाँ अकबर शाह ने उनकी मुलाकात, किर्ती किसान पार्टी के भगतराम तलवार से करा दी। भगतराम तलवार के साथ सुभाष पेशावर से अफगानिस्तान की राजधानी काबुल की ओर निकल पड़े। इस सफर में भगतराम तलवार रहमत खॉ नाम के पठान और सुभाष उनके गूँगे–बहरे चाचा बने थे। पहाड़ियों में पैदल चलते हुए उन्होंने यह सफर पूरा किया।

काबुल में सुभाष दो महीनों तक उत्तमचन्द मल्होत्रा नामक एक भारतीय व्यापारी के घर में रहे। वहां उन्होंने पहले रूसी दूतावास में प्रवेश पाना चाहा। इसमें असफल रहने पर उन्होंने जर्मन और इटालियन दूतावासों में प्रवेश पाने की कोशिश की। इटालियन दूतावास में उनकी कोशिश सफल रही। जर्मन और इटालियन दूतावासों ने उनकी सहायता की। आखिर में आर्लेडो मजोटा नामक इटालियन व्यक्ति बनकर सुभाष काबुल से निकलकर रूस की राजधानी मास्को होते हुए जर्मनी की राजधानी बर्लिन पहुंचे।

बर्लिन में सुभाष जर्मनी के कई प्रमुख नेताओं से मिले। उन्होंने जर्मनी में भारतीय स्वतंत्रता संगठन और आजाद हिन्द रेडियो की स्थापना की। इसी दौरान वे नेताजी के नाम से जाने जाने लगे। यहीं सुभाष 29 मई, 1942 को जर्मनी के सर्वोच्च नेता एडॉल्फ हिटलर से मिले। लेकिन हिटलर से मिलने के बाद उनको लगा कि जर्मनी से उन्हें भारत की आजादी के लिए विशेष सहायता नहीं मिलेगी। इसलिए 08 मार्च, 1943 को जर्मनी के कील बदरगाह से अपने एक साथी के साथ जर्मनी पनडुब्बी में बैठकर पूर्वी एशिया की ओर चल

दिए। इस पनडुब्बी से वे हिंद महासागर में मैडागास्कर के किनारे तक गए और वहां से समुद्र में तैरकर जापानी पनडुब्बी तक पहुंचे। दूसरे विश्वयुद्ध के मध्य दो देशों की नौसेनाओं की पनडुब्बी के द्वारा नागरिकों की यह एकमात्र अदला–बदली थी। इस पनडुब्बी से वे इंडोनेशिया पहुंचे।

पूर्वी एशिया पहुंचकर सुभाष ने सर्वप्रथम वयोवृद्ध क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस से भारतीय स्वतंत्रता परिषद का नेतृत्व सँभाला। सिंगापुर के एडवर्ड पार्क में रासबिहारी ने स्वेच्छा से स्वतंत्रता परिषद का नेतृत्व सुभाष को सौंपा था। जापान के प्रधानमंत्री ने नेताजी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उन्हें सहयोग करने का आश्वासन दिया। कई दिन पश्चात् नेताजी ने जापान की संसद (डायट) के सामने भाषण दिया।

आजाद हिंद फौज और स्वाधीन भारत की प्रथम सरकार का गठन

21 अक्टूबर, 1943 के दिन नेताजी ने सिंगापुर में स्वाधीन भारत की अन्तरिम सरकार की स्थापना की। वे खुद इस सरकार के राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री और युद्ध मन्त्री बने। इस सरकार को कुल नौ देशों ने मान्यता दी। नेताजी आजाद हिंदू फौज के प्रधान सेनापति भी बन गए।

आजाद हिंद फौज में जापानी सेना ने अंग्रेजों की फौज से पकड़े हुए भारतीय युद्धबन्दियों को भर्ती किया था। आजाद हिंद फौज में महिलाओं के लिए झाँसी की रानी रेजिमेंट भी बनाई गई।

पूर्वी एशिया में नेताजी ने अनेक भाषण देकर वहां के स्थायी भारतीय लोगों से आजाद हिंद फौज में भर्ती होने और उसे आर्थिक मदद देने का आह्वान किया। उन्होंने अपने आह्वान में यह संदेश भी दिया – 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।'

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान आजाद हिंद फौज ने जापानी सेना के सहयोग से भारत पर अंग्रेजी सरकार के खिलाफ आक्रमण किया। अपनी फौज को प्रेरित करने के लिए नेताजी ने 'दिल्ली चलो' का नारा दिया। दोनों फौजों ने अंग्रेजों से अंडमान और निकोबार द्वीप जीत लिए। यह द्वीप स्वाधीन भारत की अन्तरिम सरकार के अधीन रहे। नेताजी ने इन द्वीपों को 'शहीद द्वीप' और 'स्वराज द्वीप' का नया नाम दिया। दोनों फौजों ने मिलकर इंफाल और कोहिमा पर आक्रमण किया। लेकिन बाद में अंग्रेजों का पलड़ा भारी पड़ा और दोनों फौजों को पीछे हटना पड़ा।

जब आजाद हिंद फौज पीछे हट रही थी तब जापानी सेना ने नेताजी के भाग जाने की व्यवस्था की। परन्तु नेताजी ने झाँसी की रानी रेजिमेंट की लड़कियों के साथ सैकड़ों मील चलते रहना पसन्द किया। इस प्रकार नेताजी ने सच्चे नेतृत्व का एक आदर्श प्रस्तुत किया।

आजाद हिंद रेडियो पर 6 जुलाई 1944 को अपने भाषण के माध्यम से गांधी जी को सम्बोधित करते हुए नेताजी ने जापान से सहायता लेने का अपना कारण और स्वाधीन भारत की अन्तरिम सरकार तथा आजाद हिंद फौज की स्थापना के उद्देश्य के बारे में बताया। इस भाषण के दौरान नेताजी ने गांधीजी को राष्ट्रपिता कहा तभी गांधीजी ने भी उन्हें नेताजी कहा।

विमान दुर्घटना में मृत्यु-हकीकत या पहेली

द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान की हार के बाद, नेताजी को नया रास्ता ढूंढना जरूरी था। उन्होंने रूस से सहायता मांगने का निश्चय किया था। 18 अगस्त, 1945 को नेताजी हवाई जहाज से मंचूरिया की तरफ जा रहे थे। इस सफर के दौरान वे लापता हो गए। इस दिन के बाद वे कभी किसी को दिखाई नहीं दिए।

टोकियो रेडियो ने 23 अगस्त, 1945 को बताया कि नेताजी एक विमान से आ रहे थे कि 18 अगस्त को ताइहोकू हवाई अड्डे के पास उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में उनके साथ सवार जापानी जनरल शोदेई, पाइलेट तथा कुछ अन्य लोग मारे गए। नेताजी गम्भीर रूप से जल गए थे। उनको ताइहोकू सैनिक अस्पताल ले जाया गया जहां उन्होंने दम तोड़ दिया। कर्नल हबीबुर्रहमान के अनुसार उनका अन्तिम संस्कार ताइहोकू में ही कर दिया गया। सितम्बर के मध्य में उनकी अस्थियां संचित करके जापान की राजधानी टोकियो के रैंकोजी मन्दिर में रख दी गई। भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार से प्राप्त दस्तावेज के अनुसार नेताजी की मृत्यु 18 अगस्त, 1945 को ताइहोकू के सैनिक अस्पताल में रात्रि 21:00 बजे हुई थी।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार ने इस घटना की जाँच करने के लिए 1956 और 1977 में दो बार आयोग नियुक्त किया। दोनों बार यह नतीजा निकला कि नेताजी उस विमान दुर्घटना में ही शहीद हो गए।

1999 में तीसरा आयोग–मुखर्जी आयोग बनाया गया। 2005 में ताइवान सरकार ने मुखर्जी आयोग को बताया कि 1945 में ताइवान की भूमि पर कोई हवाई जहाज दुर्घटनाग्रस्त हुआ ही नहीं था। 2005 में मुखर्जी आयोग ने भारत सरकार को अपनी रिपोर्ट पेश की जिसमें उन्होंने कहा कि नेताजी की मृत्यु उस विमान दुर्घटना में होने का कोई सबूत नहीं है लेकिन भारत सरकार ने मुखर्जी आयोग की रिपोर्ट को अस्वीकार कर दिया।

नेताजी 18 अगस्त, 1945 के दिन कहां लापता हो गए और उनका आगे क्या हुआ यह भारतीय इतिहास का सबसे बड़ा अनुत्तरित रहस्य आज तक बना हुआ है।

महान राष्ट्रनायक को हमारा शत् शत् नमन।

नेताजी और हिंदी

नेताजी सुभाषचंद्र बोस बर्मा में अंग्रेजों के विरुद्ध आजाद हिंद फौज के सिपाहियों को युद्ध के लिए तत्पर करने के काम में जुटे थे। बर्मा में व्यवसाय करने वाले भारतीयों ने उनके चरणों में धन का अंबार लगा दिया, जिससे उनके राष्ट्रीय कार्य में बाधा न पड़ने पाए।

नेताजी प्रतिदिन रात के समय एक हिंदीभाषी व्यवसायी के पास बैठकर हिंदी सीखते थे। वह कहते थे, 'मैं बाँग्ला तथा अंग्रेजी तो जानता हूँ, लेकिन हिंदी ठीक प्रकार से नहीं जानता। उसे सीखना बहुत जरूरी है।'

हिंदी भाषी शिक्षक ने पूछा, 'आप दिन भर सैनिकों से युद्ध के विषय में बातचीत करते हैं। ऐसी स्थिति में हिंदी सीखना क्यों जरूरी समझते हैं?'

नेताजी ने उत्तर दिया, 'हम देश को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद कराने के बाद उनकी भाषा अंग्रेजी से भारतीय जनता को मुक्त कराएँगे। हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है, जिसे अधिकांश भारतीय समझते हैं। अतः हिंदी को स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा बनाया जाएगा। इसलिए मैं अपने देश की राष्ट्रभाषा का ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ।

स्वामी विवेकानन्द : राष्ट्रभक्त समाजसेवी

डॉ. राजबीर सिंह, समूह महाप्रबंधक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय

पृष्ठभूमि

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी, 1863 को कोलकाता में एक संभ्रात और सुशिक्षित परिवार में हुआ था। इनकी माता ने इनका नाम वीरेश्वर रखा था। क्योंकि उन्हें विश्वास था कि उन्हें दो पुत्रियों के बाद पुत्र की प्राप्ति शिव की कृपा से हुई है। किंतु प्यार से इन्हें सब प्रियजन 'बिले' कहकर पुकारते थे। जब उनकी शिक्षा प्रारम्भ हुई तो इनका नाम नरेन्द्रनाथ रखा गया। नरेन्द्र बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थे। इनके पिता विश्वनाथ दत्त कोलकाता के नामी वकील थे। दादा युवावस्था में ही संन्यासी हो गए थे तथा परदादा भी कोलकाता सुप्रीम कोर्ट के प्रसिद्ध वकील थे।

विवेकानन्द की आयु जब 21 वर्ष थी तभी इनके पिताजी का असामयिक निधन हो गया। उनकी मृत्यु के बाद

इन्हें पता चला कि पिताजी अपनी आमदनी से ज्यादा खर्च करते थे। घर का गुजर–बसर करने के लिए नरेन्द्र को नौकरी करनी होगी। उन्होंने नौकरी की तलाश में बहुत मेहनत की। पिताजी के निधन के बाद नरेन्द्र के घर की आर्थिक हालत बहुत खराब थी। उन दिनों की स्थिति का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है कि–

'कभी–कभी जब मैं पाता कि घर में खाने को कुछ नहीं है और मेरी जेब खाली है तो मैं अपनी मां से झूठ–मूठ कह देता कि मुझे किसी के यहां खाने का न्यौता मिला है जबकि असल में मैं भूखा रह जाता। मेरे अमीर दोस्त कभी–कभी खाने–पीने और गीत–संगीत के लिए अपने घर या उद्यान में बुलाते तो मुझे जाना पड़ता। मैं अपना दुखड़ा उनके सामने नहीं रखना चाहता था और न ही मेरे मित्रों ने इस बारे में मुझसे कभी बात की। लेकिन इस सबके बावजूद ईश्वर के अस्तित्व और उसकी दैवी करुणा में मेरा विश्वास कभी नहीं टूटा। हर रोज़ सुबह मैं ईश्वर से प्रार्थना करके नौकरी ढूंढ़ने निकल पड़ता।'

इस प्रकार उनके घर की आर्थिक स्थिति बेहद खराब थी। तथापि उन्होंने अपना सर्वस्व राष्ट्रसेवा में लगा दिया। जिस आयु में युवक शादी करके अपनी गृहस्थी बसा लेते हैं नरेन्द्रनाथ उस आयु में राष्ट्र की सेवा का संकल्प लेकर भारत भ्रमण के लिए निकल पड़े थे।

जातिवाद और साम्प्रदायिकता के विरोधी

परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे लोकाचार के नियमों को नरेन्द्र बचपन से ही नहीं मानते थे। उनके पिता विश्वनाथ के पास विभिन्न जातियों और धर्मों को मानने वाले आते थे जिनके लिए उन्होंने अलग–अलग

हुक्के रखे हुए थे। एक दिन नरेन्द्र ने देखा कि जहां हुक्के रखे हुए थे वहां कोई नहीं था। उन्होंने बारी–बारी एक–एक हुक्के को गुड़गुड़ाया। उन्होंने कोई परिवर्तन महसूस नहीं किया। यह बात उन्होंने अपने पिताजी को बताई कि जब सब हुक्के एक जैसे हैं तो आपने अलग–अलग जाति के लोगों के लिए अलग–अलग हुक्के क्यों रखे हुए हैं। वास्तव में स्वामी विवेकानन्द अत्यन्त उदार और सभी जातियों के लोगों और सभी धर्मों के अनुयायियों के प्रति समभाव रखते थे। वे जितना सम्मान गीता, उपनिषद् और वेदों को देते थे उतना ही सम्मान बाइबिल और कुरान को देते थे।

दूसरे धर्मों के प्रति उनके मन में सम्मान का भाव था। इसे एक उदाहरण में देखिए। एक बार वे माउंट आबू गए हुए थे। उन्हीं दिनों वहां खेतड़ी के महाराजा अजित सिंह भी आए हुए थे। जब उन्हें पता चला कि कोई संन्यासी माउंट आबू आया हुआ है तो महाराजा को उनसे मिलने की इच्छा हुई। उन्होंने अपने दीवान को स्वामी जी को बुलाने भेजा। स्वामी जी उन दिनों एक मुसलमान के घर ठहरे हुए थे। दीवान साहब जब स्वामी जी से मिले तो उन्होंने महाराजा की इच्छा से अवगत कराया और साथ ही कहा कि स्वामी जी आप हिंदू संन्यासी होकर भी एक मुसलमान के घर ठहरे हुए हैं। आपके भोजन वगैरहा को ये लोग छूते होंगे। इस पर स्वामी जी ने बहुत ही गंभीरता से उत्तर दिया कि मैं एक संन्यासी हूं और सभी सामाजिक आचार–विचार से परे हूं। मैं एक मेहतर के साथ भी बैठकर भोजन कर सकता हूं। सभी लोग ईश्वर की संतान है।

उनका यह दृढ़ मत था कि सभी धर्मों के अनुयायियों को एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए। वे मानते थे कि जल्दी ही ऐसा समय आएगा जब सभी धर्मों की पताका पर यह लिखा होगा – 'सहायता करो – लड़ो मत। दूसरों के विचारों को ग्रहण करो न कि पर चिन्तन का विनाश। समन्वय और शांति हो न कि मतभेद और कलह।'

स्वामी जी जातिवाद के विरोधी थे। उन्होंने उन लोगों की सेवा पर विशेष ध्यान दिया, समाज अछूत मानकर जिनकी अपेक्षा करता है।

उनका मानना था कि एकनिष्ठता हमारी अवधारणा, हमारे ज्ञान और दृष्टि को सीमित बनाती है। जबकि मंजिल एक है। अनेक लोगों में आस्था होने पर भी अपने इष्ट के प्रति आस्था कम नहीं होती।

वे अपने विदेशी शिष्यों के साथ उनका राष्ट्रदिवस भी पूरे उत्साह से मनाते थे। वे युवकों को घर में बैठकर गीता पढ़ने की बजाय फुटबाल खेलने की सलाह देते थे। ऐसे विलक्षण थे स्वामी विवेकानन्द।

गुरु से भेंट

विवेकानन्द की बुद्धि बचपन से ही बड़ी तीव्र थी और भगवान को पाने की लालसा भी उनके मन में बहुत प्रबल थी। वे जब भी साधु–संन्यासियों से मिलते उनसे भगवान के बारे में बात करते। पहले वे ब्रह्म समाज में गए किन्तु उनके मन को संतोष नहीं मिला।

देवेन्द्रनाथ टेगोर से मिले तो उनसे भी पूछा कि क्या आपने भगवान को देखा है। जब वे रामकृष्ण परमहंस से मिले तो उनसे भी यही सवाल किया कि क्या आपने भगवान को देखा है? रामकृष्ण जी ने कहा हाँ, देखा है। ठीक उसी प्रकार जैसे आपको देख रहा हूं। अन्ततः रामकृष्ण परमहंस के सानिध्य में आकर उन्हें पूर्ण संतोष और तृप्ति मिली।

स्वामी विवेकानन्द का प्रारम्भ में मूर्तिपूजा या माँ काली में विश्वास नहीं था। उन्होंने कभी भी किसी बात को अन्ध विश्वास करते हुए स्वीकार नहीं किया। रामकृष्ण परमहंस को भी उन्होंने गुरु के रूप में पहली ही मुलाकात में स्वीकार नहीं किया था। बल्कि पहली एक दो मुलाकातों में तो उन्हें रामकृष्ण परमहंस पागल व्यक्ति जैसे लगे थे। किन्तु कई बार मिलने के बाद जब उन्हें विश्वास हो गया कि रामकृष्ण परमहंस एक

सच्चे मानवतावादी संत हैं तभी उन्होंने रामकृष्ण जी को अपना गुरु स्वीकार किया। रामकृष्ण जी माँ काली के भगत थे किन्तु विवेकानन्द जी की माँ काली में आस्था एकदम गुरु की बात मानकर नहीं हुई। वरन् जब उन्हें यह महसूस हुआ कि माँ काली में सचमुच अद्भुत शक्ति है तभी उनमें आस्था बनी। इसका उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा है–

'गुरु ने माँ काली के दर्शन के लिए कहा कि आज मंगलवार है। आज रात को काली मंदिर जाओ और माँ को साष्टांग प्रणाम करके उनसे अपने कष्ट दूर करने की गुहार लगाओ। वे तुम्हारी कामना अवश्य पूरी करेंगी। वे कुछ भी कर सकती हैं।' अपनी विपन्नता और गुरु की निश्चयात्मकता ने मूर्ति पूजा में उनके जीवन भर के अविश्वास को हिला दिया और वे माँ काली की शरण में जाने को तैयार हो गए। उन्होंने इस संबंध में अपने अनुभव को व्यक्त करते हुए आगे कहा है कि–

'लगभग नौ बजे गुरु जी ने मुझे मंदिर जाने का आदेश दिया। जब मैं वहां पहुंचा तो मुझ पर दैवी नशा छाया हुआ था। मेरे पांव स्थिर नहीं थे। मेरा मन देवी दर्शन से प्राप्त होने वाले आनंद की आशा में उछल रहा था। मंदिर में जाकर जैसे ही मैंने अपनी दृष्टि प्रतिमा पर डाली मुझे ऐसा लगा जैसे वह सप्राण और सचेत है और उनसे दिव्य सौंदर्य और प्रेम फूट रहा है। मैं आस्था और प्रेम की विचित्र धारा में बहने लगा।'

रामकृष्ण परमहंस द्वारा परम्परागत रीति या मान्यताओं का अन्धा अनुसरण नहीं करने के लिए अक्सर सुनाई जाने वाली कथा का स्वामी विवेकानन्द पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा था। अक्सर रामकृष्ण परमहंस कथा सुनाते थे कि एक गृहस्थ अपने घर में जब पूजा–पाठ करता है तो उसकी पालतू बिल्ली उसमें बाधा पहुंचाती। उसने पूजा करते समय उस बिल्ली को बांधना शुरू कर दिया था। समय बीतने पर गृहस्थ की मृत्यु हो गई और बिल्ली भी चल बसी। उसके बेटे ने पूजा–पाठ शुरू किया। उसने सोचा पिताजी पूजा करते थे तो बिल्ली बांधते थे। वे भी एक बिल्ली पकड़ लाए और पूजा करते समय बिल्ली बांधने लगे। स्वामी समझाते थे कि सभी कार्यों को विवेक से करना चाहिए। परम्परागत रीति–रिवाज़ों का पालन करते समय परिस्थितियों के अनुसार उनके औचित्य को परखना चाहिए।

एक बार की घटना है स्वामी विवेकानन्द काशी गए हुए थे। वे जब दुर्गा मंदिर से अपने ठिकाने पर लौट रहे थे तो बंदरों का एक झुंड उनके पीछे पड़ गया। इतने बंदरों को अपने पीछे आते देख वे घबरा गए और भागने लगे। तभी एक वृद्ध साधु ने उन्हें आवाज़ दी – रुक जाओ। दुष्टों का सामना करो। भागते हुए स्वामी विवेकानन्द के कदम एकाएक रुक गए और उन्होंने सोचा बात तो ठीक है। वे साहस के साथ बंदरों के सामने खड़े हो गए। उनकी निर्भिकता और दृढ़ता को देखकर बंदर पीछे हट गए। स्वामी विवेकानन्द जी ने इस घटना से सीखा कि दृढ़ता और निडरता से विपरीत स्थिति का सामना किया जा सकता है।

रामकृष्ण मिशन की स्थापना

रामकृष्ण परमहंस 16 अगस्त,1886 को इस संसार से चले गए। उनकी मृत्यु के बाद विवेकानन्द ने रामकृष्ण परमहंस के विचारों के प्रचार–प्रसार के लिए सम्पूर्ण देश का भ्रमण किया और अपने गुरु भाइयों के साथ मिलकर 01 मई,1897 को रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। रामकृष्ण मिशन की स्थापना का उद्देश्य साधुओं और संन्यासियों को संगठित करना था, जो रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाओं और विचारों में गहरी आस्था रखते थे और जो उनके उपदेशों को जनसाधारण तक पहुंचा सकें और गरीब, उपेक्षित, दुखी जनता की निस्वार्थ सेवा कर सकें। रामकृष्ण मिशन के माध्यम से इन्होंने वेदांत, अध्यात्म के साथ–साथ समाज सेवा का अनुकरणीय कार्य किया।

वास्तव में, उन्होंने सभी धर्मों में प्रति सद्भाव की भावना का प्रसार करने, सहिष्णुता की विचारधारा का पोषण

करने, उपेक्षित, गरीब और दलितों का उत्थान करने, समाज में सेवा की भावना पैदा करने, मानव जाति के समग्र कल्याण के लिए कार्य करने जैसे महान उद्देश्यों के साथ रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी, जिसकी आज देश–विदेश में 176 से अधिक शाखाएं हैं। समाज सेवा की अपनी भावना को व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा था – ''प्रशंसा हो या न हो, मेरा जन्म इन तरूणों को संगठित करने के लिए ही हुआ है। हर नगर में हजारों–हजार शिष्य और युवक मेरे साथ चलने को तत्पर हैं। मैं इन्हें तीव्र उद्यम तरंगों की तरह समूचे भारत में फैला देना चाहता हूँ जिससे वे देश के सबसे निम्न तथा उपेक्षित लोगों के द्वार तक सुख, नैतिकता और धार्मिक शिक्षा का संचार कर सकें और मैं यह काम करके रहूंगा या फिर प्राण दे दूंगा।''

देश की आम जनता का हाल जानने के लिए ही उन्होंने पूरे भारत का भ्रमण किया था। अधिकांश यात्रा पैदल और अकेले की जिससे वे जनता के दुख–दर्द को जान सके।

पगड़ी और विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द के जीवन में खेतड़ी (राजस्थान) का अहम स्थान रहा है। एक बार स्वामी जी खेतड़ी में थे। उन दिनों खूब गर्मी पड़ रही थी। अत्यधिक गर्मी होने के कारण स्वामी जी बीमार पड़ गए। खेतड़ी के महाराजा अजित सिंह ने स्वामी जी को गर्मी से बचने के लिए पगड़ी बांधने की सलाह दी। स्वामी जी ने महाराजा की बात मान ली। महाराजा ने स्वामी जी को स्वयं पगड़ी बांधना सिखाया। इसके बाद स्वामी जी जीवन पर्यन्त पगड़ी बांधते रहे।

स्वामी विवेकानन्द का नाम भी खेतड़ी की ही देन है। शिकागो विश्व धर्म महासभा में भाग लेने जाने से कुछ समय पहले खेतड़ी में नरेन्द्रनाथ को स्वामी विवेकानन्द नाम दिया गया। इससे पहले इन्हें स्वामी जी या इसी तरह के कई नामों से जाना जाता था। इसके बाद से नरेन्द्रनाथ पूरे विश्व में स्वामी विवेकानन्द के नाम से मशहूर हुए।

स्वामी विवेकानन्द केवल धर्म और अध्यात्म की ही बातें नहीं करते थे वरन् शिक्षा, विज्ञान, कृषि आदि के उत्थान की भी बात करते थे। एक बार स्वामी जी मदुरै में थे। वहां वे रामनद के राजा भास्कर सेतुपति से मिले। विभिन्न विषयों पर चर्चा के दौरान स्वामी जी ने जब शिक्षा, कृषि आदि पर अपने विचार रखे तो राजा भास्कर चकित रह गए। उन्हें एक संन्यासी से इन विषयों पर चर्चा सुनकर आश्चर्य हुआ। स्वामी जी ने उनके आश्चर्य का निवारण करते हुए कहा कि संन्यासी का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना अवश्य है पर मुझे मेरे गुरुदेव से यही आदर्श प्राप्त हुआ है कि भारत की जनता की उन्नति की चेष्टा करना भी मोक्ष प्राप्ति का साधन है।

ज्ञान की प्राप्ति

स्वामी जी घुमते हुए भारत के अन्तिम छोर दक्षिण में कन्याकुमारी पहुंचे। समुद्र में तैर कर वे एक चट्टान पर पहुंचे जो मुख्य भूमि से कटी हुई थी। उस शिला पर पहुंचकर स्वामी जी के मन में विचित्र प्रकार की ऊर्जा और उत्साह का संचार हुआ। उस शिलाखण्ड पर गीले वस्त्रों में समाधि पर बैठ गए और बाहर की दुनिया से पूरी तरह असंयुक्त होकर गहरे अन्तस् में उतर गए। उनके मनस पटल पर भारत माता का चित्र अंकित हो गया। एक ओर धर्म और अध्यात्म की विपुल सम्पदा तथा दूसरी ओर अशिक्षा, गरीबी, भूख से तड़पती आम जनता। गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी भारत माता बेबस, लाचार और दीनहीन दृष्टि गोचर हुई। कोटि–कोटि अर्धनग्न, शोषित और उपेक्षित और कीड़े–मकोड़ों जैसा जीवन बिता रही जनता उनके सम्मुख प्रकट हो गई, जिसे उन्होंने भारत भ्रमण के दौरान देखा था। उन्होंने यह महसूस किया धर्म का झंडा उठाए लोगों ने भी इस दीन–दुखी जनता के कल्याण के लिए कुछ नहीं किया। विदेशियों ने धीरे–धीरे देश पर आधिपत्य जमा लिया है। उन्हें अनुभव हुआ कि धर्म इस देश की प्राणवायु

है। धर्म ने नहीं वरन् धर्म के गलत आचरण से भारत की यह दशा हुई है। शिला पर बैठे हुए उन्होंने संकल्प किया कि वे देश को अशिक्षा, अज्ञान, निर्धनता और धर्म विमुखता के पंजे से निकालकर उसे सशक्त, सम्पन्न, शिक्षित और ज्ञानवान राष्ट्र के रूप में बदलने का अभियान चलाएंगे। उनका मुख मण्डल आत्म विश्वास और आशा से दमकने लगा। कन्याकुमारी की शिला पर आत्ममंथन से अर्जित आत्मशक्ति से वे राष्ट्र को नई दिशा देने के लिए एक नए संकल्प और उत्साह से देश भ्रमण के अगले चरण के लिए निकल पड़े।

अमेरीका में भारतीय संस्कृति के अग्रदूत–

भारत भ्रमण के दौरान जब वे विभिन्न विद्वानों और राजा–महाराजाओं से मिले तो स्वामी विवेकानन्द के भारतीय धर्म, संस्कृति के ज्ञान से वे इतने प्रभावित हुए कि अनेक राजा–महाराजाओं ने, विद्वानों ने उन्हें शिकागो में 1893 में आयोजित होने जा रहे विश्व धर्म महासभा में भाग लेकर भारतीय संस्कृति की पताका विश्व में फहराने की सलाह दी। उन्होंने उनकी बात मानते हुए अमेरिका प्रस्थान किया। जुलाई 1893 में शिकागो पहुंचने पर पता चला कि सम्मेलन सितम्बर में होगा। इस बीच वे बोस्टन चले गए क्योंकि वह सस्ता शहर था। वहां पर उनकी मुलाकात प्रोफेसर जान हेनरी राइट से हुई जो हारवर्ड विश्वविद्यालय में प्राध्यापक थे। प्रोफेसर राइट उनकी विद्वत्ता से दंग रह गए। दोनों में गहरी घनिष्ठता हो गई। जब प्रो. राइट को पता चला कि स्वामी जी धर्म संसद में भाग लेने आए हैं और उनके पास परिचय पत्र नहीं है तो उन्होंने सम्मेलन के प्रतिनिधियों का चयन करने वाली समिति के अध्यक्ष को, जो कि उनके अच्छे परिचित थे, पत्र लिखा कि वे स्वामी विवेकानन्द को प्रतिनिधि बनाएं। उन्होंने लिखा–'इस व्यक्ति की विद्वत्ता यहां के सभी प्रोफेसरों की सामूहिक विद्वत्ता से भी अधिक है।'

वे सितम्बर में शिकागो आए। शिकागो में विश्व धर्म महासभा के अपने अनुभव के बारे में स्वामी विवेकानन्द जी ने अपने एक शिष्य को पत्र में लिखा है – 'निस्संदेह मेरा हृदय धड़क रहा था और जबान प्रायः सूख गई थी। मैं इतना घबराया हुआ था कि सुबह बोलने की हिम्मत नहीं हुई।' उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि इतनी बड़ी सभा में वे कैसे बोलेंगे, क्या बोलेंगे। वहां करीब–करीब सभी लोग बड़ी तैयारी से, गहन अध्ययन के बाद लिखित व्याख्यान दे रहे थे। सभापति के बार–बार कहने पर आखिर विवेकानन्द बोलने के लिए खड़े हुए। आंखें बंद मन ही मन माँ काली और गुरुदेव को याद करने के बाद उन्होंने विशाल सभाकक्ष में नज़र दौड़ाई और व्याख्यान की अभ्यस्त अपनी ओजपूर्ण वाणी में बोले – 'सिस्टर्स एण्ड ब्रदर्स आफ अमेरिका! (अमेरिका की बहनों और भाइयो) ये पांच शब्द जैसे ही श्रोताओं तक पहुंचे समूचा सभाकक्ष तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इससे उनका आत्मविश्वास लौट आया और अपना वह वक्तव्य दिया जिसने उन्हें विश्व में अमर कर दिया। उन्होंने कहा 'मुझे गर्व है कि मैं ऐसे धर्म का अनुयायी हूँ जिसने विश्व को सहिष्णुता और विश्व बंधुत्व की शिक्षा दी है। हम केवल धार्मिक सहिष्णुता का ही पालन नहीं करते सभी धर्मों को सत्य मानते हैं। मुझे उस देश का नागरिक होने का गर्व है जिसने सभी धर्मों तथा राष्ट्रों के सताए हुए और विस्थापित लोगों को शरण दी है। मुझे उस राष्ट्र से जुड़े होने का गर्व है जिसने महान् यहूदी राष्ट्र को शरण दी है और आज भी उनका संरक्षण कर रहा है।' इसके बाद उन्होंने धर्मों की विविधता की व्याख्या करने वाले संस्कृत श्लोक उद्धृत किए जो उन्हें बचपन से कंठस्थ थे।

उन्होंने ईसाइयों के ''धर्म प्रचार'' के कार्य की निंदा की। उन्होंने कहा – ''आप ईसाई लोग जो मूर्तिपूजकों की आत्मा का उद्धार करने के लिए अपने धर्म प्रचारकों को भेजने के लिए इतने उत्सुक रहते हैं, उन्हें भूख से मरने से बचाने के लिए कुछ क्यों नहीं करते? भारतवर्ष में जब भयानक अकाल पड़ा था, तो सहस्रों और लाखों हिंदू भूखमरी से मर गए, पर आपने उनके लिए कुछ नहीं

किया। आप लोग सारे भारत में जाकर गिरजे बनवाते हैं पर पूर्व का प्रधान अभाव धर्म नहीं है, उनके पास धर्म पर्याप्त है। भारत के लाखों भूखे लोग सूखे गले से रोटी के लिए चिल्ला रहे हैं। वे हमसे रोटी मांगते हैं और हम उन्हें देते हैं पत्थर। भूखे व्यक्ति को धर्म का उपदेश देना उनका अपमान करना है। मैं यहां पर अपने दरिद्र भाइयों के लिए सहायता मांगने आया था पर मैं यह पूरी तरह समझ गया हूँ कि मूर्तिपूजकों के लिए ईसाई धर्मावलम्बियों से और विशेषकर उन्हीं के देश में सहायता प्राप्त करना कितना कठिन है।''

इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने अपने वक्तव्य से एक ओर जहां वेदांत और भारतीय संस्कृति से, भारतीय नैतिक मूल्य परम्परा से अमरीकियों को अवगत कराया वहीं उन्होंने भारत की जनता की जरूरतों को भी बखूबी दुनिया के सामने रखा।

उपसंहार

विवेकानन्द एक ऐसे साधु संन्यासी थे जिन्होंने आत्मा के साथ–साथ शरीर और भौतिक आवश्यकताओं की भी अहमियत समझी थी। उन्होंने गरीबों, दीन–दुखियों की सेवा और सहायता को अध्यात्म से ज्यादा महत्व दिया। उन्होंने दरिद्रनारायण शब्द की रचना की। रामकृष्ण मिशन की स्थापना का उद्देश्य भी धर्म प्रचार न होकर संकटग्रस्त और अभावग्रस्त लोगों को भोजन, वस्त्र आदि उपलब्ध कराना था।

स्वामी विवेकानन्द का यह दृढ मत था कि पश्चिम और पूर्व में कोई द्वन्द्व या विरोध नहीं है, बल्कि वे एक दूसरे के पूरक बन सकते हैं। पश्चिम अपनी भौतिक प्रगति पूर्व को देकर वहां की निर्धनता, अशिक्षा व अज्ञान को दूर करने में सहायता कर सकता है तो पूर्व भी अपने अध्यात्म और शांति के मूल्य पश्चिम को दे सकता है।

स्वामी विवेकानन्द जी रामकृष्ण परमहंस के विचारों और भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए दिन–रात मेहनत करते थे। इसलिए अमेरिका प्रवास के दौरान उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा। स्वामी विवेकानन्द जी 04 जुलाई, 1902 को इस दुनिया को छोड़कर सदा के लिए ब्रह्म में लीन हो गए। चालीस वर्ष से भी कम आयु के अपने जीवन में उन्होंने सम्पूर्ण विश्व को एक नई दृष्टि, नई चेतना दी जो युगों–युगों तक आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी।

कोई भी व्यक्ति महान तभी बनता है जब उसके जीवन और विचारों का असर अपने समय से कहीं आगे तक जाए। विवेकानन्द बीसवीं सदी के आरम्भ में ही दुनिया से चले गए किन्तु उनके विचार दर्शन और कार्य कभी पुराने नहीं हुए। उनकी मृत्यु के एक सदी से भी अधिक समय बीत जाने के बावजूद आज भी सार्थक और प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। स्वामी विवेकानन्द सही मायने में एक युगप्रवर्तक राष्ट्रभक्त संन्यासी थे।

"देश के प्रति निष्ठा सभी निष्ठाओं से पहले आती है और यह पूर्ण निष्ठा है क्योंकि इसमें कोई प्रतीक्षा नहीं कर सकता कि बदले में उसे क्या मिलता है।"

– लाल बहादुर शास्त्री

"निष्ठुर आलोचना और स्वतंत्र विचार ये क्रांतिकारी सोच के दो अहम् लक्षण हैं।"

– भगत सिंह

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका

संजना सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (पुस्तकालय)
गणेश कुमार साहू, सहायक प्रबंधक (पुस्तकालय)
राजभाषा पुंस्तकालय, निगम मुख्यालय

प्रस्तावना

नारी सदियों से चली आ रही सामाजिक व्यवस्था का अभिन्न अंग रही है, जिसके बिना संसार अकल्पनीय है। श्रीदेवीभागवत में नारी को परब्रह्म के रूप में चित्रित किया गया है। इस पुराण के अनुसार, 'सृष्टि उत्पत्ति से लेकर प्रलय तक का संपूर्ण घटनाक्रम आदि–शक्ति द्वारा रचा गया है। नारी के व्यक्तित्व का यदि गहन अध्ययन किया जाए, तो उसके एक ही रूप में अनगिनत रूप सजीव हो उठते हैं–कभी माँ के रूप में वह ममत्व की छांव देती है, तो कभी पत्नी धर्म का पालन कर पति को आत्मिक, मानसिक व शारीरिक सुख प्रदान करती है, कभी बहन के रूप में भाई को सद्मार्ग की ओर प्रेरित करती है, तो कभी पुत्री रूप में जन्म लेकर पिता के जीवन को सार्थक करती है। यद्यपि समाज में नारी के इन्हीं रूपों को पहचाना जाता है, परंतु कुछ नारियां ऐसी भी हुई, जिन्होंने कभी दुर्गा व काली बनकर दैत्यों का संहार किया, तो कभी राधा बनकर संसार में निःस्वार्थ प्रेम का प्रसार किया। कभी सीता बनकर पति का अनुसरण किया, तो कभी सावित्री बनकर यमराज से भी टकरा गई।

अपने वैभव व समृद्धि के बल पर हमारा देश कभी सोने की चिड़िया कहलाता था। फिर बाहर से आए हमलावरों और क्रूर लुटेरों ने इस देश को लूटना शुरू कर दिया। पहले मुगलों और फिर अंग्रेज़ों ने दोनों हाथों से हमारे देश को लूटा और इसकी अकूत सम्पदा को विदेशों में स्थानांतरित कर दिया। इन्हीं लोगों ने हमारे देश को गुलाम बनाया और हमारे देशवासी परतंत्रता की जंजीरों में जकड़े गए। याद कीजिए देश का वह दौर जब हम अंग्रेज़ों के गुलाम थे और हमें अंग्रेज़ों की यातनाएं सहनी पड़ती थी। उस समय हम भारतवासियों की मनोदशा उन्मुक्त गगन में उड़ते हुए उन आज़ाद पंछियों की तरह थी जिन्हें किसी ने पिंजरे में कैद कर दिया हो। गुलामी की यातनाओं को सहते हुए तड़पना और अंग्रेज़ों के अत्याचार सहना हमारी नियति बन चुका था। उस मुसीबत भरे संघर्ष के दौर में अनेक साहसी लोगों ने देश को आज़ाद कराने का संकल्प किया और अंग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया। उन्हीं देशभक्त, जांबाज़, क्रांतिकारी पुण्य आत्माओं के कारण आज हम आज़ादी की खुली हवा में सांस ले रहे हैं। एक आकलन के अनुसार करीब साढ़े सात लाख लोगों ने आज़ादी की लड़ाई में अपने प्राण न्योछावर किए थे।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, स्वतंत्रता के लिए भारतीयों के संघर्ष की अदभुत गाथा है। इस संघर्ष में पुरूषों और महिलाओं ने समान रूप से भाग लिया। भारतीय महिलाओं का योगदान इसमें इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि उनका सामाजिक उत्थान हुए बहुत लंबा समय व्यतीत नहीं हुआ था। घर का मोर्चा हो या राजनीति का रणक्षेत्र, महिलाओं ने जिस साहस, सहिष्णुता और वीरता से स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भूमिका निभाई, वह इतिहास की अमूल्य धरोहर है। सन् 1857 का विद्रोह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का पहला ऐसा विस्फोट था, जिसकी एक नायक एक महिला थी और जिसने अद्भुत वीरता, पराक्रम और दिलेरी का परिचय दिया। स्वयं अंग्रेज शासक भी उसकी बहादुरी की प्रशंसा किए बगैर नही रह सके। सर हयूरोज को झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के अद्भुत पराक्रम से चकित होकर कहना पड़ा कि 'सैनिक विद्रोह के नेताओं में महारानी लक्ष्मीबाई सर्वाधिक बहादुर और सर्वश्रेष्ठ थीं।'

रामगढ़ की रानी ने जहां रणक्षेत्र में लड़ते लड़ते प्राण दे दिए वहीं बेगम हजरत महल अंग्रेजों के समक्ष आत्म समर्पण कर अपमानित होने के बजाए नेपाल की ओर चल पड़ी, जहां वनवास में उनकी मृत्यु हुई और जीनत महल को बर्मा में निर्वासित कैदी के रूप में जीवन व्यतीत करना पड़ा।

सन् 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ने महिलाओं को एक राजनीतिक मंच प्रदान किया। इसकी स्थापना के कुछ वर्षों बाद कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों में भारतीय महिलाएं प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिए आगे आई। 1890 के कलकत्ता अधिवेशन में स्वर्ण कुमारी देवी और श्रीमती कादम्बिनी गांगुली ने भाग लिया। श्रीमती गांगुली प्रथम महिला थीं जिन्होंने राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच से अपना पहला भाषण दिया। गांधी जी ने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने का आह्वान किया। जब 1930 में गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया, तो बड़ी संख्या में महिलाओं ने सत्याग्रह में भाग लेकर अपनी शक्ति का परिचय दिया। उसी तरह 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में तो हजारों की संख्या में महिलाएं घरों से बाहर निकल आई। उन्होंने तन–मन से इस आन्दोलन में सहयोग दिया। संगठित रूप से कर्तव्य के प्रति समर्पित होकर और अनेक यातनाओं को सहते हुए उस समय राजनीतिक गतिविधियों की बागडोर सम्भाली जब अधिकांश राष्ट्रीय नेताओं को ब्रिटिश सरकार ने सींखचों में जकड़कर रखा था। उस समय राष्ट्रीय स्तर पर श्रीमती सरोजनी नायडू, अरूणा आसिफ अली, श्रीमती सुचेता कृपलानी, कमला देवी चट्टोपाध्याय, कस्तूरबा गांधी, विजय लक्ष्मी पंडित, मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी, एनी बेसेंट, हन्सा मेहता तथा राजकुमारी अमृत कौर जैसी अनेक महिलाओं के योगदान को इतिहास कभी विस्मृत नहीं कर पाएगा। निःसंदेह गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन से लेकर भारत की स्वाधीनता तक महिलाओं का राष्ट्रीय आंदोलन में जो योगदान था, वह भारतीय परिवेश में उनकी जागरूकता एवं परिवर्तनों को दर्शाता है। कुल मिलाकर भारतीय महिलाओं के उत्थान का यह स्वर्णिम काल था।

इतिहास पर दृष्टि डालते ही ऐसे अनेक अद्भुत नारी चरित्र सामने उभरकर आते हैं, जिनके नाम सुनहरे अक्षरों में लिखे गए और जिन्होंने देश को आजादी दिलाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस लेख में हम ऐसी ही कुछ साहसी, देशभक्त महिलाओं के बारे में जानेगे, स्वतंत्रता आन्दोलन में जिनके योगदान को यह देश सदा याद करता रहेगा और आभारी रहेगा :

रानी लक्ष्मीबाई

भारत में जब भी महिलाओं के सशक्तिकरण की बात होती है तो महान वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की चर्चा ज़रूर होती है। रानी लक्ष्मीबाई न सिर्फ़ एक महान नाम है बल्कि वह एक आदर्श हैं उन सभी महिलाओं के लिए जो खुद को बहादुर मानती हैं और उनके लिए भी एक आदर्श हैं जो महिलाएं ये सोचती है कि 'वह महिलाएं हैं तो कुछ नहीं कर सकती'। देश के पहले स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली रानी लक्ष्मीबाई के अप्रतिम शौर्य से चकित अंग्रेजों ने भी उनकी प्रशंसा की थी और वह अपनी वीरता के किस्सों को लेकर किंवदंती बन चुकी हैं। रानी लक्ष्मीबाई मराठा शासित झांसी राज्य की रानी थीं और 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजी हुकुमत के विरुद्ध बिगुल बजाने वाले वीरों में से एक थी। वे ऐसी वीरांगना थीं जिन्होंने मात्र 23 वर्ष की आयु में ही ब्रिटिश साम्राज्य की सेना से मोर्चा लिया और रणक्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हो गई।

बेगम हज़रत महल

जंगे–आज़ादी के सभी अहम केंद्रों में अवध सबसे ज़्यादा समय तक आज़ाद रहा। इस बीच बेगम महल ने लखनऊ में नए सिरे से शासन संभाला और बगावत की कयादत की। बेगम की हिम्मत का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि उन्होंने मटियाबुर्ज में जंग–ए–

आज़ादी के दौरान नज़रबंद किए गए वाजिद अली शाह को छुड़ाने के लिए लार्ड कैनिंग के सुरक्षा दस्ते में भी सेंध लगा दी थी। इतिहासकार ताराचंद लिखते हैं कि बेगम खुद हाथी पर चढ़ कर लड़ाई के मैदान में फौज का हौसला बढ़ाती थीं।

दुर्गा भाभी

स्वतंत्रता आंदोलन की क्रांतिकारी महिलाओं में – दुर्गा भाभी का प्रमुख स्थान है। दुर्गा भाभी का जन्म 7 अक्टूबर, 1907 को इलाहाबाद में हुआ था। दुर्गा भाभी भगवती बाबू जैसे महान क्रांतिकारी की पत्नी थी। उन्होंने अपने पति की क्रांतिकारी गतिविधियों में पूरा सहयोग दिया। वे दल के लिए पैसा इकट्ठा करती थी, क्रांति से संबन्धित परचे बांटती थी, घर पर आए क्रांतिकारियों का स्वागत–सत्कार करती थी, उन्हें आश्रय देती थी। भगत सिंह द्वारा सांडर्स की हत्या करने पर वह भगत सिंह की पत्नी के रूप में उनके साथ कलकत्ता गई। दुर्गा भाभी ने गांधी जी से अन्य क्रांतिकारियों के साथ भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को छुड़ाने की शर्त वायसराय के सामने रखने के लिए कहा था।

अनुसूयाबाई काले

अनुसूयाबाई काले महाराष्ट्र की थी परंतु इनका मुख्य कार्यक्षेत्र मध्य प्रदेश था। वर्ष 1920 में उन्होंने महिलाओं के एक संगठन भगिनी मंडल की स्थापना की। इसके अलावा वो अखिल भारतीय महिला सभा की सक्रिय सदस्य रहीं। वर्ष 1928 में अनुसूयाबाई केंद्रीय प्रांत विधानमंडल की सदस्य नियुक्त हुईं तथा इसकी उपाध्यक्ष भी रहीं। लेकिन शीघ्र ही नमक सत्याग्रह के बाद गांधीजी की गिरफ्तारी के बाद उन्होंने अपने पद से त्याग दे दिया तथा गांधी जी की रिहाई के लिए प्रदर्शन करने लगीं। उनकी राजनैतिक गतिविधियों के लिए उन्हें कई बार गिरफ्तार किया गया। वर्ष 1937 में हुए प्रांतीय चुनावों के बाद अनुसूयाबाई मध्य प्रदेश विधानमंडल की उपाध्यक्ष चुनी गईं लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारंभ होने और भारत को ज़बरन उसमें शामिल करने के बाद कॉंग्रेस के आह्वान पर उन्होंने फिर अपना पद छोड़ दिया। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान वे काफी सक्रिय रहीं। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान महाराष्ट्र के अश्ती तथा चिमूर में आदिवासियों के साथ किए गए सरकार के दमन के विरुद्ध उन्होंने आवाज़ उठाई। इसके अलावा अश्ती तथा चिमूर में हुए विद्रोह में 25 लोगों को हुई फांसी की सजा हुई थी जिन्हें उनके प्रयासों से बचाया जा सका।

ऊषा मेहता

भारत छोड़ो आंदोलन के प्रारंभ होने के बाद जब सभी मुख्य कांग्रेसी नेता गिरफ्तार कर लिए गए तब जिन लोगों ने गुप्त तरीके से आंदोलन को चलाया उनमें से ऊषा मेहता प्रमुख नाम है। कांग्रेस रेडियो के माध्यम से ऊषा मेहता ने भारत छोड़ो आंदोलन में अभूतपूर्व योगदान दिया। उनके द्वारा देश के विभिन्न स्थानों से आने वाली क्रांति की खबरें इस पर प्रसारित की जाती थी जिसकी वजह से स्थानीय स्तर पर आंदोलन कर रहे सत्याग्रहियों को हौसला मिलता था। इस रेडियो का प्रसारण मुंबई में विभिन्न स्थानों पर छिपा कर किया जाता था तथा प्रत्येक दिन का प्रसारण अलग–अलग स्थान से होता था। इसे कांग्रेस रेडियो के नाम से प्रसारित किया गया तथा 3 महीने तक चलने के बाद ही इसे पुलिस पकड़ पाई। इस रेडियो के माध्यम से चटगांव बम ब्लास्ट, जमशेदपुर हड़ताल तथा अश्ती और चिमूर में पुलिस की बर्बरता की खबरों को प्रसारित किया गया।

सरोजनी नायडू

भारत कोकिला के नाम से जानी जाने वाली सरोजनी नायडू सन् 1914 में पहली बार महात्मा गांधी से इंग्लैंड में मिली और उनके विचारों से प्रभावित होकर देश के लिए समर्पित हो गईं। उन्होंने धरसाना नमक सत्याग्रह के दौरान गांधी जी व सभी अन्य नेताओं की गिरफ्तारी के बाद सत्याग्रहियों का नेतृत्व किया था। 3 दिसंबर,

1940 को विनोबा भावे के नेतृत्व में हुए व्यक्तिगत सत्याग्रह में हिस्सा लेने के कारण पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया लेकिन स्वास्थ्य कारणों से उन्हें शीघ्र ही जेल से रिहा कर दिया गया। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गिरफ्तार हुए प्रमुख नेताओं में वे भी शामिल थीं। उन्हें पुणे के आगा खाँ महल में रखा गया था। 10 महीने के बाद जेल से वो रिहा हुई तथा फिर से राजनीति में सक्रिय हुईं। भारत में फैली प्लेग महामारी के दौरान लोगों की सेवा करने के लिए भारत सरकार ने उन्हें कैसर–ए–हिंद की उपाधि दी थी जिसे उन्होंने जलियाँवाला बाग हत्याकांड के बाद वापस कर दिया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उन्हें उत्तर प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया गया तथा मार्च 1949 तक वो इस पद पर बनी रहीं एवं अपने कार्यकाल के दौरान ही उनकी मृत्यु हो गई।

अरुणा आसफ अली

अरुणा नमक सत्याग्रह के दिनों से ही राजनैतिक रूप से सक्रिय थी लेकिन उनकी पहचान 9 अगस्त, 1942 को मुंबई के ग्वालिया टैंक मैदान में बनी जब सभी नेताओं की गिरफ्तारी के बाद उन्होंने राष्ट्रीय ध्वजारोहण समारोह का नेतृत्व किया। उस समय बहुत बड़ी संख्या में भीड़ एकत्रित हुई थी और पुलिस ने उस पर नियंत्रण के लिए लाठी, आँसू गैस तथा गोली चलायी फिर भी अरुणा ने उस सभा का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। भारत छोड़ो आंदोलन में अरुणा आसफ अली ने भी अन्य नेताओं की भांति ही भूमिगत तरीके से भागीदारी की और आंदोलन के प्रचार में अपना योगदान किया। सितंबर 1942 में दिल्ली प्रशासन की तरफ से अरुणा को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया था लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। इस कारण उनका घर, संपत्ति, गाड़ी आदि को नीलाम कर दिया गया। इसके बावजूद भी अरुणा आसफ अली आंदोलन के लिए प्रचार करती रही, पत्रिकाओं में लेख लिखती रहीं तथा लोगों से लगातार मिलती रही। उन्होंने राममनोहर लोहिया के साथ मिलकर 'इंकलाब' नामक मासिक पत्रिका का संपादन किया। सन् 1998 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

कल्पना दत्ता

कल्पना दत्ता बंगाल में वामपंथी राजनीति तथा क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय थीं। वर्ष 1930 के चटगांव शस्त्रागार लूट में वो सूर्य सेन (मास्टर दा) के साथ शामिल थी तथा वर्ष 1932 में उन्हें आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई गई थी। वर्ष 1935 के भारत शासन अधिनियम के बाद राज्यों को स्वायत्तता दी गई, जिसके बाद भारतीय नेताओं– रवींद्रनाथ टैगोर, सी. एफ. एंड्रू तथा महात्मा गांधी ने उनको जेल से छुड़ाने में मदद की तथा वर्ष 1939 में वो जेल से रिहा हुईं। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सरकार ने उनके बाहर निकलने पर प्रतिबंध लगा दिया था लेकिन वो भूमिगत तरीके से पार्टी तथा आज़ादी के लिए लगातार कार्य करती रहीं।

राजकुमारी अमृत कौर

राजकुमारी ने भारत छोड़ो आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वो पंजाब के कपूरथला राजघराने से संबंधित थीं तथा लंदन से पढ़ाई करने के बाद वो भारत लौटीं। वो गांधी जी के विचारों से काफी प्रभावित थीं तथा नमक सत्याग्रह में भी उन्होंने अपना योगदान दिया था। उनका मुख्य कार्यक्षेत्र शिक्षा के माध्यम से महिलाओं तथा हरिजन समाज को सशक्त बनाना था। वह अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संगठन की अध्यक्ष भी रही। भारत छोड़ो आंदोलन में वो लोगों के साथ मिलकर जुलूस निकालती और विरोध प्रदर्शन करती थी। शिमला में 9 से 16 अगस्त के बीच उन्होंने प्रतिदिन जुलूस निकला तथा पुलिस ने उन पर 15 बार लगातार निर्दयता से लाठीचार्ज किया। अंततः सरकार ने उन्हें बाहर छोड़ना उचित नहीं समझा तथा कालका में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इसके अलावा, राजकुमारी ने वर्ष 1932 में अखिल भारतीय महिला सभा की स्थापना में मुख्य भूमिका निभाई। उन्होंने वर्ष 1932 में मताधिकारों के

लिए बनी लोथियन समिति के विरोध में आवाज़ उठाई।

कमलादेवी चट्टोपाध्याय

कमलादेवी चट्टोपाध्याय नमक सत्याग्रह तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन से ही राजनीति में सक्रिय रही थी। उसके बाद वो लगातार स्वतंत्रता संघर्ष के लिए होने वाले आंदोलनों में भागीदारी देती रहीं। अपने राजनीतिक संघर्ष के दौरान उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उन्हें भी गिरफ्तार किया गया। जेल से छूटने के बाद वो अमेरिका गईं तथा वहां के लोगों को भारत में ब्रिटिश हुकूमत की सच्चाई के बारे में बताया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने अपना समय भारत की कला, संस्कृति तथा दस्तकारी के उत्थान में लगाया। सहकारी संगठनों की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने राष्ट्रीय नाट्य अकादमी, संगीत नाटक अकादमी की स्थापना की तथा भारतीय वर्ष 1955 में कला के क्षेत्र में योगदान के लिए उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

डॉ. लक्ष्मी सहगल

वह बचपन से ही राष्ट्रवादी आंदोलन से प्रभावित थी। उस समय जब महात्मा गांधी ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आंदोलन छेड़ा, तो लक्ष्मी ने भी उसमें हिस्सा लिया था। वर्ष 1942 में अंग्रेज़ों ने सिंगापुर को जापानियों को सौंप दिया, उस समय लक्ष्मी सहगल ने घायल युद्धबंदियों के उपचार के लिए काफी कार्य किया। सिंगापुर में प्रवासी मजदूर वर्ग पर हो रहे जुल्म को देख उन्होंने निश्चय किया कि, वह भी अपने देश की आज़ादी के लिए कुछ करेंगी। 2 जुलाई, 1943 को सुभाष चंद्र बोस सिंगापुर आए, उस समय लक्ष्मी सहगल उनके विचारों से अत्यंत प्रभावित हुई। लक्ष्मी के भीतर आज़ादी का जज़्बा देखने के बाद नेताजी ने उनके नेतृत्व में 'रानी लक्ष्मीबाई रेजीमेंट' बनाने की घोषणा कर दी जिसमें वह वीर नारियां शामिल की गई जो देश के लिए अपनी जान दे सकती थीं। 22 अक्तूबर, 1943 में लक्ष्मी ने रानी झाँसी रेजिमेंट में 'कैप्टन' पद पर कार्यभार संभाला। 4 मार्च, 1946 को आज़ाद हिंद फ़ौज की हार के बाद ब्रिटिशों द्वारा वह पकड़ी गई, लेकिन जल्द ही उन्हें छोड़ दिया गया। उनके महान कार्यों की बदौलत उन्हें 'कर्नल' पद भी दिया गया। इस तरह लक्ष्मी सहगल 'कर्नल' पद हासिल करने वाली एशिया की पहली महिला बनी। लेकिन, वह लोगों के मन में 'कप्तान लक्ष्मी' के रूप में ही प्रसिद्ध रही।

सुचेता कृपलानी

सुचेता कृपलानी का राजनीतिक जीवन तब प्रारंभ होता है जब वह काशी हिंदू विश्वविद्यालय में इतिहास की लेक्चरर थी। वर्ष 1936 में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता आचार्य जे.बी. कृपलानी से उनका विवाह हुआ। उसके बाद वो सक्रिय राजनीति में भाग लेने लगी और अपनी लेक्चरर की नौकरी छोड़ दी। उन्होंने आचार्य विनोबा भावे के नेतृत्व में व्यक्तिगत सत्याग्रह में हिस्सा लिया और जेल गईं। जेल से निकलने के बाद भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भूमिगत होकर वह आंदोलन का प्रचार–प्रसार करती रही। इस कार्य के दौरान उन्हें कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा किंतु वह पुलिस से बचती रही। वर्ष 1943 में जब कांग्रेस में महिला विभाग की स्थापना की गई तब सुचेता कृपलानी को उसका सचिव बनाया गया। उसके बाद उन्होंने महिला कांग्रेस के प्रचार तथा उसमे लोगों को जोड़ने के लिए लगातार प्रयास किए। भारत विभाजन के समय वो गाँधी जी के साथ मिलकर दंगे से प्रभावित क्षेत्रों में जाती थी। वर्ष 1963 में वह उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बनी। वह भारत की पहली महिला मुख्यमंत्री थी।

इनके अलावा, असंख्य महिला नेताओं व स्थानीय महिलाओं ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भागीदारी दी जिनके प्रयासों और बलिदानों से लगभग 300 वर्षों तक गुलामी की यातना सहने के बाद हमारा देश आज़ाद हुआ। उन सभी महान विभूतियों को हमारा शत शत नमन!

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन – भूले-बिसरे नायक

जितेंद्र प्रताप सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा)
कनिका शर्मा, वरिष्ठ पर्यवेक्षक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय

माना यह जाता है कि भारत वर्ष को गुलामी से निकालकर आजादी में सांस दिलाने का संघर्ष 1857 से भी पहले शुरू हो चुका था। यही नहीं देश के अलग–अलग हिस्सों में ऐसे योद्धा हुए जिन्होंने कहीं शस्त्रों के बल पर तो कहीं शांतिपूर्ण विरोध जताकर और कहीं सामाजिक–धार्मिक चेतना को जगाकर अंग्रेजी शासन पीड़ित जनता को अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ उठ खड़े होने को तत्पर किया। इस लेख के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के कुछ भूले–बिसरे नायकों कों याद करने का प्रयास किया गया है।

हमारा स्वतंत्रता आंदोलन लिखित इतिहास का एक हिस्सा है। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के सर्वोच्च बलिदान और निःस्वार्थ भावना ने इतिहास के पन्नों पर अपनी पहचान दर्ज की है। परंतु असंख्य ऐसे निःस्वार्थ, साहसी स्वतंत्रता सेनानी भी रहे हैं, जिनका योगदान उजागर नहीं हुआ या जिनको अनदेखा कर दिया गया। इन भूले–बिसरे नायकों को याद किए बिना भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की कहानी को पूर्ण रूप नहीं दिया जा सकता। भारत की स्वतंत्रता के लगभग 75 वर्ष पूरे होने वाले हैं, पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, इस अवसर पर हम देश के उन महान सपूतों और वीरांगनाओं को श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं जो इतिहास के पन्नों पर उन्हें देय प्रतिष्ठा या पहचान प्राप्त नहीं कर पाए।

धन सिंह कोतवाल

मेरठ से प्रारंभ हुए 1857 प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में धन सिंह कोतवाल का नाम प्रमुखता के साथ लिया जाता है। सही मायनों में उन्हें मई, 1857 की क्रांति का जनक कहा जाता है। इतिहास में दर्ज 1857 क्रांति का श्रेय वैसे तो मंगल पांडे को दिया जाता है। जिन्होंने मार्च, 1857 में क्रांति का बिगुल फूंका था लेकिन सही मायनों में वह कारतूस को लेकर किया गया सैन्य विद्रोह था जो बाद में जन क्रांति में परिवर्तित हुआ। धन सिंह कोतवाल ने जो किया वो सीधे–सीधे ब्रिटिश शासन पर प्रहार था जिसकी लपट पूरे उत्तर भारत में फैल गई थी।

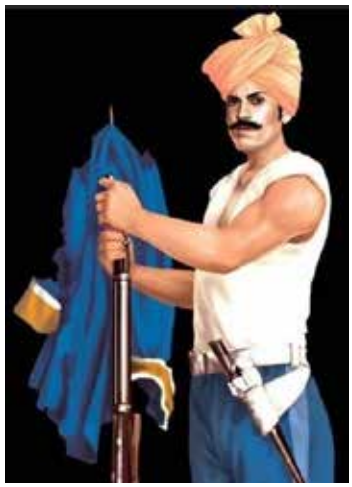

धन सिंह गुर्जर का जन्म 27 नवंबर, 1814 को ग्राम पांचली खुर्द में किसान परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम जोधा सिंह और माता का नाम मनभरी देवी था। धन सिंह बचपन से ही मेधावी छात्र रहे और वे शिक्षा प्राप्त कर पुलिस में भर्ती हो गए। उनकी कर्तव्यनिष्ठा और कार्य के प्रति लग्न को देखकर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें मेरठ शहर का कोतवाल बना दिया।

मार्च, 1857 में हुए विद्रोह की खबर पूरे देश में फैल गई। उस समय मेरठ ब्रिटिश शासन की सबसे बड़ी सैन्य छावनी था। माना जाता है उस समय मेरठ छावनी में 2,357 भारतीय सिपाही और 2,038 ब्रिटिश सैनिक तैनात थे। मेरठ शहर का कोतवाल होने के नाते पूरे मेरठ शहर की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी धन सिंह के ऊपर

थी, साथ ही शहर और छावनी को क्रांतिकारियों से भी दूर रखना था। परंतु धन सिंह में सामने स्वतंत्र भारत के सपने को साकार करने का यही अवसर था।

10 मई, 1857 को धन सिंह को जानकारी मिली कि चर्बीयुक्त कारतूसों का विरोध करने वाले 85 भारतीय सैनिकों समेत जन क्रांति के क्रांतिकारियों को मेरठ में नई जेल बनाकर उसमें कैद किया गया है। धन सिंह कोतवाल के नेतृत्व में कुछ क्रांतिकारियों ने उस जेल पर हमला बोलकर 85 भारतीय सैनिकों समेत 836 कैदियों को छुड़ाया लिया गया। धन सिंह कोतवाल के आह्वान पर उनके अपने गांव पांचली सहित गांव नंगला, गगोल, नूरनगर, लिसाड़ी, चुड़ियाला, डोलना आदि गांवों के हजारों लोग सदर कोतवाली में एकत्र हुए। धन सिंह कोतवाल के नेतृत्व में 10 मई, 1857 की रात मेरठ में बनाई गई अंग्रेजों की नई जेल में बंद भारतीय सैनिकों और क्रांतिकारियों छुड़ा लिया गया और इसके बाद जेल में आग लगा दी गई। उससे पहले भीड़ ने पूरे सदर बाजार और कैंट क्षेत्र में जो कुछ भी अंग्रेजों से संबंधित था सब नष्ट कर दिया था। विद्रोह मेरठ के देहात में फैल गया और रात में ही विद्रोही सैनिक दिल्ली कूच कर गए और धन सिंह कोतवाल की बहादुरी की खबर समस्त पश्चिमी उत्तर प्रदेश, देहरादून, दिल्ली, मुरादाबाद, बिजनौर, आगरा, झांसी, पंजाब, राजस्थान से लेकर महाराष्ट्र तक में फैल गई और जनता स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ी। 10 मई, 1857 को पूरे दिन क्रांति चलती रही। इसीलिए 10 मई को क्रांति दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

इस क्रांति के पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने धन सिंह को मुख्य रूप से दोषी ठहराया और सीधे आरोप लगाते हुए कहा कि धन सिंह कोतवाल ने ही अपने संरक्षण में ये विद्रोह करवाया और कैदियों को आजाद करवाया। मेरठ गजेटियर के वर्णन के अनुसार, 4 जुलाई, 1857 को प्रातः 4 बजे पांचली पर एक अंग्रेज रिसाले ने 56 घुड़सवार, 38 पैदल सिपाही और 10 तोपों से हमला किया। पूरे गांव को तोप से उड़ा दिया गया। सैकड़ों किसान मारे गए, जो बच गए उनको कैद कर फांसी की सजा दे दी गई। पूरे गांव को लगभग नष्ट ही कर दिया गया। ब्रिटिश सरकार ने धन सिंह को भी गिरफ्तार कर मेरठ के एक चौराहे पर फांसी दे दी लेकिन इस क्रांति के बाद ब्रिटिश हुकूमत घुटनों के बल आ गई। अंग्रेजी हुकूमत की नींव हिला दी थी देश के सच्चे सपूत धन सिंह 'कोतवाल' ने।

नगालैण्ड की लक्ष्मीबाई–रानी गिडिन्ल्यू

वनवासी नगा महिला रानी गिडिन्ल्यू महान क्रांतिकारी महिला थीं। हमारे स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं में सबसे लम्बी कारागार की सजा देश की इसी बहादुर बेटी ने काटी। उनका जन्म 26 जनवरी, 1915 को नगालैंड के नगर लाँगकाओ में हुआ था। बालिका गिडिन्ल्यू ने मिशनरी स्कूल में शिक्षा पाई। सन् 1931 में उनके एक भाई जादोनांग ने अपने आपको नगा जाति का नेता घोषित कर दिया और अंग्रेजी राज्य से स्वतंत्र होने का ऐलान कर दिया। एक अंग्रेज को जान से मार डालने के अपराध में उन्हें मृत्युदण्ड दे दिया गया। भाई की मृत्यु के बाद गिडिन्ल्यू कबीले की मुखिया बनी और लड़ाई की कमान खुद संभाल ली। उनके पास उस वक्त नगा लोगों की निजी सेना थी। असम रायफल से ये नगा लोग कई बार टकराए। गिडिन्ल्यू ने घोषणा की– 'या तो अंग्रेज रहेंगे या हम।'

17 अक्तूबर, 1932 को एक हमले में अंग्रेजी फौज ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के बाद उन्हें अनेक यातनाएं दी गईं और उनके साथ बहुत अमानवीय बर्ताव किया गया। उन पर अंग्रेजों का राज्य खत्म करने का आरोप लगाया गया और उन्हें उनकी विद्रोहात्मक कार्रवाइयों के लिए आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

जब सन् 1932 में उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ मुक्ति – युद्ध छेड़ा, तब उनकी आयु केवल 17 वर्ष थी। उस

समय से लेकर सन् 1947 तक (जब तक देश आजाद नहीं हुआ था) वे कारागार में रही। पं . नेहरू ने सन् 1937 में स्वयं गिडिन्ल्यू रानी से जेल में ही संपर्क किया और उनकी रिहाई की अपील अंग्रेजों से की। मगर बरतानिया सरकार उन्हें खतरनाक विद्रोही समझती थी। उनके समर्थक उन्हें बड़े प्यार तथा इज्जत से 'नगा – रानी' कहते थे और उन्हें इतना पूज्य व पूण्यात्मा मानते थे कि रोगों से छुटकारा पाने के लिए उनके स्पर्श किए हुए जल द्वारा चिकित्सा किया करते थे।

सन् 1939 में पं. नेहरू ने ब्रिटिश महिला सांसद लेडी एस्टर से ब्रिटिश संसद में रानी गिडिन्ल्यू की रिहाई का मामला उठवाया, लेकिन ब्रिटिश सरकार रानी की ताकत से इतना घबराती थी कि वह किसी हालत में उन्हें रिहा करने के पक्ष में नहीं थी। विदेशी हुकूमत ने उन्हें 'जंगली और अमानवीय लोगों की नेता' माना। सन् 1947 में जब देश आजाद हुआ, तब वह जेल से रिहा हुईं। अपनी रिहाई के बाद उन्होंने कुछ समय तक विश्राम किया और फिर अपने लोगों की सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं को लेकर अपनी भावी योजनाओं पर कार्य करना शुरू कर दिया। 24 फरवरी, 1966 को नगाओं के विशेष दल की मुखिया के नाते वह दिल्ली आई। देश की 25वीं स्वतंत्रता वर्षगांठ पर लाल किले के दीवान –ए– आम में सभी उपस्थित स्वतंत्रता सेनानियों के साथ उनका भी सम्मान किया गया। उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से भी मुलाकात की और प्रस्ताव रखा कि उनके कबीले के क्षेत्र को तीनों राज्यों से निकालकर अलग जिला बना दिया जाए, ताकि वहां के पिछड़े क्षेत्रों का विकास हो सके।

सोहनलाल पाठक

सोहनलाल पाठक क्रान्ति – युग के उन तेजस्वी देशभक्तों में से एक थे, जिन्होंने अपने जीवन में प्राप्त सभी सुख – सुविधाओं को ठुकराकर हंसते – हंसते मृत्यु का आलिंगन किया। उनके देश – प्रेम तथा आत्म – त्याग की भावना से हमारा स्वाधीनता संग्राम अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हुआ और देश को दासता की बेड़ियों से मुक्ति मिली।

सोहनलाल पाठक का जन्म अमृतसर जिले के पट्टी गाँव में हुआ था। उनके पिता पं. जिंदा राय धार्मिक और सात्विक प्रकृति के सत्पुरुष थे। सोहन एक मेधावी छात्र थे। उन्होंने अपने गांव के स्कूल से मिडिल कक्षा पास कर नहर विभाग में नौकरी कर ली। बाद में यह नौकरी छोड़कर उन्होंने नॉर्मल परीक्षा पास की और डी. ए.वी. स्कूल में अध्यापक के पद पर काम करने लगे।

सन् 1908 में जब लाला हरदयाल लाहौर आए, तो पाठक जी का उनसे संपर्क हो गया। हेडमास्टर साहब ने उन्हें ताकीद दी कि या तो ये लाला हरदयाल से मेल–मुलाकात बंद कर दें या स्कूल से अपना संबंध विच्छेद कर लें। पाठक जी ने स्कूल से त्याग – पत्र देकर अपने दृढ़ निश्चय और देश – प्रेम का परिचय दिया। लाला हरदयाल के कहने पर उन्होंने ब्रह्मचारी आश्रम में बहुत थोड़े वेतन पर नौकरी कर ली। तभी उनके एक मित्र सरदार ज्ञान सिंह ने किराया भेजकर पाठक जी को बैंकाक बुला लिया। चूँकि वहां की सरकार को पाठक जी की अंग्रेज विरोधी गतिविधियाँ नागवार गुजरी, अतः पाठक जी गदर पार्टी का काम करने के इरादे से अमेरिका चले गए। इससे पूर्व वे सरदार ज्ञान सिंह की सरपरस्ती में रहे, जहां उन्होंने जंगलों में जाकर मातृभूमि की आजादी के लिए

मर–मिटने की शपथ ली थी। पाठक जी अमेरिका जाने से पहले हांगकांग गए, जहां वे भारतीय बच्चों को पढ़ाते रहे। अपने मनीला प्रवास में उन्होंने बंदूक चलाने का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। थोड़े बहुत अभ्यास के बाद वे बंदूक चलाने में दक्ष हो गए।

सैनफ्रांसिस्को पहुंचकर पाठक जी गदर पार्टी में शामिल हो गए और लाला हरदयाल के निर्देश पर कार्य करने लगे। सन् 1914 में गदर पार्टी की ओर से सभी देशों में गदर का प्रचार करने के लिए कार्यकर्ता विभिन्न देशों में भेजे गए। पाठक जी भी एक उत्साही कार्यकर्ता नारायण सिंह के साथ अमेरिका से बर्मा भेजे गए। दोनों महानुभाव पहले बैंकाक गए और कुछ दिन वहां प्रचार करके रंगून जा पहुंचे। वहां गदर पार्टी का केन्द्र बनाकर उन्होंने काम शुरू कर दिया। उत्तरी भारत में 21 फरवरी, 1915 का दिन विप्लव के लिए नियत किया गया था। रंगून में पाठक जी ने अंग्रेजों की फौज में तैनात हिन्दुस्तानी सिपाहियों को समझाया कि यदि जान ही देनी है, तो देश के लिए दो। हमें गुलाम बनाने वाले अत्याचारी अंग्रेजों के लिए क्यों जान देते हो ? सिपाहियों में विद्रोह की अग्नि सुलगने लगी। पाठक जी को उन सैनिकों की ओर से किसी प्रकार के अनिष्ट की आशंका नहीं थी। लेकिन दुर्भाग्यवश एक देशद्रोही फौजी ने ही उनके साथ विश्वासघात किया और उन्हें अंग्रेजों के सुपुर्द कर दिया। तब पाठक जी की जेब में तीन पिस्तौलें और कुछ गोलियां थी। वे चाहते, तो उस गद्दार फौजी को एक क्षण में मौत के मुंह में पहुंचा सकते थे। लेकिन वे उसे समझाते रहे तुम और मैं भाई – भाई हैं। मुझे पकड़वाकर तू एक जालिम हुकूमत का साथ दे रहा है। उसने पाठक जी की एक भी न सुनी और उन्हें घसीटता हुआ ले गया। पाठक जी को कैद कर मांडले जेल भेज दिया गया।

वहां उन पर भारतीय दण्ड विधान तथा भारत रक्षा अधिनियम के अधीन मुकदमा चलाया गया और यह आरोप लगाया गया कि वे ब्रिटिश साम्राज्य की प्रजा को भड़काकर सरकार का तख्ता पलटने का काम कर रहे थे। जेल में बंद पाठक जी को अंग्रेजों की ओर से प्रस्ताव दिया गया कि वे यदि माफी मांग लें तो उन्हें माफ कर दिया जाएगा। लेकिन पाठक जी ने यह कह कर माफी मांगने से मना कर दिया कि जुल्म अंग्रेज़ कर रहे हैं इसीलिए उन्हें भारतवासियों से माफी मांगनी चाहिए। 15 दिसम्बर, 1915 को भारत के इस सपूत को फांसी दे दी गई और स्वतंत्रता के लिए यह शहीद सदा के लिए अमर हो गया।

पंडित परमानन्द

स्वार्थरहित होकर शस्त्र और शास्त्र की उपासना करने वाला ही सच्चा वीर और पंडित होता है। इस कोटि के परमवीर और महान विद्वान पं. परमानन्द हमारे देश के ही नहीं, सभी देशों के क्रांतिकारियों के आराध्य हैं। व्यवस्था के सुख भोग और सत्ता के आतंक की परवाह किए बिना उन्होंने लम्बे समय तक क्रांति का संचालन करके हमारे इतिहास में एक ऐसे अध्याय का निर्माण किया।

महापराक्रमी पं. परमानन्द एक मध्यवर्गीय श्रीवास्तव परिवार में जन्में पंडित जी की प्रारंभिक शिक्षा हमीरपुर जिले की राठ तहसील में हुई। तत्पश्चात् वे इलाहाबाद की कायस्थ पाठशाला में प्रवेश लेकर वास्तविक शिक्षा – प्राप्ति में लग गए। स्वतंत्रता पूर्व देश की खराब स्थिति की वजह से सुख–सुविधा भोगी विद्यार्थी होना उन्हें गवारा न था। वे इतिहास पढ़ते – पढ़ते इतिहास गढ़ने वाली शिक्षा की ओर अग्रसर होने लगे। उन दिनों पूरे देश में आजादी की लड़ाई की चिनगारी सुलग

रही थी। उनके वीरतापूर्ण और देशभक्तिपूर्ण हृदय में स्वातंत्र्य–प्रेम के बीज विद्यमान थे ही। अनुकूल वातावरण पाकर वे विकसित होने लगे। परिणामतः होश संभालते ही उन्होंने देश को आजाद कराने अथवा उनमें अपना सर्वस्व लूटा डालने की भीष्म प्रतिज्ञा कर ली।

प्रारम्भ से ही पंडित जी को मातृभूमि ध्यान करने पर जंजीरों से आबद्ध, पराधीन, अपमानित, लुटा हुआ, निःशक्त भारत उनकी आँखों के आगे आ जाता था। उनका कोमल हृदय धीरे – धीरे सख्त होने लगा और देश की स्वतंत्रता के लिए जीवन अर्पण करने का उनका निश्चय दृढ़ होता गया। वे देश में घूम–घूम कर अपने देशवासियों में स्वातन्त्र्य – प्रेम का भाव जाग्रत करने लगे। एक – एक व्यक्ति से मिलकर वे उन्हें समझाते कि पराधीन जीवन से मृत्यु कहीं हजार गुनी अच्छी है। धीरे–धीरे लोग उनके साथ जुडने लगे। सबने तन – मन – धन से देश की स्वतन्त्रता के लिए न्यौछावर होने की प्रतिज्ञा की। उन्हीं दिनों लाला हरदयाल, सूफी अम्बा प्रसाद और रासबिहारी बोस विदेशों में रहकर गदर पार्टी की गतिविधियों को तेजी से चला रहे थे। वे लोग चाहते थे कि अंग्रेजी हथियार छीन लिए जाएं और अंग्रेजों को मार डाला जाए।

पं. परमानन्द ने बम बनाने का नुस्खा हासिल किया और बम बनाने शुरू कर दिए। अंग्रेजी सरकार ने उन्हें कैद कर लिया और खतरनाक कैदी के रूप में अण्डमान जेल में बन्द कर दिया। वहां का क्रूर अंग्रेज जेलर बारी भारतीय कैदियों से कोल्हू चलवाता था और बेड़ी – हथकड़ी डालकर आठ – आठ घंटे खड़े रखता था। कोठरियां भी एकदम अंधेरी थी। कैदियों पर खूब अत्याचार किए जाते थे।

पंडित जी ने एक बार जेलर बारी को कुछ कठिनाई बताई, तो वह उन पर गुर्राने लगा। यह देख पंडित जी ने क्रांतिकारी आशुतोष लाहिड़ी को इशारा किया और जेलर बारी को उठाकर जमीन पर दे मारा। पंडित जी ने अपनी आयु के लगभग 34 वर्ष साम्राज्यवाद की जेलों में भीषण यातनाओं में बिताए, किन्तु कभी अंग्रेजों के आगे हार नहीं मानी। जिन दिनों पंडित जी सिंगापुर में कैद थे, उन दिनों वहां दो हिन्दुस्तानी रेजीमेण्ट तैनात थी। पंडित जी ने ऐलान किया कि 21 फरवरी, 1915 को 'क्रांति– दिवस' मनाया जाएगा। उन्होंने उस दिन अद्वितीय वक्तृत्व क्षमता का परिचय दिया, जिससे कैदियों की भुजाएँ फड़क उठी। उन्होंने गुलामी की जंजीरों को तोड़ फेंका। लगातार सात दिनों तक सिंगापुर पर इन गदर पार्टीवालों का राज रहा। बड़ी मुश्किल से रूसी, जापानी और अंग्रेजी जंगी जहाजों की सहायता से यह गदर दबाया गया।

"यह हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह यह अनुभव करे कि उसका देश स्वतंत्र है और उसकी स्वतंत्रता की रक्षा करना उसका कर्तव्य है। हर एक भारतीय को अब यह भूल जाना चाहिए कि वह एक राजपूत है, एक सिख या जाट है। उसे यह याद होना चाहिए कि वह एक भारतीय है और उसे इस देश में हर अधिकार है पर कुछ जिम्मेदारियां भी हैं।"

– सरदार वल्लभभाई पटेल

वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई

श्री रमाकांत, वरिष्ठ पर्यवेक्षक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय

भूमिका

भारत वर्ष में, अनेक महापुरूषों, विदुषी महिलाओं और वीरांगनाओं ने जन्म लेकर भारतीय वसुंधरा को गौरवान्वित किया है। भारत के इतिहास का जब हम अध्ययन करते हैं तो ज्ञात होता है कि देश के लिए बलिदान एवं अपने को समर्पित करने वाले पुरूषों के साथ–साथ अनेक महिलाओं ने भी जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया है। बलिदान, त्याग, समर्पण, साहस, पराक्रम, वीरता, निपुणता की प्रतिमूर्ति महिलाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में अपना लोहा मनवाया है। सती, सीता, सावित्री, अनसूया, मीराबाई, जीजाबाई, अहिल्याबाई, रानी पद्मिनी, रानी दुर्गावती, अंवतिका बाई, रानी चेन्नमा आदि महिलाओं के बलिदान, त्याग से भारत ही नहीं विश्व परिचित है। इन महिलाओं में से एक नाम झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई का आता है। भारत के इतिहास में जितना प्रभावशाली और प्रेरणादायी व्यक्तित्व झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का रहा है उतना शायद ही किसी अन्य महिला का रहा हो। लक्ष्मीबाई वीरता, कौशल, साहस, तथा पराक्रम प्रदर्शित करते हुए भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने अंतिम श्वास तक अंग्रेजों का मुकाबला करते हुए वीरगति को प्राप्ति हुई।

रानी लक्ष्मीबाई का जन्म एवं बाल्यावस्था

19 नवम्बर, 1834 को काशी में मोरोपंत तांबे और भगीरथी बाई नामक दंपत्ति के घर एक महामनोहर रूपवती कन्या–रत्न का बड़े शुभ मूहूर्त में जन्म हुआ। माता–पिता ने बड़े प्रेम से विधिपूर्वक उसका नामकरण–संस्कार कराकर उसका शुभ नाम मणिकार्णिका बाई रखा। अन्य लोग उसे प्यार से मनुबाई पुकारते थे। दोनों ने बड़े प्रेम वात्सल्य से उसका लालन–पालन आरंभ किया। इस अबोध अनुपम सुंदरी बालिका मनुबाई का यह प्रेममय, सुख–सौभाग्य अधिक समय तक नहीं रहा और अल्पायु में ही अपनी प्रेम एवं वात्सल्यमयी माता की गोदी से सदा के लिए वंचित हो गई। तत्पश्चात् मणिकार्णिका का लालन–पालन उसके पूज्यपिता मोरोपंत ने किया। मणिकार्णिका जन्म से कुशल और साहसी योद्धा थी और उसने बचपन में ही शिक्षा के साथ–साथ शास्त्रों की भी शिक्षा प्राप्त की।

'मणिकार्णिका छोटी सी आयु में ही साहस, निर्भयता, वीरता आदि गुण भी धीरे–धीरे से उत्पन्न होने लगे। वह पढ़ने लिखने के साथ ही साथ अस्त्र–शस्त्र आदि चलाना सीखने लगी। मनु को गुड्डे–गुड़ियों से खेलना पसंद नहीं था। अन्य लड़कियों के विपरीत वह निडर और दुस्साहसी थी। शारीरिक गठन और बुद्धिलब्धि में भी वह अपनी उम्र में बच्चों से कहीं आगे थी। हार मानना उसने सीखा ही नहीं था। कठिन से कठिन समस्या का समाधान भी वह अपने साहस और वीरता से खोजती थी। शिवाजी और अन्य बहादुर योद्धाओं की कहानियां सुनना मनु को बहुत भाता था। शिवाजी जी की भांति वह भी देश की स्वतंत्रता का सपना संजोने लगी।'

रानी लक्ष्मीबाई का वैवाहिक जीवन

मणिकार्णिका यौवनावस्था के समीप पहुंचती जा रही थी। उसके पिता को इसके लिए योग्य वर खोजने की चिंता दिनोंदिन बढ़ती जा रही थी। भगवान की अपार लीला से एक दिन झांसी राज्य के ज्योतिष विद्या विशारद पेशवा बाजीराव जी से मिलने के लिए आ पहुंचे। अपनी मातृहीन सुपुत्री के लिए एक सुयोग्य वर खोजने में उनसे सहायता मांगी। राज–ज्योतिषी जी के प्रयत्न से कन्या मनुबाई का विवाह सन् 1842 में झांसी नरेश श्री गंगाधर राव जी से हो गया। *'विवाह के समय गंगाधर की उम्र चालीस साल और लक्ष्मी बाई की चौदह साल थी। बचपन के नाम मनु के साथ–साथ उन्हें बिठूर से अपने तमाम संबंधों को भी छोड़ना पड़ा। अब वह झांसी की रानी लक्ष्मीबाई बन गई थी।'*

लक्ष्मीबाई का विवाह गंगाधर राव से हो जाने के पश्चात्, उसके पिता तथा अन्य संबंधी झांसी में आकर रहने लगे। मोरोपंत को दरबार में एक सरदार की पदवी दी गई। गंगाधर राव एक अच्छी योग्यता वाले और प्रजा हितैषी शासक थे। उन्होंने सर्वसाधारण की भलाई के लिए अनेक कार्य किए। सबके साथ दयालु व्यवहार करने के कारण प्रजा उनको 'काका' कहकर पुकारती थी। विवाह के 8 वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी कोई संतान नहीं हुई तो पुत्र प्राप्ति के लिए उनका ध्यान धार्मिक कार्यों की ओर गया क्योंकि वह देख रहे थे कि निस्तांन राजाओं के राज्यों पर अंग्रेज सरकार किस प्रकार अधिकार जमाती है। सन् 1850 में वे तीर्थ यात्रा के लिए निकले। सबसे पहले काशी गए और फिर गया, प्रयाग आदि की तीर्थ यात्रा की। वहां पर खूब दान पुण्य किया। *'महाराजा और महारानी की इस तीर्थ यात्रा से वापसी पर उनकी राजधानी में खूब धूम–धाम मची। यज्ञ किए गए। लोगों में पुरस्कार–परितोषिक और दान–दक्षिण भी खूब बांटी गई। नगरी दुलहिन के समान सजाई गई और समस्त सेना तथा मंत्रियों और अन्य कर्मचारियों को हाथियों, घोड़ों और दूसरी सवारियों में बिठाकर, महाराजा साहब तथा महारानी के पीछे–पीछे जुलूस निकाला गया।'* कुछ दिनों के बाद महारानी ने गर्भधारण किया और 1851 में उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया। पुत्र होने पर सबको अत्यंत प्रसन्नता हुई और एक महीने तक नगर में बड़ी खुशियां मनाई गई। पर विधि का विधान कुछ और ही था। बालक का तीन माह की अल्प आयु में देहावसान हो गया। पुत्र के देहावसान होने पर गंगाधर राव इतना मानसिक कष्ट हुआ कि वे बीमार पड़ गए। सुप्रसिद्ध वैध, हकीम और डॉक्टरों के इलाज से भी उनके स्वास्थ में कोई सुधार नहीं हुआ और वह परलोक सिधार गए।

उनके दत्तक पुत्र दामोदर राव को रानी लक्ष्मीबाई की संरक्षकता में झांसी राज्य का अधिकारी बनाने का प्रश्न उठा। उस समय देश में लार्ड डलहौजी का शासन चल रहा था। राज्य हड़प नीति के तहत, एक–एक करके कितने ही राज्यों को अंग्रेजी शासन में मिला लिया था। अंग्रेजी अधिकारियों ने यह निश्चय कर लिया था कि किसी भी राजा के निस्संतान मर जाने पर उसको दत्तक लेने का अधिकार न दिया जाये और उसका राज्य कंपनी शासन में मिला लिया जाए। गंगाधर राव के मरते ही मेजर एलिस ने तुरंत ही झाँसी के खजाने में ताला लगा दिया और गवर्नर जनरल की आज्ञा की प्रतीक्षा में राज्य का पूरा प्रबंध अपने हाथ में ले लिया। यह देखकर रानी लक्ष्मीबाई ने सरकार के पास एक और खत भेजा, जिसमें झाँसी के राजवंश और अंग्रेजी सरकार के बीच प्राचीन मित्रता का उल्लेख करते हुए दामोदर राव को राज्य का अधिकारी स्वीकृत किए जाने की प्रार्थना की गई थी।

लार्ड डलहौजी ने यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया और एक घोषणा द्वारा झांसी राज्य को ब्रिटिश शासन में मिला लेने की आज्ञा दे दी। उन्होंने निर्णय किया कि झांसी का राज्य स्वतंत्र नहीं है वरन् पारितोषिक के रूप में जागीर की तरह दिया गया था। जब अंग्रेज रेजीडेंट ने गवर्नर जनरल की इस घोषणा को रानी

लक्ष्मीबाई को पढ़कर सुनाया तो लक्ष्मीबाई ने इस आज्ञा का बहुत विरोध किया और उन्होंने उमेश चंद्र बनर्जी नामक हिंदुस्तानी वकील तथा एक यूरोपियन वकील को 60 हजार रुपए खर्च करके कंपनी के 'बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर्स' के पास अपील करने लंदन भेजा। पर उसका भी कोई नतीजा नहीं निकला।

झांसी का युद्ध

सर ह्यरोज रोज और सर राबर्ट हैमिल्टन के नेतृत्व में एक सुदृढ़ सेना महू (इंदौर) की छावनी से रवाना हुई और सिहोर, रोहतासगढ़, बरोदिया, सागर, सनोडा, गढ़ाकोटा, मदनपुर आदि स्थानों में विद्रोहियों को अधीन करती हुई झांसी से 14 मील के फासले पर चंचनपुर नामक स्थान में पहुँचकर उन्होंने अपना कैंप लगाया। प्रातःकाल ही सर यूरोज अपनी सेना सहित झांसी के समीप पहुंच गए। उनके सिपाहियों की संख्या तो कम थी, पर वे नए हथियारों से सुसज्जित, अनुभवी और अनुशासित थे। इधर रानी ने भी उनका मुकाबला करने की जोरदार तैयारियां की थीं। झांसी का किला एक छोटी पहाड़ी पर बना हुआ बहुत मजबूत था। उसकी पत्थर और चूने से बनी दीवारों की मोटाई 16 से 20 फुट थी। बीच–बीच में तोपों के रखने के लिए बुर्ज बने हैं। उसके चारों तरफ तोपें लगी हुई थीं। शहर के चारों ओर भी एक मजबूत परकोटा था, जिसमें 5 बड़े फाटक थे और जगह–जगह पर बुर्ज भी बने थे जिन पर तोपें रखी थीं। झांसी का युद्ध आरंभ हुआ और 13 दिन तक रानी अंग्रेजी सेना का डटकर मुकाबला करती रहीं। वह प्राणों की ममता त्यागकर निर्भयता से युद्ध कर रही थीं। वह प्रत्येक महत्त्वपूर्ण स्थान पर स्वयं पहुंचकर युद्ध का संचालन करती और सिपाहियों को शाबाशी और प्रेरणा देकर उनके उत्साह को बढ़ाती रहती थीं। रानी ने अपनी सहायता के लिए नाना साहब के सेनाध्यक्ष तात्या टोपे को बुलाया। सर ह्यूरोज ने अपना हमला तेज किया और किले की दीवार कई जगह से टूट गई अब अंग्रेजी सेना ने किले पर अंतिम धावा बोला और टूटी हुई दीवार पर सीढ़ियां लगाकर चढ़ने का प्रयत्न किया।

रानी की सेना ने इनका अंतिम सांस तक इनका प्रतिरोध किया और इस अवसर पर जैसा विकट संग्राम हुआ, वह अद्‌भुत ही था। इस समय रानी की वीरता को देखकर समस्त झांसी अंग्रेजी सेना की विरोधी बनी थी और जनता के हजारों पुरुष, स्त्री बच्चे भी किसी न किसी तरह इस संघर्ष में रानी का साथ दे रहे थे। पर किले और महल दोनों पर शत्रु का अधिकार हो गया तो सरदारों और मंत्रियों की सलाह से यह तय किया गया कि अब कालपी पहुँचकर अन्य विद्रोहियों के साथ मिलकर अंग्रेजों का मुकाबला किया जाए। दो सौ सिपाहियों को साथ लेकर रानी उत्तरी दरवाजे से बाहर निकलीं और कालपी की तरफ चल दी।

इस तरफ अंग्रेज ठीक तरह नाकेबंदी नहीं कर पाए थे। रानी ने इस समय मर्दाना पोशाक पहन रखी थीं। शरीर पर अंगरखा, पैरों में पाजामा, सिर पर साफा, कमर में तलवार धारण कर अपने सफेद घोड़े पर सवार वह एक नवयुवक की तरह ही जान पड़ती थीं। अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव को उन्होंने अपनी पीठ पर पटके से बांध रखा था। जब अंग्रेज अधिकारियों को रानी के बाहर निकल जाने का पता लगा तो उन्होंने कुछ सवार कप्तान वॉकर के नेतृत्व में उन्हें पकड़ने को भेजे। झाँसी से 21 मील की दूरी पर भांडेर के पास वॉकर रानी के पास पहुंचा। रानी ने उससे भयंकर युद्ध करते हुए उसे धराशायी कर दिया।

जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वाकर आ पहुंचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद असमानों में,
ज़ख्मी होकर वाकर भागा, उसे अजब हैरानी थी।

नाना साहब के भतीजे राव साहब, तात्या टोपे, बाँदा के नवाब आदि सब वहीं पर एकत्रित थे। वे सब रानी को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और सब मिलकर अंग्रेजों से

लड़ने की योजना बनाने लगे। वानपुर, शाहगढ़, जिगनी आदि के राजा भी अपनी सेनाएं लेकर कालपी आ गए और उस समय वह विद्रोहियों का सबसे बड़ा केंद्र बन गया।

रानी के कालपी चले जाने पर झांसी नगर में अंग्रेज सैनिकों ने लूटमार आरंभ कर दी। जो नागरिक दिखाई पड़ जाता उसे मार दिया जाता और घरों में आग लगा दी जाती। महल में से तमाम कीमती वस्तुएं और आभूषण लूट लिए गए। राजकीय पुस्तकालय को भी जला दिया गया। इस पुस्तकालय में बहुत–से हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ दूर–दूर से इकट्ठे किए गए थे, उन सबको अविवेकी सैनिकों ने कुछ ही घंटों में भस्म कर दिया। उन्होंने प्रजा के घरों को भी मनमाना लूटा। सात दिन तक वह इस तरह लूटमार होने के पश्चात् फौज को नगर से हटा दिया गया। इस नरसंहार में हजारों निर्दोष नागरिक जान से मारे गए और घायल हुए। कालपी में विद्रोहियों के एकत्रित होने के समाचार जानकर सर ह्यूरोज भी उस पर आक्रमण की तैयारी करने लगे।

उन्होंने अपनी सेना को पुनः संगठित किया। लड़ाई का नया सामान मंगाया और कालपी से 6 मील के फासले पर गुलौली गांव में जा पहुँचे। जमुना के ऊबड़–खाबड़ कगारों पर बना यह किला प्राकृतिक रूप से ही बहुत सुरक्षित था। किले के भीतर सब प्रकार के अस्त्र–शस्त्रों तथा गोला–बारूद का विशाल भंडार था और यहीं से आस–पास के समस्त विद्रोही केंद्रों को युद्ध–सामग्री भेजी जाती थी। उसके भीतर तोप और बंदूक ढालने का कारखाना भी था और उसकी मरम्मत के सब औजार इकट्ठे किए गए थे। खाद्य सामग्री का एक बड़ा गोदाम भी यहीं पर था।

कालपी से इस महत्त्व को अंग्रेज अधिकारी और विद्रोही नेता दोनों ही अच्छी तरह जानते थे। इसलिए राव साहब ने इसकी रक्षा के लिए चारों तरफ विभिन्न सेना दलों को नियुक्त किया था। एक ओर की सेना के अध्यक्ष बांदा के नवाब थे तो दूसरी ओर बरेली से आई हुई रुहेलों की पलटन थी, तीसरी ओर 'बंगाल नेटिव इन्फेंटरी' की विद्रोही सेना को रखा गया था। लक्ष्मीबाई को जब अपनी फौज की पराजय का हाल मालूम हुआ तो वह अपनी लाल वर्दी–सेना के साथ युद्धभूमि की तरफ झपटीं और अंग्रेजी फौज पर बंगाल की तरफ से हमला किया। उसकी मार से अंग्रेजी सेना में हलचल मच गई। रानी स्वयं घोड़े की लगाम दाँतों के बीच दबाए दोनों हाथों से तलवार चलाकर शत्रुओं का सफाया कर रही थीं। उनकी अभूतपूर्व वीरता को देखकर पीछे हटने वाली विद्रोही सेना को अपनी निर्बलता पर लज्जा आई और वे दुगने जोश से अंग्रेजी सेना पर टूट पड़े। अंग्रेजी सेना को संकट में देखकर सर यूराज और ब्रिगेडियर स्टुअर्ट ने ऊंट पर सवार फौज के एक दल को साथ लेकर कालपी की फौज पर भयंकर आक्रमण किया।

रानी लक्ष्मीबाई ने कालपी आते ही राव साहब से कहा था कि बिना सुव्यवस्था और ठीक इंतजाम से हमारी जीत कभी नहीं हो सकती। राव साहब ने रानी की सलाह की सराहना की और सेना को कई भागों में बांटकर अलग–अलग उनकी जिम्मेदारी नियत की। पर वे स्वयं इस संबंध में अनुभवहीन थे और फिर भी राजा–रईसों के लड़कों की तरह अपनी योग्यता को बहुत अधिक समझते थे। इसी झूठे अहंकार के कारण वे एकाध जगह थोड़ी सफलता मिलते ही फूल जाते थे और पेशवाई के सपने देखने लगते थे। ग्वालियर का तोपखाना प्रसिद्ध फ्रांसीसी सेनाध्यक्षों की देख–रेख में बनाया और संगठित किया गया था। उसकी शक्ति अब भी पर्याप्त थी। उसकी मार के सामने आरंभ में राव साहब की सेना के पैर उखड़ने लगे। यह देखकर रानी लक्ष्मीबाई ने एक सेना–दल को लेकर ग्वालियर की सेना पर धावा किया और उसकी हिम्मत को तोड़ दिया।

अब राव साहब, लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे आदि का ग्वालियर पर सहज में अधिकार हो गया। वहाँ की सेना और सैन्य सामग्री विद्रोही दल को मिल गई। राव साहब ने फूलबाग में बड़ी शान से दरबार किया, जिसमें सब सरदारों ने उनको पेशवा स्वीकार करके ताजीम की। लक्ष्मीबाई ने उनको समझाया कि अब जब ग्वालियर राज्य के साधन प्राप्त हो गए हैं तो सब काम छोड़कर उन सबका उपयोग अपनी रक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने में करना चाहिए क्योंकि अंग्रेज अधिकारी चुपचाप नहीं बैठे रहेंगे। वे शीघ्र ही हम पर हमला करेंगे और हम उनका मुकाबला तभी कर सकेंगे जब हर तरह से तैयार रहें। इस सलाह को सुनकर भी उन्होंने उस पर कुछ अमल नहीं किया।

सर यूरोज की सेना मोरार के निकट आ पहुंची। एक विद्रोही सैन्यदल उसका मुकाबला करने को भेजा गया, पर वह दो ही घंटे में परास्त हो गया। ग्वालियर के विद्रोही सेना के कुछ अफसर रंग बदला देखकर फिर अंग्रेजों से जा मिले। यह दशा देखकर रानी जीवन–मरण का ध्यान छोड़कर रणक्षेत्र में कूद पड़ीं। ग्वालियर से 5 मील फासले पर 'कोटा की सराय' नामक स्थान पर भीषण संग्राम हुआ। रानी अपनी सेना की व्यूह–रचना बड़ी चतुरता से की थी और वह मर्दाने वेश में घोड़े पर सवार होकर स्वयं ही उसका नेतृत्व कर रही थीं। 17 जून को सुबह ही युद्ध का बिगुल बजा और घमासान युद्ध होने लगा। रानी की अलौकिक वीरता और शस्त्र–संचालन की कला को देखकर सब हतप्रभ थे।

'वह शत्रु दल की अग्निवर्षा की भी चिन्ता न करके अपनी वीर सेना सहित बराबर आगे बढ़ती चली गई। अंततः उनकी वीर सेना 'हर हर महादेव' के जयकारे लगाती हुई शत्रु दल से जा भिड़ी। कर्नल स्मिथ के वीरदल में महारानी के इस प्रबल आक्रमण को रोकने का बहुतेरा प्रयत्न किया, किंतु आंधी तथा वर्षा–वेग (तूफान) में कौन सफल–मनोरथ हो सका है! महारानी जी ने जिधर भी मुंह फेरा, पूरे दस्ते साफ कर दिए। उनकी इस शानदार तथा असाधारण वीरता से प्रभावित होकर उनकी वीर सेना के रणवीरों ने भी वह मारा–मार की कि रिपुदल के छक्के छूट गए।'

रानी का घोड़ा भी कई गोलियां लगने से भाग खड़ा हुआ। भागता हुआ वह एक सूखे नाले के किनारे जा पहुंचा और उसे फाँदने की कोशिश करते हुए पैर फिसल जाने से गिर गया। एक सवार जो पीछा कर रहा था, शीघ्रतापूर्वक पहुंचकर रानी पर तलवार का वार किया, जिससे चेहरे का आधा भाग कट गया। फिर भी उन्होंने साहस न छोड़ा और पीछे फिरकर एक ऐसा हाथ मारा कि वह भी उसी जगह गिरकर मर गया। रानी के घावों से बहुत खून बह रहा था और उनका शरीर बराबर शिथिल होता जाता था। यह देख उनका एक सरदार उनको उठाकर पास ही बनी एक झोंपड़ी में ले गया। उसमें बाबा गंगादास नाम के साधु रहते थे। रानी को प्यास लगी तो बाबाजी ने उन्हें 'गंगाजल' पीने को दिया। कुछ देर बाद वह वीरगति को प्राप्त हो गईं।

रानी गई सिधार चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

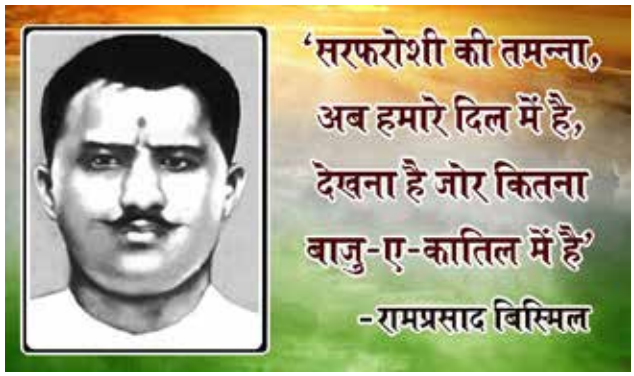

एक विश्व-एक स्वास्थ्य के लक्ष्य में भारत की भूमिका

अभिषेक कुमार मिश्र, प्रबंधक (भूविज्ञान)
अभियांत्रिकी भू–विज्ञान व भूतकनीकी विभाग, निगम मुख्यालय

इन दिनों सम्पूर्ण देश में आजादी की 75वीं वर्षगांठ को समर्पित 'अमृत महोत्सव' मनाया जा रहा है। इस उत्सव का प्रारंभ आजादी की 75वीं वर्षगांठ से 75 माह पूर्व 12 मार्च, 2021 से आरंभ हुआ जो 15 अगस्त, 2023 तक जारी रहेगा। इस पूरी अवधि में इस अमृत महोत्सव के तहत वर्तमान पीढ़ी को आजादी की लड़ाई से जुड़े सेनानियों, उनके त्याग, उनके समर्पण, उनके बलिदान और कई जानी–अनजानी व भूला दी गई कहानियों को याद करने का अवसर मिलेगा। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के अनुसार यह उत्सव स्वाधीनता की परछाई है। उन्होंने इसे वैश्विक शांति और विकास का उत्सव भी करार दिया है।

देश की वर्तमान और भविष्य की राह राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रभामंडल से अछूती नहीं रह सकती। इस आयोजन के साथ भी ऐसा ही है। इस आयोजन की शुरुआत उसी तिथि से हुई है जिस दिन वर्ष 1930 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में दांडी यात्रा की शुरुआत हुई थी। इस महोत्सव का आरंभ साबरमती आश्रम से एक पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर किया गया। इस पदयात्रा में 81 लोग शामिल हुए जिन्होंने 241 मील यानी 386 किलोमीटर की यात्रा संपन्न की। इसमें समाज के सभी वर्ग के लोगों ने हिस्सा लिया।

यह भी एक सच्चाई है कि इतना बड़ा आयोजन इस देश में कोरोना महामारी की पृष्ठभूमि में आयोजित हो रहा है। दो वर्षों से यह महामारी विभिन्न उतार–चढ़ाव का प्रदर्शन करते हुए जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित कर रही है और आने वाले समय में भी, विशेषज्ञों की माने तो, यह हमारे बीच अपनी उपस्थिति बनाए रखेगी। स्वास्थ्य सेवा और विज्ञान के स्तर पर इस बीमारी के विभिन्न आयामों को समझने व इससे उबरने के प्रयास तो चल ही रहे हैं किंतु विगत अनुभवों ने यह समझाया है कि इससे सुरक्षित रहने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर भी सतर्कता बनाए रखने और जागरूक बने रहने की भी अत्यंत आवश्यकता है। पिछले अनुभवों ने सिखाया है कि इस महामारी से उबरने में व्यक्तिगत इम्यूनिटी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारी पारंपरिक चिकित्सा पद्धति में भी उपचार से ज्यादा बचाव पर ही जोर देने की सलाह दी जाती रही है। आज इस संदर्भ में सभी को सजग होने की आवश्यकता है। इस दिशा में हम महात्मा गांधी के विचारों से भी प्रेरणा ले सकते हैं।

गांधी जी मानते थे कि असल में शरीर संसार का एक छोटा सा नमूना है। शरीर के स्वस्थ होने का यह भी मतलब है कि मनुष्य की इंद्रियां और मन भी स्वस्थ हैं। शरीर से अपना और दूसरे का भला किया जा सकता है पर इसका दुरुपयोग करें तो यह अपने लिए भी बुराई का कारण बनता है और दूसरों का भी काम बिगाड़ता है।

बीमारी के प्रति उनकी राय थी कि बीमारी प्रकृति के नियमों को अज्ञानतावश या जानबूझकर भंग करने से पैदा होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि अगर हम समय रहते फिर उन नियमों का पालन करने लगें तो पुनः स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं। जिस व्यक्ति ने प्रकृति का लंबे समय तक निरंतर उल्लंघन किया है, उसे या तो प्रकृति द्वारा दिए गए दंड को भोगना होगा या उससे बचने के लिए आवश्यकतानुसार चिकित्सक की सहायता लेनी होगी।

स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए जो आवश्यक चीजें हैं– उनमें आहार, सफाई, व्यायाम आदि महत्वपूर्ण हैं। गांधी जी ने इनके लिए भी समय–समय पर अपने विचार रखे हैं। उनका मानना था कि आहार शरीर के लिए है न कि शरीर आहार के लिए। अतः भोजन सात्विक और सादा होना चाहिए। यदि आहार संतुलित और विवेकपूर्ण हो तो शरीर में कोई रोग हो ही नहीं सकता। यदि आहार में विवेक नहीं रहा तो मनुष्य और पशु में अंतर ही क्या है?

आहार के साथ स्वच्छता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। इस दिशा में प्रधानमंत्री महोदय भी सरकार में आने के बाद से स्वच्छता अभियान पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। इसके बावजूद हमारी आदतों में ज्यादा परिवर्तन होता दिख नहीं रहा। ऐसे में कोरोना महामारी ने भी हमारी आदतों का लाभ उठाकर अपना प्रसार काफी तीव्र गति से किया। यह भी एक सबक है कि हमें अपने सफाई संबंधी आचरण में आमूलचूल सुधार की आवश्यकता है। गांधी जी कहते थे कि अपना शरीर, भोजन, पानी ही नहीं आसपास के स्थानों को भी सदा स्वच्छ रखो। सफाई सुसंस्कृत मनुष्य की रूचि का परिचायक है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए अपने शरीर पर ध्यान देना भी आवश्यक है। योग और व्यायाम आदि इसके मुख्य साधन हैं। गांधी जी कहते थे कि व्यायाम शक्ति के अनुसार करना चाहिए। अधेड़ों और वृद्धों को प्रतिदिन और कुछ नहीं तो टहलने का व्यायाम तो करना ही चाहिए। क्योंकि व्यायाम भी शरीर के लिए उतना ही आवश्यक है जितना कि हवा, पानी और भोजन।

पिछले कुछ समय में हम लोगों ने विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों पर भी काफी मतभिन्नता देखी। गांधी जी प्राकृतिक चिकित्सा में काफी विश्वास किया करते थे। वह मानते थे कि मनुष्य को दवाइयां लेने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं पड़नी चाहिए। अधिकांश मामले नियमित आहार, पानी तथा मिट्टी के उपचार और इसी तरह के घरेलू उपाय से ठीक किए जा सकते हैं। उन्होंने कहा था कि मेरी धारणा है कि जहां स्वच्छता के निजी, घरेलू और सार्वजनिक नियमों का कठोरता से पालन किया जाता है और आहार तथा व्यायाम के संबंध में उचित सावधानी बरती जाती है वहां बीमारी का कोई भय नहीं होना चाहिए। जहां पूर्ण आंतरिक और बाह्य शुचिता है, वहां बीमारी पास नहीं फटक सकती। अगर गांव के लोग इस बात को समझ जाएं तो उन्हें डॉक्टरों, हकीमों या वैद्यों की जरूरत नहीं पड़ेगी...

गांधी जी के अनुसार प्राकृतिक चिकित्सा का सार यह है कि हम स्वास्थ्य–रक्षा और स्वच्छता के नियमों को समझें और उनका तथा उचित पोषण से संबंधित नियमों का पालन करें।

भारत जैसे विशाल आबादी के देश में स्वास्थ्य की विश्वस्तरीय सुविधा सहज नहीं। ऐसे में हमें बीमारी के इलाज नहीं बीमारी से बचाव की तकनीक पर काम करना चाहिए। कोरोना हो अथवा कोई भी वर्तमान अथवा भावी बीमारी हमारा प्रयास उस बीमारी से बचने का ही होना चाहिए। कोविड के अनुभवों ने हमें सिखा दिया है कि इलाज से पूर्व सोशल डिस्टेंसिंग, मास्क का प्रयोग, हाथों की सफाई, हैंड सैनिटाइजर का उपयोग आदि छोटी–छोटी चीजें हैं जिनके प्रति हम सजग और सतर्क रहकर इसकी संभावना से खुद को काफी हद तक बचा सकते हैं। हमें इन चीजों को अपनी आदतों में शामिल कर लेना होगा। जैसा कि विशेषज्ञ कह रहे हैं किसी न किसी रूप में यह रोग अब हमारे आसपास बना ही रहेगा ऐसे में हमारे जीवन में ये आदतें भी बनी रहनी चाहिए।

पिछले दिनों प्रधानमंत्री ने 'वन वर्ल्ड वन हेल्थ' (एक विश्व एक स्वास्थ्य) के रूप में एक सिद्धांत का जिक्र किया था। यह संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य और कृषि संगठन तथा विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन की उसी संयुक्त पहल की कड़ी में है जिसमें पर्यावरण, पशु तथा मानव स्वास्थ्य के अंतरसंबंधों को शामिल कर पारिस्थितिकी तंत्र से उत्पन्न खतरों का सामना करने के

लिए बहुआयामी उपाय शामिल किया जाना है। इसका उद्देश्य मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य, मिट्टी, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र जैसे विभिन्न विषयों के ज्ञान को कई स्तरों पर साझा करने के लिए प्रोत्साहित करना है, जो सभी प्रजातियों के स्वास्थ्य में सुधार, रक्षा और बचाव के लिए जरूरी है। यह महामारी को रोकने एवं पारिस्थितिकी तंत्र की अक्षुण्णता को बढ़ाने के दृष्टिकोण पर आधारित है।

वन्य जीव संरक्षण सोसायटी ने मैनहट्टन सिद्धांतों की 12 सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2007 में ही 'एक विश्व–एक स्वास्थ्य' के सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। यह सिद्धांत कोविड–19 महामारी के संदर्भ में आज और प्रासंगिक हो गया है। हाल के वर्षों में वायरस के प्रकोपों जैसे कि निपाह वायरस, इबोला, सिवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम, मिडिल ईस्ट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम और एवियन इन्फ्लुएंजा का संक्रमण यह अध्ययन करने पर मज़बूर करता है कि हम पर्यावरण, पशु एवं मानव स्वास्थ्य के अंतरसंबंधों की जांच करें और समझें।

भारत की पहल पर ही 21 जून को 'अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस' घोषित किया गया है। समय की आवश्यकता है कि योग और ध्यान को हम अपनी जीवनशैली का अंग बनाएँ। वैश्विक आपदा और तनाव, दबाव आदि से भरे इस दौर में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर एक साथ ध्यान देना भी जरूरी है। बदलती परिस्थितियों में ऑनलाइन इससे संबंधित कई कोर्स आरंभ किए गए हैं। उदाहरण के लिए आर्ट ऑफ लिविंग जैसी संस्था आधुनिक परिस्थितियों के अनुकूल कई योग व ध्यान पाठ्यक्रम तैयार उपलब्ध करा रही है, जिससे अपनी पसंद और सुविधानुसार सहायता ली जा सकती है। ऑनलाइन माध्यम पर उपलब्ध होने के कारण भारत की इस मेधा से पूरे विश्व के लोग लाभान्वित हो सकते हैं।

भारत ने अभी जिस तरह कोरोना की दूसरी लहर का सामना किया है और तीसरी लहर का गमन हो गया है इसे देखते हुए भारत को वन हेल्थ सिद्धांत के प्रति जागरूकता बढ़ानी चाहिए और लोगों को अपने ही नहीं बल्कि सामूहिक स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के प्रयासों के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए। बदलती वैश्विक परिस्थितियों को देखते हुए एक वैश्विक नागरिक के रूप में देश को और हम सभी नागरिकों को अपनी भूमिका समझने और निभाने की जरूरत है।

कोरोना बाद की परिस्थितियों को लेकर प्रधानमंत्री महोदय ने संसद में कहा था "कोविड के बाद एक नई विश्व व्यवस्था नजर आ रही है। इस दौरान दुनिया में संबंधों का नया वातावरण तैयार होगा।.... कोरोना के बाद जो नई विश्व व्यवस्था तैयार होगी उससे भारत अलग नहीं रह सकता है। भारत एक कोने में गुजारा नहीं कर सकता है। हमें भी एक मजबूत खिलाड़ी की तरह उभरना होगा। नई विश्व व्यवस्था में भारत को अपनी जगह बनाने के लिए सशक्त और समर्थ होना पड़ेगा और उसका रास्ता आत्मनिर्भर भारत है।"

वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों के अनुकूल अपनी सहभागिता सुनिश्चित करते हुए देश को एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाने का प्रयास करना सम्पूर्ण देशवासियों का सम्मिलित लक्ष्य होना चाहिए।

देश हित के लिए अन्य त्यागों के साथ जन प्रियता का त्याग करना सबसे बड़ा और ऊँचा आदर्श है, क्योंकि - 'वरं जनहितं ध्येयं केवला न जनस्तुतिः' यह उपयुक्त ही कहा गया है।

- वीर सावरकर

राजभाषा कार्यान्वयन उपलब्धियां (2021-22)

निगम में भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए पूरी निष्ठा से प्रयास करते हुए कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा के उत्तरोत्तर प्रयोग को बढ़ावा दिया गया है।

निगम मुख्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया गया। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2021–22 की प्रथम बैठक दिनांक 21.06.2021, दूसरी बैठक दिनांक 23.09.2021 को तीसरी तिमाही बैठक 23.12.2021 को और चौथी तिमाही बैठक का आयोजन 25.03.2022 को श्री अभय कुमार सिंह, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय की अध्यक्षता में किया गया। इन बैठकों में सभी निदेशकगण और निगम मुख्यालय के सभी विभागाध्यक्ष तथा विभिन्न परियोजनाओं/ पावर स्टेशनों/ कार्यालयों के प्रभारी उपस्थित हुए। इस अवधि में कोविड–19 महामारी के कारण, केंद्र सरकार द्वारा जारी मानक प्रचालन प्रक्रिया के अंतर्गत सभी बैठकें वीडियो काफ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित की गई।

निगम में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए 10 राजभाषा प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई हैं। इन प्रोत्साहन योजनाओं के तहत वर्ष भर कार्मिकों को पुरस्कृत किया जाता है। वर्ष 2021–22 के लिए राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत निगम मुख्यालय के 12 विभागों सहित 11 परियोजनाओं/पावर स्टेशनों/ कार्यालयों को राजभाषा शील्ड तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

वर्ष 2021–22 के दौरान पत्रिका के प्रकाशन में जाने तक, निगम मुख्यालय में कुल 12 हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में प्रतिभागियों को हिंदी में कार्यालयीन कार्य कंप्यूटर द्वारा करने के साथ–साथ राजभाषा नीति और कार्यान्वयन पर भी प्रशिक्षित किया गया।

'आजादी के अमृत महोत्सव' कार्यक्रम के अंतर्गत तथा निगम में हिंदी के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से 24 फरवरी, 2022 को एनएचपीसी कार्यालय परिसर, फरीदाबाद के जल तरंग सभागार में हिंदी कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन का शुभारंभ श्री अभय कुमार सिंह, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय ने भारतीय परम्परा के अनुसार दीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस अवसर पर श्री वाई.के. चौबे, निदेशक (तकनीकी), श्री आर.पी. गोयल, निदेशक (वित्त), श्री बिश्वजीत बासु, निदेशक (परियोजनाएं) और श्री ए.के. श्रीवास्तव मुख्य सतर्कता अधिकारी विशेष रूप से उपस्थित थे। इस सम्मेलन में देश के प्रख्यात 06 कवियों को आमंत्रित किया गया था, जिन्होंने अपनी रचनाओं के पाठ से सम्मेलन में उपस्थित कार्मिकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

राजभाषा हिंदी के प्रति अपने निष्ठापूर्वक प्रयासों के अंतर्गत एनएचपीसी लिमिटेड के नए लोगो का अनावरण दिनांक 24.02.2022 को श्री अभय कुमार सिंह, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय के कर कमलों से किया गया। इस अवसर पर निदेशकगण और मुख्य सतर्कता अधिकारी विशेष रूप से उपस्थित थे। निगम के नए लोगो में हिंदी के अक्षरों के साइज को और अधिक बढ़ा दिया गया है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार और के प्रति कार्मिकों की रूचि जागृत करने के उद्देश्य से प्रतिदिन ऑनलाइन हिंदी प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता को इंट्रानेट के माध्यम से प्रति कार्य दिवस पर प्रदर्शित किया जाता है और कार्मिक अपनी सीट से इस

प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। प्रतिमाह सबसे अधिक सही उत्तर सबसे कम समय में देने वाले सफल प्रतिभागी को प्रशस्ति पत्र के साथ पुरस्कार राशि भी दी जाती है।

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति ने 24 से 28 अक्तूबर, 2021 की अवधि में गंगटोक, दार्जिलिंग और सिलीगुड़ी स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया। इस निरीक्षण कार्यक्रम में निगम के सिक्किम में स्थित तीस्ता–V पावर स्टेशन का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया।

इसके अलावा दिनांक 04.03.2022 को माननीय संसदीय समिति ने निगम मुख्यालय का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया। माननीय संसदीय समिति ने निगम में समग्र रूप से किए जा रहे हिंदी प्रयोग की स्थिति की सराहना की।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लिए दिनांक 04 से 08 अक्तूबर, 2021 तक 05 हिंदी प्रतियोगिताओं का ऑनलाइन आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में विभिन्न सदस्य कार्यालयों के 292 कार्मिकों ने भाग लिया तथा 32 विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), फरीदाबाद की वर्ष 2021 की दूसरी छमाही बैठक 28.10.2021 को वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित की गई। इस बैठक में नराकास (का.), फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों के प्रमुख भी वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से उपस्थित हुए। इस ई–बैठक में नराकास, फरीदाबाद के सभी 52 सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों और वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

नगर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), फरीदाबाद की हिंदी पत्रिका 'नगर सौरभ' के 12वें अंक, वर्ष 2021 का प्रकाशन किया गया। इस अंक का विमोचन दिनांक 28.10.2021 को आयोजित नराकास (का.), फरीदाबाद की बैठक में किया गया।

'आजादी के अमृत महोत्सव' के अंतर्गत निगम में दिनांक 13 से 17 दिसंबर, 2021 तक 'हिंदी पुस्तक पठन सप्ताह' का आयोजन किया गया। इस दौरान भारतीय संस्कृति और इतिहास की पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई तथा राष्ट्रभक्ति कविता पाठ कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।

'आजादी के अमृत महोत्सव' कार्यक्रम के अंतर्गत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लिए दिनांक 28.12.2021 को 'आत्म निर्भर भारत–स्वस्थ भारत' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया जिसमें नराकास, फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों के 100 से अधिक कार्मिकों ने भाग लिया।

कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के प्रति कार्मिकों में अभिरुचि पैदा करने के उद्देश्य से दिनांक 25.12.2021 को 'सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी का प्रयोग समस्याएं एवं समाधन' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों ने उत्साह से भाग लिया।

इस दौरान निगम मुख्यालय के सभी विभागों तथा विभिन्न पावर स्टेशनों/ परियोजनाओं/ कार्यालयों का राजभाषा ई–निरीक्षण वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक के साथ–साथ निदेशकगणों तथा महाप्रबंधक स्तर के उच्च अधिकारियों द्वारा विभिन्न पावर स्टेशनों/ परियोजनाओं/ कार्यालयों का राजभाषा निरीक्षण किया गया तथा राजभाषा क्रियान्वयन व प्रगति की समीक्षा की गई और राजभाषा निरीक्षण रजिस्टर में अपनी टिप्पणियां दर्ज की।

राजभाषा कार्यान्वयन – झलकियां

राजभाषा कार्यान्वयन – झलकियां

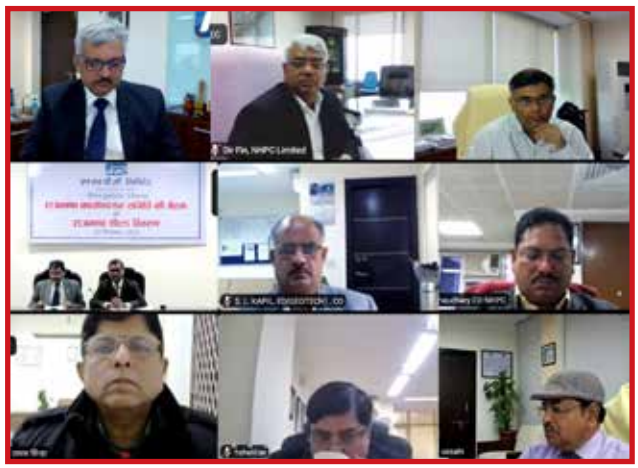

संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण कार्यक्रम – झलकियां तीस्ता-V पावर स्टेशन, सिक्किम

संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण कार्यक्रम – झलकियां
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

हिंदी कवि सम्मेलन का आयोजन - रिपोर्ट

निगम में 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार व कार्यालयीन वातावरण को राजभाषामय बनाने के उद्देश्य से 24 फरवरी, 2022 को एनएचपीसी कार्यालय परिसर, फरीदाबाद के 'जल तरंग सभागार' में हिंदी कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। माननीय अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री अभय कुमार सिंह इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रहे।

इस कवि सम्मेलन का शुभारंभ श्री अभय कुमार सिंह, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक ने भारतीय परंपरा के अनुसार दीप प्रज्ज्वलित करके किया। श्री वाई. के. चौबे, निदेशक (तकनीकी), श्री आर.पी. गोयल, निदेशक (वित्त), श्री बिश्वजीत बासु, निदेशक (परियोजनाएं) व श्री ए.के. श्रीवास्तव, मुख्य सतर्कता अधिकारी ने भी दीप प्रज्ज्वलन में माननीय अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय का साथ दिया। साथ ही इस शुभ अवसर पर एनएचपीसी महिला कल्याण समिति की माननीया अध्यक्षा श्रीमती सुधा सिंह, महिला कल्याण समिति की वरिष्ठ सदस्य श्रीमती पुष्पा चौबे और श्रीमती गायत्री गोयल ने भी दीप प्रज्ज्वलन में सहयोग किया और कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कार्यक्रम की शुरुआत एनएचपीसी गीत से हुई। इस अवसर पर अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय तथा निदेशकगण ने एनएचपीसी लिमिटेड के नए लोगो का अनावरण किया और 'प्रगति पथ पर अग्रसर कुशल नेतृत्व में उपलब्धियों भरे 2 वर्ष' पुस्तिका का विमोचन भी किया।

इसके बाद अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय ने निगम मुख्यालय के सभी कार्मिकों सहित वेबकास्टिंग के माध्यम से जुड़े निगम के सभी कार्मिकों को संबोधित किया। अपने सम्बोधन में उन्होंने कोविड–19 की चुनौतियों के बावजूद निगम द्वारा महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त करने के लिए निगम के कार्मिकों की सराहना की और निगम को नई ऊचांइयों तक ले जाने के लिए और अधिक उत्साह व लगन से कार्य करने के लिए कटिबद्ध रहने का आह्वान किया।

अध्यक्षीय उद्बोधन के बाद, कवि सम्मेलन की शुरूआत कवयित्री सुश्री अनामिका अंबर द्व ारा सरस्वती वंदना की मधुर प्रस्तुति से हुई। माँ वीणापाणि की वंदना के उपरांत हास्य–व्यंग्य के प्रसिद्ध कवि श्री दिनेश 'दिग्गज', श्री पवन आगरी, सुश्री अनामिका अंबर, श्री सर्वेश अस्थाना, डॉ. प्रवीण शुक्ल ने सभागार में श्रोताओं को अपनी हास्य व काव्यात्मक प्रस्तुति से गुदगुदाया। इसके बाद मानवीय संवेदनाओं के सुप्रसिद्ध गीतकार एवं कवि श्री दिनेश रघुवंशी ने अपनी शानदार काव्य प्रस्तुति से श्रोताओं को विभिन्न काव्य रसों से सराबोर कर दिया।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्र गान से किया गया। इस अवसर पर उपस्थित आमंत्रित अतिथियों तथा सभी कार्मिकों ने कवि सम्मेलन के सफल आयोजन की सराहना की ।

हिंदी कवि सम्मेलन – झलकियां

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन - रिपोर्ट

भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार समय–समय पर विभिन्न राजभाषा सम्मेलनों/संगोष्ठियों का आयोजन करना अपेक्षित है, जिससे राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच सौहार्द एवं सामंजस्य भी स्थापित हो सके। इसी अनुक्रम में निगम मुख्यालय, फरीदाबाद द्वारा दिनांक 22 व 23 मार्च, 2022 को फरीदाबाद में दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें निगम मुख्यालय सहित इसके विभिन्न पावर स्टेशनों/परियोजनाओं/कार्यालयों में पदस्थ राजभाषा कैडर व राजभाषा कार्यान्वयन के लिए पदनामित अधिकारी शामिल हुए।

इस सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में हिंदी की प्रख्यात साहित्यकार श्रीमती चित्रा मुदगल मुख्य अतिथि थी। इस अवसर पर माननीय अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री ए.के. सिंह भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। अपने स्वागत उदबोधन में डॉ. राजबीर सिंह, समूह महप्रबंधक ने श्रीमती चित्रा मुदगल और अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय का स्वागत करते हुए निगम द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों एवं प्राप्त की गई उपलब्धियों की जानकारी दी एवं राजभाषा सम्मेलन के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर माननीय अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय ने अपने संबोधन में राजभाषा हिंदी की महत्ता के संबंध में बताते हुए कहा कि राजभाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से अपने कार्य स्थलों पर राजभाषा हिंदी को बढ़ाने के लिए निष्ठापूर्वक प्रयास करने को कहा। साथ ही उन्होंने आशा व्यक्त की कि शीघ्र ही हमारे निगम में पूर्ण रूप से केवल हिंदी में कार्य किया जाने लगेगा।

माननीय अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय के सम्बोधन के बाद मुख्य अतिथि, प्रख्यात साहित्यकार श्रीमती चित्रा मुदगल मुदगल ने अपने सम्बोधन में कहा कि हिंदी केवल कामकाज की नहीं देश के अभिमान की भाषा है, भारतीय संस्कृति की परिचायक है। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी किसी प्रदेश की भाषा नहीं अपितु संपूर्ण राष्ट्र की भाषा है।

उद्घाटन सत्र के बाद श्री केवल कृष्ण, पूर्व वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने 'कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य–समस्याएं और समाधान' विषय पर विस्तार से जानकारी दी। दूसरे सत्र में डॉ. पूरनचंद टंडन, वरिष्ठ प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा सदस्य हिंदी सलाहकार समिति, विद्युत मंत्रालय ने 'प्रशासनिक तथा तकनीकी शब्दावली एवं कार्यालयीन अनुवाद' विषय पर सत्र संचालित करते हुए प्रशासन के कामकाज में हिंदी की वर्तमान स्थिति और स्वरूप पर प्रकाश डाला। तीसरे सत्र में आंतरिक परिचर्चा की गई। डॉ. राजबीर सिंह, समूह महाप्रबंधक (राजभाषा) ने निगम की विभिन्न परियोजनाओं/क्षेत्रीय कार्यालयों में राजभाषा प्रयोग की स्थिति की विस्तार से समीक्षा की तथा प्रतिभागियों से उनके कार्यानुभव के बारे में जानकारी प्राप्त की और राजभाषा प्रयोग बढ़ाने हेतु कारगर एवं व्यावहारिक उपाय सुझाए।

सम्मेलन के दूसरे दिन के पहले सत्र में आंतरिक परिचर्चा की गई। इस सत्र के दौरान डॉ. राजबीर सिंह, समूह महाप्रबंधक (राजभाषा) ने संसदीय राजभाषा समिति द्वारा राजभाषा निरीक्षण के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की। दूसरे सत्र में डॉ. रवि प्रकाश गुप्ता, पूर्व प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान ने ''हिंदी का मानक स्वरूप'' विषय पर व्याख्यान देते हुए हिंदी के मानक अनुप्रयोग पर विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई। तीसरे सत्र में श्री अमित प्रकाश, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), विद्युत मंत्रालय ने 'राजभाषा कार्यान्वयन–निर्धारित लक्ष्य और प्राप्ति के उपाय' विषय पर चर्चा करते हुए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित विभिन्न लक्ष्यों और उनकी प्राप्ति के उपायों पर विस्तार से चर्चा की।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि के तौर पर श्री गोपाल कृष्ण फरलिया, सदस्य हिंदी सलाहकार समिति, विद्युत मंत्रालय ने अपने संबोधन में कहा कि यदि किसी राष्ट्र की अपनी भाषा न हो तो हमारी सभ्यता, संस्कृति, भाषा आदि में मौलिकता नहीं रह जाती। उन्होंने अपने अनुभवों का जिक्र करते हुए कहा कि हिंदी भाषा इतनी समृद्ध है कि इसमें सभी तकनीकी विषयों पर सामग्री का सृजन किया जा सकता है।

इस सम्मेलन के समापन समारोह के अंतिम चरण में प्रतिभागियों को सम्मेलन प्रतिभागिता के प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

झलकियां

एन एच पी सी लिमिटेड
अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद
22 व 23 मार्च, 2022

राष्ट्रीय चेतना के कवि – रामधारी सिंह दिनकर

डॉ. राजबीर सिंह, समूह महाप्रबंधक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय

प्रस्तावना

कवि युग द्रष्टा होता है। अपने युग की सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनीतिक परिस्थितियों को अपनी कविताओं में चित्रित करके समाज को नई दिशा देता है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर हमारे देश के एक महान कवि थे जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जन–जन में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत की। दिनकर जी की रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना और स्वाभिमान का ओज स्वर मुखरित हुआ है। उनके काव्य में जन मानस के भावों, इच्छा–आकांक्षाओं को अभिव्यक्ति मिली है। दिनकर जी की कविताओं में जहां एक ओर 'आक्रोश' और 'विद्रोह' को मुखर स्वर मिला है वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय चेतना और श्रृंगार को भी नए आयाम के साथ अभिव्यक्ति मिली।

वस्तुतः दिनकर जी ने अपने जीवन में बचपन से ही अनेक संघर्षों का सामना किया। उनके जीवन का यही संघर्ष और उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थितियां उनकी कविताओं में ओज स्वर के रूप में प्रस्फुटित हुई है।

उनकी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्ति मिली है। अंग्रेजों से आजादी की लड़ाई में जन सामान्य को उद्वेलित करती, नया जोश भरती उनकी कविताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में निम्नांकित विशेषताएं मुख्यतः दृष्टिगत होती हैं –

राष्ट्रीयता और ओज की प्रधानता

असल में, दिनकर जी आधुनिक युग के क्रांतिकारी कवि थे। इनकी कविताओं में राष्ट्रीयता और ओज की प्रधानता मिलती है। विचार और भाव का अद्भुत समन्वय करने की कला इनकी कविताओं में दृष्टिगत होती है। इनकी कविताओं में विशुद्ध सैद्धांतिकता नहीं है, वरन् व्यावहारिकता परिलक्षित होती है। वे अहिंसा के तो समर्थक थे किन्तु साथ में शक्ति और सम्पन्नता के पक्षधर भी थे। आत्मविकास एवं स्वदेश की सम्पूर्ण स्वतंत्रता के संदर्भ में उन्होंने विश्व बन्धुत्व एवं मानवतावाद के सतत् विकास को जीवन का ध्येय माना था।

स्वावलम्बी, स्वाभिमानी और मजबूत राष्ट्र ही उनकी समस्त काव्य साधना का लक्ष्य था –

नत हुए बिना जो अशनिघात सहती है,
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है।
वीरत्व छोड़ पर का मत चरण गहो रे,
जो पड़े आन खुद ही सब आग सहो रे ।।

यहीं नहीं आजादी की लड़ाई में दिनकर जी का ओजस्वी स्वर क्रांति का नियामक बन गया था–

रे रोक युधिष्ठिर को न यहां,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर फिरा हमें गांडीव गदा,
लौटा दे अर्जुन भीम वीर।

दिनकर जी के समय भी मूल्यों का संकट था और आज भी है। इस संकट से मात्र नारेबाजी या बड़ी बातें करके नहीं उबरा जा सकता। वे मानते थे कि अहिंसा–अहिंसा का नाद करके इससे मुक्ति नहीं पाई जा सकती। अपने राष्ट्रीय, जातीय एवं महत् मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए शक्ति–साधना की आवश्यकता हुआ करती है। तभी तो दिनकर जी ने कहा :

'गांधी, बुद्ध, अशोक विचारों से अब नहीं बचेंगे
उठा खडग, यह और किसी पर नहीं
स्वयं गांधी, गंगा, गौतम पर ही संकट है।'

इस प्रकार कहा जा सकता है कि राष्ट्रीयता ही दिनकर की कविता का मुख्य विषय है। अन्तर्राष्ट्रीयता, मानवीयता और मानव मूल्यों को उन्होंने राष्ट्रीयता के संदर्भों में, पुनः परिभाषित किया। उन्होंने एक ऐसे राष्ट्र निर्माण का आह्वान किया जिसके नागरिक जागरूक, सबल, स्वावलम्बी, आलस्य–विहिन और मानवीय महत मूल्यों के प्रति सजग हैं। उन्होंने मानवीयता, राष्ट्रीयता, भारतीयता का गौरवगान किया है। तभी तो एक स्थान पर अपने देश भारत के बारे में उन्होंने कहा भी है :

'भारत नहीं स्थान का वाचक, गुण विशेष नर का है,
एक देश का नहीं, शील यह भूमण्डल भर का है।'

देश की मिट्टी के कण–कण के प्रति उनके मन में अगाध अनुराग का भाव भरा हुआ था। इसीलिए इतने मुखरित स्वर में वे उसका गायन कर पाने में समर्थ हो सके। सघन सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीयता, यौवन की खुमारी और उन्माद, सहज श्रृंगारिकता और जीवन का उदात्त आह्लाद यही वे सारे तत्व हैं जिन्होंने उनके आन्तरिक और बाहरी व्यक्तित्व का निर्माण किया। इन्हीं सबका गायन उन्होंने अपने काव्य में उदात्त स्वरों में किया है।

दिनकर जी ने अपनी एक पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि 'वे जिन महान चिंत्तकों, लेखकों से प्रभावित रहे उनमें श्री माखनलाल चतुर्वेदी, सुभ्रदा कुमारी चौहान, पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', मैथिलीशरण गुप्त, शैली, वर्डस्वर्थ, रवीन्द्र नाथ टैगोर, नजरूल और जोश प्रमुख हैं।' इनकी कविताओं में इन सभी की समन्वित विचारधारा का अंकन मिलता है।

सामाजिक और आर्थिक विषताओं पर प्रहार

तत्कालीन सामाजिक विषमताओं ने दिनकर जी को अत्यधिक उद्वेलित किया था। हमारे देश में आर्थिक विषमताएं बहुत हैं। दिनकर जी के समय भी कुछ लोगों के पास तो अत्यधिक सम्पत्ति एवं साधन थे किन्तु अधिकांश जनता गरीबी, भुखमरी से बेहाल थी। अस्सी प्रतिशत जनता गरीबी में अपना जीवनयापन करती थी और बीस प्रतिशत अमीर लोग सभी प्रकार की सुख–सुविधाओं से सम्पन्न थे। ऐसी विषम आर्थिक परिस्थितियों में दिनकर जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से संतुलित अर्थव्यवस्था कायम करने का आह्वान किया है जो आज भी बेहद प्रासंगिक है –

शांति नहीं तब तक जब तक
सुख भाग न नर का सम हो।
नहीं किसी को बहुत अधिक हो,
नहीं किसी को कम हो।

शोषण–मुक्त स्वतंत्र समाज एवं जीवन की खोज के लिए उनकी लेखनी ज्वाला बनकर प्रस्फुटित हुई है। वे अपनी कविताओं के माध्यम से क्रान्ति के स्वर में समस्त राष्ट्र का आह्वान करते हैं। शोषण और शोषक के खिलाफ उनकी लेखनी ज्वाला उगलती थी। वस्तुतः समतावाद, समदर्शिता उनका दर्शन था किन्तु जब वे समाज में दलित वर्ग का, निम्न वर्ग का, गरीबों का शोषण होता हुआ देखते तो उनकी लेखनी से शोषण के विरूद्ध आग निकलने लगती थी। वे अपनी कविताओं में विषमताओं पर तीव्र प्रहार करते थे। कुछ पंक्तियां द्रष्टव्य हैं–

'दलित हुए दुर्बल सबलों से, मिटे राष्ट्र, उजड़े दरिद्र जन।
आह सभ्यता आप कर रही, असहायों का शोषित शोषण।

'क्रान्ति–धात्री कविते! जाग उठ, आडम्बर को आग लगा दे।
पतन, पाप, पाखण्ड जलें, जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।'

दिनकर जी के काव्य में 'राष्ट्रीय चेतना' के बाद जो दूसरी मुख्य विशेषता मिलती है वह है उनका शोषण के विरुद्ध विद्रोह। जातिवाद का विरोध करते समय भी वे सहज मानवीय भावनाओं से ही अधिक ओत–प्रोत दिखाई देते हैं, देश–राष्ट्र की सीमाएं भी तब तिरोहित हो जाती हैं। दिनकर जी समाज में व्याप्त आर्थिक–सामाजिक विषमताओं से अत्यधिक क्षुब्ध थे। उनकी ये पक्तियां देखिए–

'श्वानों को मिलता दूध–वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं।
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर जाड़ों में रात बिताते हैं।
युवती के लज्जा–वसन बेच जब ब्याज चुकाए जाते हैं।
मालिक जब तेल–फुलेलों पर पानी–सा द्रव्य बहाते हैं।

श्रम साधना के समर्थक

दिनकर जी की कविताएं अपने देश, राष्ट्र और सारी मानवता को स्वावलम्बी बनाने का शंखनाद करती हैं। उनकी कविताओं में स्वावलम्बी और श्रम–साधना का संदेश मिलता है –

'उठ मन्दिर के दरवाजे से, जोर लगा खेतों में अपने,
नेता नहीं ध्वजा करती है सत्य सदा जीवन के सपने।'

वे आलस्य को देश का दुर्भाग्य मानते थे। यहीं कारण था कि उनकी अनेक कविताओं में आलस्य त्याग कर कर्मक्षेत्र मोर्चों पर डट जाने की अनवरत प्रेरणा मिलती है।

अपने राष्ट्र हित एवं स्वाभिमान को उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जन–जन तक पहुंचाया। उन्होंने राष्ट्र विकास में श्रम शक्ति की महत्ता का प्रतिपादन किया है। राष्ट्र विकास मानवीयता उन्मुख होना चाहिए, ऐसी उनकी दृढ़ धारणा थी। राष्ट्रीयता उनके लिए सर्वोपरि थी –

'यदि देश–धर्म के विरूद्ध भगवान भी
आयें, तो है धर्म उनसे भी युद्ध करना।'

श्रम की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए और जातिवाद पर तीव्र प्रहार करते हुए उन्होंने 'रश्मिरथी' में लिखा है–

पाते हैं सम्मान तपो बल से धरती पर शूर।
जाति–जाति का शोर मचाते केवल कायर क्रूर ?

अन्य विविध विशेषताएं

यद्यपि दिनकर जी की कविताओं का मुख्य विषय 'राष्ट्र भक्ति' 'राष्ट्रीय चेतना' रहा है। किन्तु उनकी कविताओं में पुरुषार्थ, ओजस्विता, राष्ट्रीयता के साथ–साथ मानवतावाद, वैयक्तिक प्रेम, जीवन की यथार्थ समस्याएं, सामाजिक विषमताएं, हास्य–व्यंग्य–विनोद, भक्ति आदि भी काव्य के विषय रहे हैं। अनेक भाव और रस उनकी कविताओं के माध्यम से प्रस्फुटित हुए है।

दिनकर जी ने केवल राष्ट्रीय चेतना का ही गौरव गान नहीं किया है वरन् दिनकर जी भारतीय संस्कृति के पोषक, पक्षधर और पुरोधा रहे हैं। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' के माध्यम से उन्होंने गौरवशाली भारतीय संस्कृति के शाश्वत जीवन मूल्यों को पुनः जन सामान्य तक पहुंचाया। अपने गद्य लेखन के माध्यम से भारतीय संस्कृति, सभ्यता को पुनः प्रतिष्ठित किया।

दिनकर यद्यपि मूलतः 'वीर रस' के कवि थे किन्तु उनकी कविताओं में अन्य रसों का विशेषकर शृंगार रस का आस्वादन भी मिलता है –

जीवन के दिन चार, अवधि उसमें भी अल्प जवानी की,
उस पर भी कितनी छोटी निधि होती प्रणय कहानी की।
हम दोनों की प्रथम रात यह, आज करो मत मान प्रिये।
मिट न सकेगी कसक कभी, यदि यों ही हुआ विहान प्रिये।

निष्कर्ष

दिनकर जी को राष्ट्रीय जन जागरण के कवि के रूप में याद किया जाएगा। जिस समय देश आजादी के लिए संघर्ष कर रहा था उस समय उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से युवाओं में एक नया जोश और उत्साह का संचार किया। आजादी के बाद भी उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना की ज्योति को प्रज्ज्वलित रखा।

दिनकर जी की काव्य यात्रा–आदि से अंत तक द्वंद्वों से जूझने की कथा है जिसमें 'ललकार' और 'विद्रोह' का स्वर मुखरित हुआ है। उनकी कविताएं गीतात्मक शैली में मानव के कोमल भावों को भी अत्यंत सक्षम रूप प्रकट करती हैं। दिनकर जी ने अपने काव्य संकलन 'संचयिता' की भूमिका के अंत में लिखा है–

'जिस तरह मैं जवानी भर इकबाल और रविन्द्र के बीच झटके खाता रहा, उसी प्रकार मैं जीवन भर गांधी और मार्क्स के बीच झटके खाता रहा हूँ। इसीलिए उजले को लाल से गुणा करने पर जो रंग बनता है, वही रंग मेरी कविता का रंग है। मेरा विश्वास है कि अंततोगत्वा यही रंग भारतवर्ष के व्यक्तित्व का भी होगा।' यही कारण है कि दिनकर जी के ओजस्वी स्वर में क्रांति का आह्वान मिलता है।

पद्मविभूषण राष्ट्र कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं में ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रांति का स्वर प्रस्फुटित हुआ है। दिनकर जी के साहित्य के अनुशीलन के बाद यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि कुरुक्षेत्र, उर्वशी, रश्मिरथी, हुंकार, बापू, 'संस्कृति के चार अध्याय' आदि रचनाएं भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि है। 'उर्वशी' के लिए दिनकर जी को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि दिनकर जी का काव्य आज और भी अधिक प्रासंगिक है। स्वतंत्रता चाहे वह व्यक्ति की हो, राष्ट्र की हो, मानवता की हो, उसे वे सबका जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे। दिनकर जी राष्ट्रीय भावनाओं और मानवीय संवेदनाओं के कवि थे। प्रत्येक राष्ट्र को हर युग में दिनकर जी जैसे महान कवि के ओज़ स्वर की आवश्यकता होती है जो सम्पूर्ण राष्ट्र में गौरव का, स्वाभिमान का ऐसा भाव जागृत करे, जो राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ले जाए। दिनकर जी का समस्त साहित्य सभी के लिए अत्यन्त प्रेरणा देने वाला, उत्साह पैदा करने वाला है।

चूहा और भगवान

बालक मूलशंकर महाशिवरात्रि के पर्व पर मंदिर में गया। वहाँ वह शिवलिंग की ओर दृष्टि गड़ाए देख रहा था। अचानक एक चूहा आया और मूर्ति पर चढ़े फल खाने लगा। बालक भयभीत हो गया, क्योंकि उसे विश्वास था कि इसी क्षण भगवान शिव का रौद्र रूप प्रकट होगा और चूहे का काम तमाम हो जाएगा।

लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। चूहा मजे से फुदक – फुदककर प्रसाद खाता रहा। शिवलिंग पत्थर ही बना रहा। इस घटना का मूलशंकर पर गहरा प्रभाव पड़ा। यही मूलशंकर आगे चलकर स्वामी दयानंद सरस्वती कहलाए।

टनल निर्माण में सुरक्षा उपाय

नीरज कुमार, उप प्रबंधक (सेफ्टी)
सेफ्टी विभाग, निगम मुख्यालय

टनल (सुरंग) बनाने की आवश्यकता जल विद्युत परियोजनाओं, पानी की सिंचाई, जल निकासी, खनिजों का खनन, खतरनाक अपशिष्टों के भंडारण, रक्षा प्रतिष्ठानों (भूमिगत आश्रय), सड़क–मार्ग और रेलवे इत्यादि के लिए होती है। टनल का निर्माण अंतर्निर्मित कठिनाईयों व परिस्थितियों के कारण विभिन्न जोखिमों के प्रति संवेदनशील होता है।

अतः टनल निर्माण के दौरान जोखिमों को कम करने व सुरक्षित कार्य करने के लिए निम्नलिखित सुरक्षा उपायों का अनुपालन किया जाना आवश्यक है:

- टनल में उपस्थित सभी उपकरणों का उचित रखरखाव एवं सक्षम व्यक्ति द्वारा उनका नियमित निरीक्षण किया जाना चाहिए।
- टनल निर्माण कार्य में निकले मलबे को शीघ्र हटाने, कार्मिकों के लिए सुरक्षित और पर्याप्त पैदल मार्ग मुहैया कराने के उचित उपाय किए जाने चाहिए।
- टनल में जल निकासी के लिए उचित उपाय होने चाहिए।
- टनल के अंदर अच्छी रोशनी, हेलमेट, गमबूट, हार्ड हैट के अतिरिक्त सभी जरूरी पीपीई का इस्तेमाल करना चाहिए।
- ड्रिल की जाने वाली टनल के सिरे के पास काम करने के लिए प्लेटफॉर्म जंबो में गार्डरेल व टो–गार्ड होना चाहिए। धूल नियंत्रण के लिए वेट ड्रिलिंग का उपयोग ही किया जाना चाहिए।
- टनल के अंदर विस्फोटक और डेटोनेटर ले जाने के लिए अलग–अलग वाहन होने चाहिए तथा उनकी सुरक्षा नियमावली व विस्फोटकों/ डेटोनेटरों की सुरक्षित संचालन प्रक्रिया उसके साथ में रखी होनी चाहिए। विस्फोटक भंडार क्षेत्र में धूम्रपान निषेध होना चाहिए।
- ब्लास्टिंग के बाद पत्थर गिरने से बड़े हादसे हो सकते हैं। इसलिए दीवारों और छतों का निरीक्षण, ढीली चट्टान की स्केलिंग, कमजोर स्थान की बोल्टिंग और सपोर्टिंग करना होना चाहिए।
- टनल की खुदाई में निकली चट्टानों के टुकड़ों को कारों में समान रूप से लोड किया जाना चाहिए और किनारों के ऊपर ढेर नहीं लगाना

चाहिए। टनल में वाहनों की ओवरलोडिंग व ओवर स्पीडिंग नहीं होनी चाहिए।

❖ टनल में रेल की पटरियाँ सुरक्षित और स्वस्थ होनी चाहिए। धुआँ रहित रेल इंजनों का प्रयोग किया जाना चाहिए। आकस्मिक टिपिंग को रोकने के लिए डंप कारों में लॉकिंग डिवाइस साथ होनी चाहिए।

❖ टनल निर्माण कार्य में यांत्रिक संवातन की व्यवस्था होनी चाहिए ताकि काम कर रहे कार्मिक दल को ताजी हवा की आपूर्ति की जा सके तथा धूल, धुएं और अन्य गैसों जैसे मीथेन व कार्बन मोनोआक्साइड आदि को हटाया जा सके।

❖ सिलिका और क्वार्ट्ज युक्त रॉक धूल से सिलिकोसिस बीमारी हो सकती है। इसलिए यांत्रिक संवातन का उपयोगी होना अति आवश्यक है। वेंटिलेशन डक्ट्स एयरटाइट होने चाहिए और दोनों दिशाओं में काम करने के लिए रिवर्सिबल डक्ट ब्लोअर होने चाहिए।

❖ टनल में नियमित रूप से ऑक्सीजन स्तर के साथ–साथ विभिन्न जहरीली या ज्वलनशील गैसों के स्तर की नियमित निगरानी की जानी चाहिए।

❖ टनल के अंदर पर्याप्त मात्रा में अग्निशमन यंत्र होने चाहिए तथा सभी कार्मिकों को इसके उपयोग का नियमित प्रशिक्षण देना चाहिए।

❖ टनल के अंदर प्राथमिक उपचार बॉक्स की व्यवस्था तथा हर शिफ्ट में फ़र्स्ट ऐड में प्रशिक्षित कार्मिक भी मौजूद होने चाहिए।

❖ टनल में पर्याप्त मात्रा में एससीबीए उपलब्ध होने चाहिए ताकि आपातकालीन स्थिति में कार्मिक उनका उपयोग करके टनल से सुरक्षित बाहर आ सके।

❖ टनल के अंदर पर्याप्त संचार सुविधा होनी चाहिए ताकि आपातकालीन स्थिति में बाहरी विभागों/एजेंसियों से संपर्क किया जा सके।

❖ टनल सतहों को सपोर्ट करने और किसी भी चट्टान को गिरने से रोकने के लिए जरूरत के अनुसार कंक्रीट या स्टील से बचाव करना चाहिए।

❖ टनल में इस्तेमाल होने वाले सभी लिफ्टिंग टूल व टैकल्स तथा प्रेशर वेससेल्स का नियमित सेफ़्टी टेस्ट कराना आवश्यक है।

❖ टनल के अंदर किसी भी ज्वलनशील सामग्री या संरचना की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। तेल और ग्रीस इत्यादि आवश्यक सामग्री को बंद धातु के कंटेनरों में रखा जाना चाहिए।

❖ टनल के अंदर विद्युत इन्स्टॉलेशन के नियमों और विनियमों का पालन करना चाहिए।

❖ टनल के अंदर आपातकालीन प्रकाश/इमरजेंसी लाइट की व्यवस्था भी प्रदान की जानी चाहिए।

❖ टनल के अंदर कार्य करने वाले कार्मिकों की नियमित चिकित्सा जाँच की जानी चाहिए।

❖ टनल में कार्यरत कार्मिकों, अन्य विभागों व बाहरी एजेंसियों जैसे जिला प्रशासन, जिला आपदा प्रबंधक प्राधिकरण, स्थानीय पंचायतों आदि के साथ मिलकर नियमित मोक ड्रिल्ल का आयोजन किया जाना चाहिए

उपर्युक्त उपायों से हम टनल निर्माण में होने वाली दुर्घटनाओं को और उनके दुष्प्रभावों को काफी हद तक कम कर सकते है।

मंत्र की शक्ति

पूर्वा मैनी, सहायक प्रोग्रामर
संपदा एवं प्रबंधन सेवाएं विभाग, निगम मुख्यालय

प्रस्तावना

मंत्र बारम्बारता का विज्ञान है, जिसका प्रभाव साधक के अवचेतन मन पर पड़ता है। वैदिक मंत्र हो या बीज मंत्र इससे सीधे मनुष्य के चक्र विशेष रूप से प्रभावित होते हैं और व्यक्ति की ऊर्जा शक्ति का जागरण व एकीकरण होता है।

मननात् त्रयते इति मंत्रः

अर्थात् जिसके मनन करने से त्रण मिलता है, वही मंत्र है। इसका आशय यह है कि *जब एक ही आदेश मन को बार–बार दिया जाता है तो वह संदेश चेतन मन से अवचेतन मन की ओर प्रवाहित होकर अंततः वह व्यक्तित्व का रूपांतरण करता है।*

मंत्र शब्द का सामान्य अर्थ 'ध्वनि' अर्थात 'कंपन' से है। योग उपनिषदों में पांचवा स्थान 'मंत्रयोग' का है जिसके अनुसार मन को अशुद्धियों से बचाना एवं बिखरने से रोकना ही योग विधि है। जीवन के तामसिक और राजसिक गुणों के प्रति आकर्षण ही अशुद्धियां हैं जो मन को केवल एक वस्तु से दूसरी ओर भगाता है तथा मनोरंजन, स्वार्थ, आकांक्षा आदि की पूर्ति के लिए प्रयासरत रहता है। *मंत्र का उदेद्श्य ही मन के इन गुणों तथा अहंकार से मुक्त करना है।*

मंत्र का विज्ञान

किसी मंत्र के नित्य उच्चारण से एक विशिष्ट ध्वनि–कंपन बनता है, जो ब्रह्मांड व्यापी ऊर्जा में मिलकर वायुमंडल में व्याप्त हो जाता है और जिस देवता से संबंधित मंत्र होता है, आकाश में प्रवाहित वही सूक्ष्म भाव, सूक्ष्म परमाणु, प्राणशक्ति को संचित कर वापस जपकर्त्ता के शरीर–मन व अवचेतन की गहराई तक अनेक गुणा होकर टकराता है और उन गुणों का प्रभुत्व बढ़ा देता है।

उदाहरण के लिए – जैसे गायत्री मंत्र के अधिष्ठाता 'सूर्य देव' हैं। जब हम गायत्री–मंत्र का जाप करते हैं तो ब्रह्माण्ड में एक विशिष्ट प्रकार की असाधारण तरंगें उठती हैं जो स्प्रिंगनुमा पथ का अनुगमन करती हुई सूर्य तक पहुंचती हैं और उसकी प्रतिध्वनि लौटते समय सूर्य की दिव्यता, प्रकाश, तेज, ताप और अन्य अलौकिक गुणों से युक्त होती हैं और साधक को इन दिव्य गुणों से भर देती हैं। साधक शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से लाभान्वित होता है।

'विशेष शब्दों के समूह' जिसके बार–बार उच्चारण करने से मन एकाग्र होता है और जिससे अभीष्ट फल की प्राप्ति की जा सकती है – उसे मंत्र कहते हैं। मंत्रों के उपयोग की प्रक्रिया को 'जप' कहते हैं। भावपूर्वक मंत्र जप का उच्चारण, लय, ताल और सही अनुपात में लेने से मंत्र शक्ति बढ़ती है। ऐसे जप के अभ्यास से मानसिक क्रियाएं संतुलित हो जाती हैं जिसका अनुभव मानसिक शिथिलीकरण के रूप मे यथार्थ किया जा सकता है।

मंत्र शब्द का प्रामाणिक अर्थ

मंत्र शब्द में 'मन' का तात्पर्य मनन से है और 'त्र' का तात्पर्य शक्ति और रक्षा से है। मंत्र साधना से अंदर की सोई हुई चेतना को जागृत किया जा सकता है। आंतरिक शक्ति का विकास करके महान कार्य किया जा

सकता है क्योंकि मंत्र के जाप से मन की चंचलता नष्ट हो जाती है। जीवन संयमित बनता है। स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है और एकाग्रता प्राप्त होती है। 'मननात त्रायते इति मंत्रा' – मनन करने पर जो रक्षा करे उसे ही मंत्र कहते हैं।

भाग्य रेखा मेट सके न राम।
जितना सम्भव जपो, सुबह–शाम।।

'मंत्र' रूपी कुछ बीज अक्षरों में इतनी शक्ति है कि इसको भाव संकल्प के साथ साधक बारंबार दोहराकर अपने सम्पूर्ण मन, मस्तिष्क और इंद्रियों को उनके अनुरूप कार्य करने के लिए बाध्य कर देते हैं। शब्दों की बारंबारता का प्रभाव हमारी आभा मण्डल पर भी पड़ता है। मंत्र को जप द्वारा जब बार–बार दोहराया जाता है तो शब्द के माध्यम से वातावरण में दिव्य तरंगें उत्पन्न होती हैं, जो मनुष्य के अवचेतन मन में जाकर बस जाती हैं। फिर उन्हीं के अनुसार मनुष्य की आदतें, व्यक्तित्व और व्यवहार का निर्माण होता है। यही मंत्र जप का महत्वपूर्ण पहलू है।

प्राण विज्ञान विशेषज्ञों का कहना है – 'हर प्राणी के आस–पास उसके ही विचारों का एक विद्युत–वर्तुल साथ–साथ चलता रहता है, जिस पर शब्दों की बारम्बारता के माध्यम से प्रभाव डाला जा सकता है।'

योग योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण जप की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करते हुए गीता में कहते हैं–यज्ञानाम् जपयज्ञो आस्मि। 'अर्थात मैं ही यज्ञों में सर्वश्रेष्ठ जप यज्ञ हूँ।'

भगवान श्रीराम, शबरी को कहते हैं–मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकाशा। अर्थात ''मेरे (राम) मंत्र का जाप और मुझमें दृढ़ विश्वास–यह पांचवीं भक्ति है, जो वेदों में प्रसिद्ध है।''

अग्नि पुराण में लिखा है – 'ज' से जन्म–मरण का नाश, 'प' से पाप का विनाश। जन्म मरण से रहित कर दें, पापों का विनाश कर दें उसे जप कहते हैं।

भगवान बुद्ध ने भी मंत्र शक्ति के बारे में कहा था, 'यह मानवता के साथ प्रत्येक हृदय को एक कर सकती है।'

पूजा कोटि समं स्तोत्रां, स्तोत्रा कोटि समं जपः

शास्त्रों में करोड़ों पूजा के बराबर एक श्लोक को माना गया है और करोड़ों श्लोकों के समान जप को माना गया है। परमार्थ साधना के चार बड़े विभाग कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग और राजयोग हैं किन्तु जपयोग में इन चारों का अंतर्भाव हो जाता है। जप कई प्रकार के होते हैं। जैसे नित्य–जप, काम्य–जप, प्रदक्षिणा–जप वाचिक–जप, अचल–जप, चल–जप, उपांशु–जप, नैमित्तिक–जप, भ्रमर–जप, निषिद्ध–जप, अखंड–जप, मानस–जप, अजपा–जप और प्रायश्चित–जप।

मंत्रोच्चारण की क्षमता एवं उसका प्रभाव

हमारे तन, मन व वातावरण पर मंत्र के शब्दों का गहरा प्रभाव पड़ता है। मंत्र शक्ति के द्वारा ही माता अनसूईया ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश को दूध पीते बच्चों में परिवर्तित कर दिया था। जैसे लोहे का बना मामूली–सा अंकुश इतने बड़े और बलवान हाथी को वश में कर लेता है, उसी तरह मंत्र में केवल देवताओं को ही नहीं बल्कि स्वयं प्रभु को भी वश में कर लेने की शक्ति होती है। 'मंत्र' का वास्तविक अर्थ है, मन को स्थिर करने वाला अर्थात जो मन की गति को रोक सके। पूरे विश्वास के साथ मंत्र जपने से सफलता प्राप्त होती है। मंत्र में जिसकी जैसी भावना होती है उसको वैसी ही सिद्धि प्राप्त होती है 'यो यच्छद्घः स एवं स' जो जैसी श्रद्धा रख रहा है वस्तुतः वह वही है अर्थात श्रद्धा ही व्यक्ति का व्यक्तित्व है। इसी श्रद्धा को इष्ट लक्ष्य में साधना की यथार्थता और उपलब्धि में जितनी अधिक गहराई के साथ, तन्मयता के साथ, नियोजित की जाएगी, मंत्र शक्ति उतनी ही सामर्थ्यवान बन जाएगी। मंत्र जप से मनोबल दृढ़ होता है। आस्था

में परिपक्वता आती है। बुद्धि निर्मल होती है। मंत्र के अक्षर, मंत्र के अर्थ, जप करने की विधि को अच्छी प्रकार सीखकर उसके अनुसार जप करने से साधक की योग्यता अवश्य विकसित होती है।

मंत्र जपने से मन पवित्र होता है और दुख, चिन्ता, भय, शोक, रोग आदि निवृत्त होने लगते हैं। सुख–समृद्धि और सफलता की प्राप्ति में मदद मिलती है। वट वृक्ष का बीज और मंत्र, द्वितीया के चन्द्रमा की तरह छोटा दिखाई देता है। परन्तु बढ़ते–बढ़ते रंग बिखेर देता है। सारा संसार देवताओं के अधीन है। देवता मंत्र के अधीन हैं, मंत्र योगी के अधीन है, योगी परमात्मा के अधीन है।

जब हम मंत्रों को उच्चारित करते हैं तो उच्चारण करने से ध्वनि पैदा होती है। उस ध्वनि के अन्दर एक विचित्र प्रकार की शक्ति छिपी रहती है जो बड़ी शक्तिशाली होती है। जिससे बड़े से बड़ा प्रलय व सृजन कार्य होता है। ध्वनि विशेषज्ञों ने इसको प्रमाणित किया है। ध्वनि को विश्व ब्रह्मांड का एक संक्षिप्त रूप कहा जाता है। वायु, जल और पृथ्वी इन तीन चीजों से ध्वनियां उत्पन्न होती है। सभी जीवित प्राणी ध्वनि के प्रभाव को अनुभव करते हैं। आप किसी व्यक्ति को गाली देते हैं, क्रोधित होकर डांटते हैं तो वह क्रोधित हो जाता है। उसी व्यक्ति के साथ आप मधुर वचन बोलते हैं वह प्रसन्नचित होकर गद्‌गद् हो जाता है। अपने आपको हर समय न्यौछावर करने को तैयार रहता है। यह सब चमत्कार ध्वनि का है। गायन कला के अनुसार कंठ को अमुक उतार–चढ़ाव के स्वरों से युक्त करके जो ध्वनि प्रवाह होता है वह गायन है। इसी प्रकार मुख के उच्चारण मंत्र को अमुक शब्द क्रमवार बार–बार लगातार संचालन करने से जो विशेष प्रकार की ध्वनि प्रवाह संचारित करने से जो विशेष प्रकार की ध्वनि प्रवाह संचारित होती है वही मंत्र की भौतिक क्षमता होती है। यही ध्वनि का प्रभाव सूक्ष्म शरीर को प्रभावित करता है। बीन की ध्वनि पर सर्प, बांसुरी की ध्वनि पर हिरण वशीभूत हो जाते हैं। हालैण्ड के पशु पालकों ने गायों का दूध निकालते समय संगीत बजाने का क्रम चलाया और अधिक मात्रा में दूध प्राप्त किया। यूगोस्वालिया में फसल को सुविकसित करने लिए अपने खेतों पर वाद्य ध्वनि यंत्र से संगीतमय ध्वनि प्रभावित की जिसका परिणाम उत्साहवर्धक पाया गया। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अमेरिकी किसान जॉर्ज स्मिथ ने मक्का पर संगीत का थोड़ा सा प्रयोग कर उनकी वृद्धि में सफलता प्राप्त की। जो मंत्र जिस देवता से संबंधित होता है वह उसकी शक्ति को जागृत कर आत्मसात् कर लेता है। मंत्र साधक स्वयं देवता तुल्य होकर जन–कल्याण करने लगता है। मंत्र, साधक को सशक्त व जागृत बनाता है।

मंत्र के गुणों का अद्‌भुत रहस्य

हर मंत्र में एक अपार रहस्य समाया हुआ है। रहस्य यह कि जब 'शब्द' हम वाणी से प्रकट करते हैं तो वह सर्वप्रथम ध्वनि तरंगों में परिवर्तित होता है। तत्पश्चात बार–बार उच्चारण से उसी के अनुरूप आभा मण्डल तैयार होता है जो हमारे जीवन को प्रभावित करता है।

इस प्रकार मंत्र द्वारा हम प्रकृति के सारे रूपों, सारे स्वादों और साधनों, रहस्यों को खंगाल सकते हैं। साथ ही मन और चित्त को शान्ति और सन्तोष के परमाणुओं से जोड़कर ईश्वर से एकीकरण का मार्ग प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार जीवन में एक नवीन ऊर्जा जगाने, रूपांतरण की दिशा तय करने में 'मंत्र' कारगर साबित होता है। मंत्र का सहारा लेने से मन की तामसिक प्रवृत्तियों का नाश होता है और व्यक्ति दुर्व्यसनों से भी मुक्त होता है। 'मंत्र' द्वारा रोग भी ठीक किए जा सकते हैं। पर इससे भी बड़ी बात कि गुरु कृपा, श्रद्धा, भक्तिभाव और विधि के संयोग से जब मंत्र के अक्षर अंतःकरण में प्रवेश करते हैं तो वर्तमान ही नहीं, जन्म–जन्मान्तर के पाप–संस्कार स्वतः ही नष्ट होने लगते हैं और साधक में एक दिव्य चेतना का जागरण

धीरे–धीरे प्रारम्भ होता है। इसे ही शब्द–शक्ति एवं मंत्र तत्व का रहस्य कहते हैं। इसमें सम्पूर्ण रूपांतरण का रहस्य छुपा है।

मंत्र को शब्द ब्रह्म भी कहा गया है। किस शब्द के बाद कौन सा शब्द रखने से किस प्रकार का विद्युत शक्ति का प्रवाह उत्पन्न होता है, इस रहस्य को अभी पाश्चात्य विज्ञान नहीं जान पाया है किन्तु शब्द की इस महान शक्ति से हमारे ऋषि परिचित थे। अमुक क्रम से शब्दों को रखने से, मुख से अमुक–अमुक अंगों को अमुक क्रम से संचालन होता है और उनके कारण शरीर के अमुक ज्ञान तंतुओ, चक्रों, शक्ति संस्थानों में अमुक प्रकार की हलचल उत्पन्न हो जाती है। उस हलचल की क्रिया–प्रतिक्रिया की उथल–पुथल से एक विशेष प्रकार का विद्युत प्रवाह आकाश में उत्पन्न होता है जो लोक–लोकान्तरों तक आसानी से पहुंच जाता है। मंत्र बल से परम् को प्राप्त करने तथा आत्मा को परमात्मा से जोड़ देने का सफल प्रयास ऋषियों ने प्राप्त किया हुआ है।

मंत्र की प्रकृति

मंत्र का सीधा संबंध ध्वनि से है। इसलिए इसे ध्वनि–विज्ञान भी कहते हैं। ध्वनि, प्रकाश, ताप, अणु–शक्ति, विद्युत–शक्ति की भांति एक प्रत्यक्ष शक्ति है। विज्ञान का अर्थ है सिद्धांतों का गणितीय होना। मंत्रों में अमुक अक्षरों का एक विशिष्ट क्रमबद्ध, लयबद्ध और वृत्तात्मक क्रम होता है। इसकी निश्चित नियमबद्धता और अपेक्षानुसार निश्चित परिणाम ही इसे विज्ञानपूर्ण बनाते हैं। मंत्र में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द का एक निश्चित भार, रूप, आकार, प्रारूप, शक्ति, गुणवत्ता और रंग होता है। मंत्र एक प्रकार की शक्ति है जिसकी तुलना हम गुरुत्वाकर्षण, चुम्बकीय–शक्ति और विद्युत–शक्ति से कर सकते हैं। प्रत्येक मंत्र की एक निश्चित ऊर्जा, आवृत्ति और तरंग दैर्ध्य होती है।

मंत्रों की गति

प्रत्येक मंत्र साधक और उस मंत्र के अधिष्ठाता देव के मध्य एक अदृश्य सेतु का कार्य करता है। साधारण बोले गए शब्दों की ध्वनि–तरंगें वातावरण में प्रत्येक दिशा में फैलकर सीधे चलती हैं, लेकिन मंत्र में प्रयुक्त शब्दों को क्रमबद्ध, लयबद्ध, वृताकार क्रम से उच्चारित करने से एक विशेष प्रकार का गतिचक्र बन जाता हैं जो सीधा चलने की अपेक्षा स्प्रिंग की भांति वृत्ताकार गति के अनुसार चलता है और अपने गंतव्य देव तक पहुंच जाता है। पुनः उन ध्वनियों की प्रति ध्वनियां उस देव की अलौकिकता, दिव्यता, तेज और प्रकाश– अणु लेकर साधक के पास लौट आती हैं। अतः हम कह सकते हैं कि मंत्र की गति सर्पिल परिसंचारी पथ का अनुगमन करती हैं। इसका उदाहरण हम बूमरैंग से कर सकते हैं, जिसकी वृत्तात्मक यात्रा पुनः अपने स्रोत पर आकर ही खत्म होती है। अतः मंत्रों के रूप में जो भी तरंगें अपने मस्तिष्क से हम ब्रह्माण्ड में प्रक्षेपित करते हैं वे लौटकर हमारे पास ही आती हैं। अतः मंत्रों का चयन अत्यंत सावधानी से करना चाहिए।

मंत्र–सिद्धि

जब मंत्र, साधक के आज्ञा–चक्र में अग्नि–अक्षरों में लिखा दिखाई दे तो मंत्र–सिद्ध हुआ समझना चाहिए।

जब बिना जप किए साधक को लगे कि मंत्र–जाप अनवरत उसके अन्दर स्वतः चल रहा हैं तो मंत्र की सिद्धि होनी अभीष्ट है।

साधक सदैव अपने इष्ट–देव की उपस्थिति अनुभव करे और उनके दिव्य–गुणों से अपने को भरा समझे।

शुद्धता, पवित्रता और चेतना का उर्ध्वगमन का अनुभव करे।

मंत्र सिद्धि के पश्चात् साधक की शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक इच्छाओं की पूर्ति होने लग जाती है।

श्रेष्ठ मंत्र

हरे कृष्ण महामंत्र के द्वारा षोडश (16) कलाओं से आवृत्त जीव के आवरण नष्ट हो जाते हैं। तत्पश्चात् जैसे बादल के छंट जाने पर सूर्य की किरणें प्रकाशित हो उठती हैं उसी तरह परमब्रह्म का स्वरूप प्रकाशित हो जाता है। द्वापर युग के अंत में जब देवर्षि नारद ने ब्रह्माजी से कलियुग में कलि के प्रभाव से मुक्त होने का उपाय पूछा, तब सृष्टिकर्ता ने कहा आदिपुरुष भगवान नारायण के नामोच्चारण से मनुष्य कलियुग के दोषों को नष्ट कर सकता है। सर्वमंत्रों में श्रेष्ठ मंत्र 'महामंत्र' है:

हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।।

इससे श्रेष्ठ कोई अन्य मंत्र सारे वेदों में भी देखने को नहीं आता। क्योंकि महामंत्र ही गुरु कृपा मोक्ष का मूल है। कलियुग में भगवान की प्राप्ति का सबसे सरल और प्रबल साधन उनका नाम–जप ही बताया गया है। श्रीमद्भागवत (12.3.51) का कथन है–यद्यपि कलियुग दोषों का भंडार है तथापि इसमें एक बहुत बड़ा सद्गुण यह है कि सतयुग में भगवान के ध्यान (तप) द्वारा, त्रेतायुग में यज्ञ–अनुष्ठान के द्वारा, द्वापर युग में पूजा–अर्चना से जो फल मिलता था, कलियुग में वह पुण्यफल श्री हरि के नाम–संकीर्तन (हरे कृष्ण महामंत्र) मात्र से ही प्राप्त हो जाता है।

हरे कृष्ण महामंत्र ही क्यों?

हरिनाम स्वयं रस स्वरूप कृष्ण ही हैं तथा चिन्मयत्त्व (दिव्यता) के आगार हैं। हरिनाम पूर्ण हैं, शुद्ध हैं, नित्यमुक्त हैं। नामी (हरि) तथा हरिनाम में कोई अंतर नहीं है। जो कृष्ण हैं–वही कृष्णनाम है। जो कृष्णनाम है वही कृष्ण हैं। श्रीमद्भागवत महापुराण का तो यहां तक कहना है कि जप–तप एवं पूजा–पाठ की त्रुटियां अथवा कमियां श्रीहरि के नाम–संकीर्तन से ठीक और परिपूर्ण हो जाती हैं।

भक्तिचंद्रिका में महामंत्र का माहात्म्य इस प्रकार वर्णित है – महामंत्र संकीर्तन सभी का अधिकार है, सभी प्रकार की दुर्वासनाओं को जलाने में अग्नि–स्वरूप है, सभी के लिए आराधनीय एवं जप करने योग्य है। यह महामंत्र प्राणिमात्र का बांधव है तथा समस्त शक्तियों से संपन्न होने के कारण महामंत्र का जप– मुहूर्त, बाह्य पूजा, देश–काल आदि नियमों से प्रतिबंधित नहीं है।

मंत्रशास्त्र के प्रणेता महादेव शंकर भगवती पार्वती को महामंत्र की उपयोगिता का रहस्योद्घाटन करते हुए कहते हैं – कलियुग में श्री हरि–नाम के बिना कोई भी साधन सरलता से पापों को नष्ट नहीं कर सकता। कलियुग में इस महामंत्र ...संकीर्तन करने मात्र से प्राणी मुक्ति के अधिकारी बन सकते हैं।

अग्निपुराण इस नाम–मंत्र की प्रशंसा करते हुए कहता है कि जो लोग इसका किसी भी तरह उच्चारण करते हैं, वे निश्चय ही कृतार्थ हो जाते हैं।

पद्मपुराण का कथन है कि इस महामंत्र को नित्य जपने वाला वैष्णव देह त्यागने के उपरांत भगवान के धाम को जाता है।

ब्रह्माण्डपुराण में महर्षि वेदव्यास इस महामंत्र की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं – इस महामंत्र को ग्रहण करने वाले देहधारी के लिए भव–सागर से पार उतारने के लिए इससे श्रेष्ठ कोई दूसरा उपाय नहीं है।

महामंत्र की महिमा

कृष्ण महामंत्र का संकीर्तन ऊंची आवाज में करना चाहिए क्योंकि जपकर्ता केवल स्वयं को ही पवित्र करता है, जबकि नाम–कीर्तनकारी स्वयं के साथ–साथ सुनने वालों का भी उद्धार करता है।

बृहन्नारदीयपुराण का सुस्पष्ट उद्घोष है

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैवकेवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा।।

''कलियुग में हरि के नाम, हरि के नाम, हरि के नाम के अतिरिक्त भव–बंधन से मुक्ति प्रदान करने वाला दूसरा अन्य कोई साधन नहीं है! नहीं है! नहीं है!'' अन्य कोई भी उपाय चारों वेदों में कहीं भी नहीं है। कृष्ण तथा कृष्ण नाम अभिन्न हैं अर्थात कलियुग में तो स्वयं कृष्ण ही हरिनाम के रूप में विस्तृत हैं। केवल हरिनाम से ही सारे जगत का उद्धार संभव है:

कलि काले नाम रूपे कृष्ण अवतार।
नाम हइते सर्व जगत निस्तार।।

वेद, रामायण, महाभारत और पुराणों में आदि, मध्य और अंत में सर्वत्र श्री हरि का गुण–गान मंत्रों से ही किया गया है।

स्पष्ट उपाय

'हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।'

इस दिव्य कंपन के इस जाप से, हमारी कृष्ण चेतना को पुनर्जीवित करने के लिए प्रभावशाली तरीका है। जीवित आध्यात्मिक आत्मा के रूप में, हम सभी मूल रूप से कृष्ण जागरूक जीव हैं लेकिन अनादिकाल से हमारी चेतना अब माया रूपी भौतिक वातावरण से प्रदूषित है। चेतना, जो जीव की मूल शक्ति है। इस महामंत्र के दिव्य कंपन सुनते ही पुनर्जीवित हो जाती है। तब हम वास्तव में आध्यात्मिक समझ के स्तर पर इन्द्रिय, मन और बुद्धि से परे, एक दिव्य स्तर पर स्थित होकर दिव्य परमानंद महसूस कर सकते हैं।

बिना मानसिक अटकलों वाला मंत्र

महामंत्र को जपने के लिए मंत्र की भाषा को समझने की कोई जरूरत नहीं है, न ही मानसिक अटकलों की कोई जरूरत है और न ही बौद्धिक समझ की। बिना किसी योग्यता के भी यह आध्यात्मिक मंच पर स्वतः कार्य करती है। यहां तक कि एक बच्चा भी जप में भाग ले सकता है।

खाइते–सुइतेयथा तथा नाम लय।
काल–देश–नियम नाहि, सर्व सिद्धि हय।

विष्णुधर्मोत्तर में भी लिखा है कि श्रीहरि के महामंत्र नाम–संकीर्तन में देश–काल का नियम लागू नहीं होता है। खाते सोते, जूठे मुंह अथवा किसी भी प्रकार की अशुद्ध अवस्था में भी महामंत्र जप को कर सकते हैं।

किसी चमत्कार या इच्छा पूर्ति के लिए नहीं अपितु मंत्र का उपयोग उच्चतम सुख, अनन्त आंतरिक शक्ति व आत्मा को संरक्षण देने के लिए करें।

जो लोग अपने इतिहास को भूल जाते हैं या उसे भूलने का प्रयास कराते हैं, वे कदापि नए इतिहास का निर्माण नहीं कर सकते और न ही वे इतिहास में अपना स्थान बना सकते हैं।

– डॉ० अंबेडकर

अतीत के आदर्शों की महानता इस बात का आश्वासन है कि भविष्य के आदर्श और भी महान होंगे

– महर्षि अरविंद

भारतीय दर्शन – एक परिचय

मनीष कुमार, उप प्रबंधक (फिशरीज)
पर्यावरण एवं विविधता प्रबंधन विभाग, निगम मुख्यालय

भूमिका

व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते

यजुर्वेद के उपर्युक्त श्लोक के अनुसार व्रत से दीक्षा मिलती है, दीक्षा से दक्षिणा मिलती है, दक्षिणा से श्रद्धा मिलती है और श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है।

दर्शन उस विद्या को कहा जाता है, जिसके द्वारा तत्व का साक्षात्कार हो सके। हृदय की गाँठ तभी खुलती है और शोक तथा संशय तभी दूर होते हैं, जब एक सत्य का दर्शन होता है। जिनको सम्यक् दृष्टि नहीं है, वे संसार के मायाजाल में फंस जाते हैं। भारतीय ऋषियों ने जगत के रहस्य को अनेक कोणों से समझाने की कोशिश की है। भारतीय दार्शनिक संप्रदायों को सामान्यतः आस्तिक और नास्तिक वर्गों में रखा गया है।

आस्तिक दर्शन (षड्दर्शन)

भारतीय दर्शन परम्परा में उन दर्शनों को आस्तिक दर्शन कहा जाता है, जो वेदों को प्रमाण मानते हैं। वेद अर्थात ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद–भारत के प्राचीनतम व पवितत्रतम आधारभूत धर्मग्रन्थ हैं। जो वेद को प्रमाण मानकर, उसी के आधार पर अपने विचार आगे बढ़ाते गए, वे आस्तिक कहलाए गए हैं। षड्दर्शन, उन भारतीय धार्मिक एवं दार्शनिक विचारों के मंथन का परिपक्व परिणाम है, जो हजारों वर्षो के चिन्तन–मनन से उतरा और वैदिक दर्शन के नाम से प्रचलित हुआ है। आस्तिक दर्शन छह हैं–यथा पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा या वेदान्त, सांख्य, वैशेषिक, न्याय तथा योग दर्शन, इसलिए इन्हें षड्दर्शन भी कहा जाता है।

1. पूर्व मीमांसा दर्शन

पूर्व मीमांसा दर्शन के प्रवर्तक (प्रणेता) महर्षि जैमिनी हैं। 'मीमांसा' शब्द का अर्थ होता है 'जिज्ञासा' अर्थात जानने की लालसा। अतः 'पूर्व मीमांसा' शब्द का अर्थ है 'जानने की प्रथम जिज्ञासा'। मनुष्य जब इस संसार में अवतरित हुआ, उसकी प्रथम जिज्ञासा यही रही थी कि वह क्या करे? अतएव इस दर्शनशास्त्र का प्रथम सूत्र मनुष्य की इस इच्छा का प्रतीक है। मनुष्य की प्रथम जिज्ञासा को उत्तर मिला कि वह धर्म कार्य करे अर्थात, धार्मिक कर्म करे। अब धर्म कार्य क्या है? धर्म की व्याख्या यजुर्वेद में की गई है। वेद के प्रारम्भ में ही यज्ञ की महिमा का वर्णन है। वैदिक परिपाटी में यज्ञ का अर्थ देवयज्ञ ही नहीं है, वरन इसमें मनुष्य के प्रत्येक प्रकार के कार्यों का समावेश हो जाता है। उदाहरण स्वरूप, बढ़ई जब वृक्ष की लकड़ी से कुर्सी अथवा मेज बनाता है, तो वह यज्ञ ही करता है। वृक्ष का तना जो मूल रूप में ईधन के अतिरिक्त किसी भी उपयोगी काम का नहीं होता, उसे बढ़ई ने उपकारी रूप देकर मानव का कल्याण किया है। अतः बढ़ई का कार्य यज्ञरूप ही है। एक अन्य उदाहरण ले सकते हैं। कच्चे लौह को लेकर योग्य वैज्ञानिक और कुशल शिल्पी एक सुन्दर कपड़ा सीने की मशीन बना देते हैं। इस कार्य से मानव का कल्याण

हुआ। इस कारण यह भी यज्ञरूप है। सभी प्रकार के कर्मों की व्याख्या इस दर्शन शास्त्र में है। परिवार की व्यवस्था क्या होनी चाहिए और राष्ट्र के प्रति हमारे क्या कर्तव्य हैं, जैसे महत्वपूर्ण सिद्धातों का प्रतिपादन ये महान दर्शन कराता है।

मीमांसा आस्तिक दर्शन है, क्योंकि यह वेद की प्रामाणिकता का सबसे प्रबल समर्थक है। मीमांसा अनीश्वर वादी दर्शन है, क्योंकि यह ईश्वर की सत्ता का समर्थन नहीं करता। मीमांसा, धर्म को सबसे महत्वपूर्ण स्थान देता है। मीमांसा यथार्थवादी दर्शन है, यह जीव और जगत की यथार्थ सत्ता का समर्थक है। मीमांसा के अनुसार धर्म, लोक एवं लोकोत्तर जीवन का नियामक सिद्धांत है। धर्म सम्मत कर्म का आचरण ही अभीष्ट फलदायी है, अर्थात दुख निवारक और सनातन सुख, जिसे स्वर्ग कहा गया है, की प्राप्ति का राजमार्ग है। मीमांसा का मुख्य उद्देश्य धर्म की रक्षा के लिए धर्म के प्रमाण, धर्म के स्वरूप, धर्म के साधन और धर्म के फल की सम्यक् व्याख्या कर व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को सुव्यवस्थित रखना है। धर्म के ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र साधन वेद है। इस प्रकार मीमांसा का धर्म, जीवन के नियमन का सिद्धांत है।

2. वेदान्त (उत्तर मीमांसा) दर्शन

उत्तर मीमांसा दर्शन के प्रवर्तक महर्षि बादरायण हैं। जब मनुष्य जीवन यापन करने लगता है, तो उसके मन में द्वितीय जिज्ञासा जो उठती है, वह है ब्रह्म जिज्ञासा या उत्तर मीमांसा। द्वितीय जिज्ञासा, जैसे इस जगत का कारण क्या है? हम कहां से उत्पन्न हैं? कहां स्थित हैं? यह सुख, दुख क्यों होता है? ब्रह्म की जिज्ञासा करने वाले यह सब जानना चाहते हैं। प्रथम जिज्ञासा कर्म, धर्म की जिज्ञासा थी और द्वितीय जिज्ञासा जगत् का मूल कारण जानने की है। इस द्वितीय जिज्ञासा का उत्तर ही ब्रह्मसूत्र अर्थात् उत्तर मीमांसा है। चूंकि यह दर्शन वेद के परम और अन्तिम तात्पर्य का दिग्दर्शन कराता है, इसलिए इसे वेदान्त दर्शन के नाम से भी जाना जाता है। यह वेद के अन्तिम ध्येय और कार्य क्षेत्र की शिक्षा देता है। इसमें बताया गया है कि तीन ब्रह्म अर्थात् मूल पदार्थ है यथा प्रकृति, जीवात्मा और परमात्मा। तीनों ही अनादि है, अर्थात इन तीनों का अंत नहीं है। तीनों ब्रह्म कहलाते हैं और जिसमें ये तीनों विद्यमान है अर्थात् जगत, वह परमब्रह्म है। प्रकृति जो जगत का उपादान कारण है, परमानुरूप में है, जो तीन शक्तियों यथा सत्व, रजस व तमस का गुण है। ब्रह्मसूत्र में जीवात्मा के जन्म–मरण के बंधन में आने तथा छुटकारा पाने का भी वर्णन है। वेदान्त दर्शन, भारतीय दर्शन की वह विचारधारा है, जो इस ब्रह्मांड को ब्रह्म (ईश्वर) द्वारा निर्मित मानती है और यह भी मानती है, कि ब्रह्म नित्य है और यह वस्तु जगत अनित्य है। यह ब्रह्म को इस सृष्टि की स्थिति, उत्पत्ति तथा लय का कारण मानती है और आत्मा को ब्रह्म का अंश मानती है और यह प्रतिपादन करती है, कि मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य मुक्ति है, जिसे ज्ञान योग, कर्म योग, राज योग एवं भक्ति योग द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

3. सांख्य दर्शन

सांख्य दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कपिल हैं। प्रकृति से लेकर स्थूलभूत पर्यंत सारे तत्वों की संख्या गणना किए जाने की वजह से, इसे सांख्य दर्शन कहते हैं। सांख्य दर्शन की मान्यता है कि संसार की हर वास्तविक वस्तु का उद्गम पुरूष और प्रकृति से हुआ है। पुरूष में स्वयं आत्मा का भाव है, जबकि प्रकृति सृजनात्मक शक्ति की जननी है। विश्व की आत्माएं संख्यातीत हैं, जिसमें चेतना तो है पर गुणों का अभाव है। वहीं प्रकृति मात्र तीन गुणों यथा सत्व, रजस तथा तमस के समन्वय से बनी है। प्रकृति की अविकसित अवस्था में यह गुण निष्क्रिय होते हैं, अर्थात तीनों आवेश परस्पर एक दूसरे को निःशेष कर रहे होते हैं। परंतु परमात्मा के तेज से सृष्टि के उदय की प्रक्रिया प्रारम्भ होते ही प्रकृति के तीनों गुणों के बीच का समेकित संतुलन टूट जाता है, अर्थात परमात्मा का तेज इस साम्यावस्था को भंग करता है, तत्पश्चात असाम्यावस्था आरंभ होती है। रचना कार्य में यह प्रथम परिवर्तन होता है। सांख्य के अनुसार कुल चौबीस मूल तत्व होते हैं, जिसमें प्रकृति और पुरूष

पच्चीसवां है। प्रकृति का स्वभाव अन्तर्वर्ती और पुरूष का अर्थ व्यक्ति आत्मा है। आत्माए, किसी न किसी रूप में प्रकृति से संबंधित हो जाती हैं और उनकी मुक्ति इसी में होती है कि प्रकृति से अपने विभेद का अनुभव करे। जब आत्माओं और गुणों के बीच की भिन्नता का गहरा ज्ञान हो जाता है, तो इनसे मुक्ति मिलती है और मोक्ष संभव हो पाता है।

दुख, तीन प्रकार के होते हैं। (i) आधिभौतिक या शारीरिक दुख–यह मनुष्य को होने वाला शारीरिक दुख है, जैसे बीमारी या अपाहिज होना आदि। (ii) आधिदैविक–यह दैविक प्रकोपों द्वारा होने वाले दुख हैं जैसे बाढ़, आँधी, तूफान, भूकंप इत्यादि का प्रकोप। (iii) आध्यात्मिक– यह दुख सीधे मनुष्य की आत्मा को होते हैं, जैसे कि कोई संतान अपने माता–पिता के बिछड़ने पर दुखी होता है अथवा कोई अपने समाज की अवस्था को देखकर दुखी होता है। सांख्य दर्शन का उद्देश्य इन तीनों प्रकार के दुखों की निवृत्ति करना है।

4. वैशेषिक दर्शन

वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद हैं। जगत में पदार्थों की संख्या केवल छह हैं यथा द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समन्वय। चूंकि इस दर्शन में विशेष पदार्थ को सूक्ष्मता से निरूपित किया गया है, इसलिए इसका नाम वैशेषिक दर्शन है। वैशेषिक दर्शन विज्ञान मूलक है, क्योंकि यह दर्शन परिमण्डल, पंच महाभूत और भूतों से बने सभी पदार्थों का वर्णन करता है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को पंच महाभूत के नाम से जाना जाता है। घ्राण, रसना, नेत्र, त्वचा और श्रोत्र को पंच इन्द्रियों के रूप में जाना जाता है। गंध, रस, रूप, स्पर्श तथा शब्द को पंच विषय के रूप में निरूपित किया गया है। धर्म विशेष से उत्पन्न हुए पदार्थ यथा द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समन्वय रूपी पदार्थों के सम्मिलित और विभक्त धर्मों के अध्ययन–मनन और तत्वज्ञान से मोक्ष होता है। यह मोक्ष विश्व की अणुवीय प्रकृति तथा आत्मा से उसकी भिन्नता के आधार पर निर्भर करता है। मूल रूप से इस दर्शन का लक्ष्य, जीवन में सांसारिक वासनाओं को त्याग कर सुख प्राप्त करना और ईश्वरीय ज्ञान प्राप्ति के द्वारा अंततः मोक्ष प्राप्त करना है। वैशेषिक दर्शन के मुख्य पदार्थ और उनके विवरण इस प्रकार हैं–

पदार्थ	वैशेषिक दर्शन पदार्थ का विवरण
द्रव्य	पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा और मन ये सारे नौ प्रकार के द्रव्य कहलाते हैं। जल, शीतल स्पर्श वाला पदार्थ है। अग्नि, उष्ण स्पर्श वाला गुण है। काल, सारे कार्यों की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश में निमित्त होता है। आत्मा की पहचान चैतन्य ज्ञान है। मन, मनुष्य के अभ्यंतर में सुख, दुख आदि के ज्ञान का साधन है।
गुण	बुद्धि ज्ञान है और केवल आत्मा का गुण है। नया ज्ञान अनुभव है और पिछला ज्ञान स्मरण है। स्मृति, पूर्व के अनुभव के संस्कारों से उत्पन्न ज्ञान है। सुख, इष्ट विषय की प्राप्ति है, जिसका स्वभाव अनुकूल होता है। अतीत के विषयों के स्मरण एवं भविष्य में उनके संकल्प से सुख होता है। सुख, मनुष्य का परम उद्देश्य होता है। दुख, इष्ट के जाने या अनिष्ट के आने से होता है, जिसकी प्रकृति प्रतिकूल होती है। इच्छा, किसी अप्राप्त वस्तु की प्रार्थना है। वेद विहित कर्म जो कर्ता के हित और मोक्ष का साधन होता है, धर्म कहलाता है। अधर्म से अहित और दुख होता है, जो प्रतिषिद्ध कर्मों से उपजता है। गुणों की संख्या चौबीस होती है। जिस गुण से द्रव्यों में बिखराव न हो, उन्हें सामान्य गुण (संख्या, वेग आदि) कहते हैं। जिस गुण से बिखराव हो, उन्हें विशेष गुण (बुद्धि, धर्म आदि) कहते हैं।
कर्म	किसी प्रयोजन को सिद्ध करने में कर्म की आवश्यकता होती है, इसलिए द्रव्य और गुण के साथ कर्म को भी पदार्थ कहा जाता है। मनुष्य के कर्म पाप और पुण्य रूप में होते हैं।
सामान्य	मनुष्यों में मनुष्यत्व, वृक्षों में वृक्षत्व जाति सामान्य है और ये बहुतों में होती है। दिशा, काल आदि में जाति नहीं होती, क्योंकि ये अपने आप में अकेली है।

विशेष	देश काल की भिन्नता के बाद भी एक दूसरे के बीच पदार्थ में विलक्षणता का भेद होता है, वह उस द्रव्य में एक विशेष की उपस्थिति से होता है। उस पहचान या विलक्षण प्रतीत का एक निमित्त होता है, जैसे शर्करा में मिठास से।
समन्वय	जहाँ गुण व गुणी का संबंध इतना घना है, कि उन्हें अलग नहीं किया जा सकता।

5. न्याय दर्शन

न्याय दर्शन के प्रवर्तक महर्षि गौतम हैं। महर्षि अक्षपाद गौतम द्वारा प्रणीत न्याय दर्शन एक आस्तिक दर्शन है, जिसमें ईश्वर कर्म फल प्रदाता है। इस दर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय प्रमाण है। न्याय शब्द कई अर्थों में प्रयुक्त होता है, परन्तु दार्शनिक साहित्य में न्याय वह साधन है, जिसकी सहायता से किसी प्रतिपाद्य विषय की सिद्धि या किसी सिद्धान्त का निराकरण होता है। न्याय दर्शन में अन्वेषण अर्थात् जांच पड़ताल के उपायों का वर्णन किया गया है। इस दर्शन में सत्य की खोज के लिए कुल सोलह तत्व का ज्ञान मिलता है। ये सोलह तत्व इस प्रकार हैं– प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति और निग्रह स्थान। इन तत्वों के द्वारा किसी भी पदार्थ की सत्यता (वास्तविकता) का पता लगाया जा सकता है। इस दर्शन शास्त्र को तर्क करने का व्याकरण कह सकते हैं। वेदार्थ जानने में तर्क का विशेष महत्व रहता है। अतः यह दर्शन शास्त्र वेदार्थ करने में सहायक है। न्याय दर्शन के कुल चार भाग हैं (i) सामान्य ज्ञान की समस्या का निराकरण (ii) जगत की समस्या का निराकरण (iii) जीवात्मा की मुक्ति (iv) परमात्मा का ज्ञान। न्याय दर्शन में आध्यात्मवाद की अपेक्षा तर्क एवं ज्ञान का आधिक्य है। किसी विषय में यथार्थ ज्ञान तक पहुंचना और अपने या दूसरे के अयथार्थ ज्ञान की त्रुटि ज्ञात करना ही इस दर्शन का मुख्य उद्देश्य है। दुख का अत्यधिक नाश ही मोक्ष है। न्याय दर्शन की अन्तिम दीक्षा यही है कि केवल ईश्वरीयता ही वांछित है, ज्ञातव्य है और प्राप्य है। तत्वज्ञान से मिथ्या ज्ञान का नाश होता है। पक्ष प्रतिपक्ष के द्वारा जो अर्थ का निश्चय है, वही निर्णय है। दूसरे अभिप्राय से कहे शब्दों का कुछ और ही अभिप्राय कल्पना करके दूषण देना, छल है।

आत्मा का अस्तित्वः शरीर और इन्द्रियों में केवल आत्मा ही भोगने वाला है। इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुख और ज्ञान उसके चिह्न है, जिन्हें शरीर से अलग जाना पड़ता है। उसके भोगने का घर शरीर है। भोगने के साधन इन्द्रिय है। भोगने योग्य विषय रूप, रस, गंध, शब्द और स्पर्श है। भोग का अनुभव बुद्धि है और अनुभव कराने वाला अंतःकरण मन है।

6. योग दर्शन

योग दर्शन के प्रवर्तक महर्षि पतंजलि हैं। योग की प्रक्रिया विश्व में प्रचलित है। अधिकांशतः यह आसन के रूप में जानी जाती है। विश्व के कई देशों में प्राणायाम भी प्रचलित है। आसन, प्राणायाम इत्यादि, योग दर्शन का बहुत ही छोटा भाग है। इस दर्शन की व्यावहारिक और आध्यात्मिक उपयोगिता सर्वमान्य है, क्योंकि योग मनुष्य के शरीर को एवं उसके प्राणों को बलवान एवं स्वस्थ रखने में सक्षम है।

चित्त या मन की स्मरणात्मक शक्ति की वृत्तियों को सब बुराई से दूर कर, शुभ गुणों में स्थिर करके, परमेश्वर के समीप अनुभव करते हुए मोक्ष प्राप्त करने के प्रयास को योग कहा जाता है। भगवद्गीता के अनुसार बुद्धि से परे आत्मा को जानकर, आत्मा के द्वारा आत्मा को वश में करके अपने पर स्वयं नियंत्रण प्राप्त करने की प्रक्रिया ही योग है। इसे प्राप्त करने का उपाय योग दर्शन में बताया गया है। 'तप' यानि निरंतर प्रयत्न, 'स्वाध्याय' यानि विद्या का स्वयं से अध्ययन और परमात्मा के आश्रय से योग का कार्यक्रम सफल हो सकता है।

अष्टांग योगः क्लेशों से मुक्ति पाने व चित्त को समाहित करने के लिए योग के आठ अंगों का अभ्यास ही अष्टांग योग कहलाता है। इस अभ्यास की अवधि आठ भागों में विभक्त है यथाः यम, नियम, शासन, प्राणायाम, प्रत्याहार,

धारणा, ध्यान और समाधि। जो ज्ञान, सामान्य बुद्धि से प्राप्त होता है, वह भिन्न है और ऋतंभरा (योग से सिद्ध हुई बुद्धि) से प्राप्त ज्ञान विशेष अर्थ वाला होता है, जिससे अध्यात्म–ज्ञान की प्राप्ति होती है और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

नास्तिक दर्शन

भारतीय दर्शन परम्परा में उन दर्शनों को नास्तिक दर्शन कहा जाता है, जो वेदों को नहीं मानते हैं या वेदों को अप्रमाणिक मानते हैं। भारत में भी कुछ ऐसे व्यक्तियों ने जन्म लिया, जो वैदिक परम्परा के बन्धन को नहीं मानते थे, वे सभी नास्तिक कहलाए। नास्तिक कहे जाने वाले विचारकों की तीन धाराएं मानी गई हैं यथा– चार्वाक, जैन तथा बौद्ध। दुनिया के प्रमुख नास्तिक दर्शन या धर्म में चार्वाक, जैन और बुद्ध का प्रमुख स्थान और महत्व है। सभी तरह की नास्तिक विचारधारा का उद्‌गम यही तीन धर्म है। नास्तिक कहने से यह आभासीत होता है कि ये धर्म ईश्वर को नहीं मानते हैं, जबकि चार्वाक को छोड़ दें तो बाकी दोनों धर्म का दृष्टिकोण इस संबंध में बिल्कुल ही अलग प्रतीत होता है।

1. बौद्ध दर्शन

बौद्ध दर्शन के प्रवर्तक भगवान गौतम बुद्ध हैं। बौद्ध धर्म, ईश्वर के होने या न होने पर चर्चा नहीं करता, क्योंकि यह बुद्धिजाल से ज्यादा कुछ नहीं है। उनका मानना है कि इस प्रश्न को आप तर्क या अन्य किसी भी तरह से हल नहीं कर सकते। मूल प्रश्न यह है कि व्यक्ति है और वह दुख तथा बंधन में है। उसके दुख और बंधन का मूल कारण खोजो और मुक्त हो जाओ। आष्टांगिक मार्ग पर चलकर दुख और बंधन से मुक्त हुआ जा सकता है।

2. जैन दर्शन

जैन दर्शन के प्रवर्तक भगवान ऋषभ देव एवं महावीर स्वामी हैं। जैन दर्शन के अनुसार अस्तित्व या सत्ता के दो ही तत्व हैं– जीव और अजीव। जिसमें चेतना है, गति है वह जीव है। जिसमें चेतना, गति का अभाव है, वह अजीव है। जीव दो तरह के होते हैं, एक वे जो मुक्त हो गए और दूसरे वे जो बंधन में हैं। इस बंधन से मुक्ति का मार्ग ही कैवल्य का मार्ग है। स्वयं की इन्द्रियों को जीतने वाले को जितेंद्रिय कहते हैं। संस्कृत के "जिन" धातु से बने "जैन" शब्द का अर्थ होता है स्वयं को जीतना। यही अरिहंतों का मार्ग है। जितेंद्रिय बनकर जियो और जीने दो, यही जिन सत्य है।

3. चार्वाक दर्शन

चार्वाक दर्शन के प्रवर्तक ऋषि चार्वाक हैं। ऋषि चार्वाक प्राचीन भारत के एक अनीश्वरवादी और नास्तिक तार्किक थे। चार्वाक दर्शन एक भौतिकवादी नास्तिक दर्शन है। यह मात्र प्रत्यक्ष को प्रमाण मानता है तथा पारलौकिक सत्ताओं को यह सिद्धांत स्वीकार नहीं करता है। चावार्क या लोकायत दर्शन स्पष्ट तौर पर "ईश्वर" के अस्तित्व को नकारते हुए कहता है कि यह काल्पनिक ज्ञान है। तत्व भी पांच नहीं चार ही हैं। आकाश के होने का सिर्फ अनुमान है और अनुमान ज्ञान नहीं होता। जो प्रत्यक्ष हो रहा है, वही ज्ञान है अर्थात दिखाई देने वाले जगत से परे कोई और दूसरा जगत नहीं है। आत्मा अजर अमर नहीं है। वेदों का ज्ञान प्रमाणिक नहीं है। यथार्थ और वर्तमान में जीना चाहिए। ईश्वर, आत्मा, स्वर्ग, नरक, नैतिकता, अनैतिकता और तमाम तरह की तार्किक और दार्शनिक बातें व्यक्ति को जीवन से दूर करती है। इसलिए खाओ, पियो और मौज करो। इस जीवन का भरपूर मजा लो, यही चार्वाक सत्य है।

चार्वाक दर्शन, पूरी तरह से भौतिकवादी दर्शन होने के कारण इसका भारतीय दर्शन, धर्म और समाज में कोई महत्व नहीं रहा, क्योंकि यह दर्शन आत्मा के अस्तित्व को भी नकारता है। उसकी नजर में देह ही आत्मा है और मृत्यु ही मोक्ष है। शायद यही कारण रहा कि छठी शताब्दी आते आते चार्वाक दर्शन के मूलग्रंथ और मान्यताएं अपना अस्तित्व खो बैठी।

संदर्भ–

श्री गुरुदत्त द्वारा रचित पुस्तक 'हमारी सांस्कृतिक धरोहर'।

निगम मुख्यालय में एकीकृत प्रबंधन प्रणाली (आईएमएस) की उपयोगिता और उसका कार्यान्वयन

बाचस्पति सिन्हा, वरिष्ठ प्रबंधक (यांत्रिकी)
ब्रजेश कुमार पाण्डेय, सहायक प्रबंधक (यांत्रिकी)
गुणवत्ता आश्वासन व निरीक्षण विभाग, निगम मुख्यालय

प्रस्तावना

एकीकृत प्रबंधन प्रणाली (आईएमएस) किसी भी संगठन की सभी प्रणालियों और प्रक्रियाओं को एक पूर्ण ढांचे में एकीकृत करती है, जिससे संगठन एकीकृत उद्देश्यों, प्रतिबद्धताओं और उनके प्रयासों को एक साथ एक इकाई के रूप में काम करने में सक्षम बनता है।

इस समय पूरे विश्व में प्रबंधन प्रणालियाँ जो कि प्रमुखता से लागू की जा रही हैं, निम्नलिखित हैं:–

1. आईएसओ 9001: गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली–जो उत्पाद और उसकी सेवाओं की गुणवत्ता और ग्राहकों की संतुष्टि पर ध्यान देती है।
2. आईएसओ 14001: पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली–जो संगठन के उत्पादों और उसकी सेवाओं की प्रक्रियाओं के तत्काल और दीर्घकालिक पर्यावरणीय प्रभावों के प्रबंधन पर ध्यान देती है।
3. आईएसओ 45001: व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली–जो व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा के क्षेत्र में जोखिम नियंत्रण और प्रदर्शन को बढ़ाने तथा कार्यस्थल में संभावित खतरों की पहचान और उसकी आकलन और उसके जोखिम–नियंत्रण कारकों के निवारक महत्व पर ध्यान देती है।
4. आईएसओ 15700: सेवा गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली–जो प्रभावी और कुशल सेवा तथा ग्राहकों की संतुष्टि पर ध्यान देती है।
5. आईएसओ 27001: सूचना सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली–जो सुरक्षित सूचना प्रणाली को स्थापित करने, लागू करने और लगातार सुधार पर ध्यान देती है।
6. आईएसओ 50001: ऊर्जा प्रबंधन प्रणाली–जो ऊर्जा प्रदर्शन, ऊर्जा दक्षता, ऊर्जा उपयोग और ऊर्जा खपत इत्यादि में लगातार सुधार पर ध्यान देती है।
7. आईएसओ 37001: रिश्वत विरोधी प्रबंधन प्रणाली–जो संगठन के कानूनी दायित्वों और अखंडता के प्रति प्रतिबद्धता के अनुपालन के साथ व्यावसायिक लेन–देन में विश्वास और उसके बढ़ावा देने में सुधार पर ध्यान देती है।
8. आईएसओ 22000: खाद्य सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली – जो खाद्य व्यवसाय के भीतर खाद्य सुरक्षा खतरों को नियंत्रित करने के लिए व्यवस्थित दृष्टिकोण है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह भोजन खाने के लिए सुरक्षित है।
9. आईएसओ 37301: अनुपालन प्रबंधन प्रणाली–जो दस्तावेज़ आवश्यकताओं को निर्दिष्ट करती है और एक संगठन के भीतर प्रभावी अनुपालन प्रबंधन प्रणाली की स्थापना, विकास, कार्यान्वयन, मूल्यांकन, रखरखाव और सुधार के लिए दिशानिर्देश प्रदान करने पर ध्यान देती है।

निगम मुख्यालय में एकीकृत प्रबंधन प्रणाली की नीति, आवश्यकता और उसकी उपयोगिता

इस समय एनएचपीसी, निगम मुख्यालय में एकीकृत प्रबंधन प्रणाली (आईएमएस) लागू है, जिसे समय–समय पर प्रमाणित या पुनःप्रमाणित किया जाता है। यह वर्तमान में गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली (आईएसओ 9001:2015), पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली (आईएसओ 14001:2015) और व्यावसायिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली

(आईएसओ 45001:2018) के लिए है और यह निगम मुख्यालय की सभी प्रमुख गतिविधियों की समग्र आवश्यकताओं के संबंध में लागू की गई है।

एनएचपीसी में लागू आईएमएस, तीनों प्रबंधन प्रणालियों की मौजूदा संरचना का एकीकृत रूप है जो कि हमारी समग्र आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सभी गतिविधियों के दोहराव से बचने हेतु तीनों प्रणालियों को आपस में एक साथ जोड़ा गया है, जिसके लिए एकीकृत आईएमएस मैनुअल और एकीकृत प्रणाली प्रक्रिया तैयार की गई है। साथ ही एकीकृत प्रबंधन प्रणाली (आईएमएस) को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए निगम मुख्यालय में उद्देश्य, प्रतिबद्धता और हमारे कर्तव्यों का संकलन किया गया है, जिसे आईएमएस नीति का नाम दिया गया है।

एनएचपीसी में आईएमएस का सही पैमाना ग्राहक/इच्छुक पार्टी की संतुष्टि और हमारी सेवाओं की गुणवत्ता ही हमारी प्रतिस्पर्धा की कुंजी है। इस तरह हम अपने मूल्यवान उपभोक्ताओं, समाज, नियामक प्राधिकरणों और भारत सरकार के साथ–साथ अन्य राज्य सरकारों सहित अपने सभी हितधारकों की संतुष्टि को बनाए रख सकते हैं।

निगम मुख्यालय में लागू एकीकृत प्रबंधन प्रणाली का दायरा

निगम मुख्यालय के लगभग सभी विभाग जैसे योजना, डिजाइन और इंजीनियरिंग, मानव संसाधन, संविदा, ईएमएस, गुणवत्ता आश्वासन व निरीक्षण, वित्त इत्यादि के साथ कार्य की खरीद और निष्पादन, कमीशनिंग, पारंपरिक और गैर–पारंपरिक विद्युत परियोजनाओं के संचालन और पावर स्टेशन के रखरखाव से संबंधित सभी गतिविधियाँ एकीकृत प्रबंधन प्रणाली के दायरे में आती हैं। इनके अलावा, कार्यालय में चल रही सभी सेवाओं जैसे कैंटीन व्यवस्था, डीजी सेट, सुरक्षा, बागवानी और चिकित्सा सेवाएँ इत्यादि को भी इस प्रबंधन प्रणाली के दायरे में रखा गया है।

एकीकृत प्रबंधन प्रणाली के सफलतापूर्वक कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण दस्तावेज/बिन्दु

(i) आईएमएस प्रक्रियाएं
(आईएमएस मैनुअल खण्ड सं 4.4.2):

निगम मुख्यालय में आईएमएस मैनुअल को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए कुछ पूर्व प्रक्रियाएं निर्धारित की गई हैं और ये प्रमुख प्रक्रियाएं कार्यक्षेत्र, पर्यावरणीय पहलू, खतरे की पहचान, जोखिम मूल्यांकन और निर्धारण नियंत्रण, अनुपालन दायित्व, प्रलेखित जानकारी का नियंत्रण (दस्तावेज और रिकॉर्ड), आपातकालीन तैयारी और प्रतिक्रिया, कचरे का संग्रह, भंडारण और निपटान, रखरखाव, आंतरिक लेखापरीक्षा, प्रबंधन समीक्षा, घटना जांच इत्यादि हैं। इनके अतिरिक्त सभी विभाग अपनी–अपनी विभागीय प्रक्रिया को समय–समय पर जरूरत के अनुसार उसमें बदलाव करते हैं तथा उसे विभागाध्यक्ष के अनुमोदन के उपरांत विभाग में लागू किया जाता है।

(ii) आपातकाल योजना
(आईएमएस मैनुअल खण्ड सं 8.2ख):

निगम मुख्यालय की आपातकाल योजना को परिसर के भीतर पर्यावरण (आईएसओ 14001:2015) और स्वास्थ्य एवं सुरक्षा (आईएसओ 45001:2018) के दृष्टिकोण की सभी आवश्यकताओं को देखते हुए बनाया गया है, जिसका उद्देश्य मुख्यालय परिसर में संभावित आपात या विषम परिस्थितियों से प्रभावी ढंग से निपटना और परिणामी नुकसान को कम से कम करना है। आपातकाल योजना कैंटीन सहित कार्यालय परिसर में मौजूद सभी मानव शक्तियों (संविदाकर्मी व आगंतुक सहित), सामग्रियों तथा मशीनरियों के अलावा कार्यालय समय के दौरान क्रेच में मौजूद बच्चों तथा वाहनों इत्यादि की भी सुरक्षा को पूरा करती है। यह योजना छोटी से लेकर बड़ी आपातकालीन घटनाओं से सफलतापूर्वक निपटने के

उद्देश्य से बनाई गई है, जिसमें सभी जरूरी सुविधाएं, उपकरण, संगठन, सेवाओं और संचार का वर्णन किया गया है।

(iii) विधायी रजिस्टर
(आईएमएस मैनुअल खण्ड सं 6.1.3):

निगम मुख्यालय में लागू विधायी रजिस्टर, विभिन्न पर्यावरण और व्यावसायिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा विधानों का वर्णन करता है, जिसके कानूनी अनुपालन के लिए निम्नलिखित नियम सूचीबद्ध हैं –

- जल (प्रदूषण की रोकथाम एवं नियंत्रण) उपकर अधिनियम, 1977 और नियम, 1978 (2003 संशोधित)
- पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 और नियम, 1986 (2004 संशोधित)
- खतरनाक और अन्य अपशिष्ट (प्रबंधन और सीमा पार आंदोलन) नियम, 2016
- ध्वनि प्रदूषण (विनियमन और नियंत्रण) नियम, 2000
- ओजोन क्षयकारी पदार्थ (विनियमन एवं नियंत्रण) नियम, 2000
- बैटरी (प्रबंधन और हैंडलिंग) नियम, 2001
- गैस सिलेंडर नियम, 2016
- पंजाब दुकान और तल स्थापना अधिनियम, 1958 (हरियाणा सहित)
- ई–अपशिष्ट (प्रबंधन) नियम, 2016
- बायोमेडिकल अपशिष्ट (प्रबंधन और हैंडलिंग) नियम, 2016
- विद्युत नियम, 2005
- पेट्रोलियम नियम, 2002
- संबंधित विभागों द्वारा विधायी रजिस्टर आवश्यकताओं का अनुपालन

(iv) परिचालन नियंत्रण प्रक्रियाएं
(आईएमएस मैनुअल खण्ड सं 4.4.2):

निगम मुख्यालय में आईएमएस प्रणाली को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए विभिन्न गतिविधियों या प्रक्रियाओं को नियंत्रित करने हेतु परिचालन नियंत्रण प्रक्रियाएं निर्धारित की गई है, जिसमें से प्रमुख परिचालन नियंत्रण प्रक्रियाएं निम्नलिखित हैं–

- डीजी सेट का संचालन और रखरखाव
- बैटरियों का निपटान
- प्रयुक्त तेल का निपटान
- ऊर्जा संरक्षण
- तेल रिसाव और रिसाव की रोकथाम
- अपशिष्ट निपटान
- तेल पकड़ने वाले का रखरखाव
- पेंटिंग और बढ़ईगीरी
- आग की रोकथाम
- कागज की खपत में कमी
- फ्रीऑन के रिसाव की रोकथाम (R&22)
- जल संरक्षण
- जलपान गृह
- आपूर्तिकर्ताओं के लिए ओएच एंड एस दिशानिर्देश
- योजना स्तर पर ओएचएस के विचारों का एकीकरण
- पेय जल की गुणवत्ता
- फूड हैंडलर्स और क्रेच नैनीज़ के लिए मेडिकल चेक अप

- उच्च शोर वाले क्षेत्र में ईयर प्लग का उपयोग
- वर्षा जल संचयन गड्ढे की सफाई
- कंप्यूटर के कार्ट्रिज और टोनर का निपटान और मॉनिटरिंग

(v) फोटोकॉपियर के टोनर का निपटान और निगरानी कार्य अनुदेश (आईएमएस मैनुअल 4.4.2) –

निगम मुख्यालय में आईएमएस प्रणाली को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए विभिन्न कार्य अनुदेश भी निर्धारित किए गए हैं जोकि निम्नलिखित हैं –

- क्रेच में स्वास्थ्य और सुरक्षा
- अच्छी हाउस कीपिंग
- विद्युत कार्य के दौरान सुरक्षा
- कार्यस्थल में शारीरिक व्यायाम/योग
- कार्यस्थल पर शोर कम करना
- गैसीय कटिंग और वेल्डिंग ऑपरेशन
- कार्यस्थल सुरक्षा
- आपात स्थिति में लिफ्ट को संभालना

एकीकृत प्रबंधन प्रणाली को सफलतापूर्वक कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण रिपोर्टें –

निगम मुख्यालय में सम्पूर्ण रूप से लागू एकीकृत प्रबंधन प्रणाली (आईएसओ 9001:2015, आईएसओ 14001:2015 और आईएसओ 45001:2018) के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए गुणवत्ता आश्वासन व निरीक्षण विभाग प्रबंधन समानुदेशिती विभाग के रूप में जिम्मेदार है जोकि सभी संबंधित विभागों के आईएमएस के सभी रिपोर्टें को संकलित करता है। इसके अलावा, संबंधित विभागों के विभागाध्यक्ष और उस विभाग के डीडीसी (विभागीय दस्तावेज समन्वयक) उन विभागों के आंकड़ों को तैयार करने और अपने विभागों से गुणवत्ता आश्वासन व निरीक्षण विभाग को भेजने के लिए उत्तरदायी हैं। ये रिपोर्टें निम्नलिखित हैं–

1. उद्देश्य एवं लक्ष्य (एनएचपीसी–सीओ–आईएमएसएम/अनुबंध 'सी'/ एफ01)
2. जोखिम एवं अवसर (एनएचपीसी–सीओ–आईएमएसएम/अनुबंध 'सी'/ एफ02)
3. कार्य योजना (एनएचपीसी–सीओ–आईएमएसएम/अनुबंध 'सी'/ एफ03)
4. प्रगति रिपोर्ट (एनएचपीसी–सीओ–आईएमएसएम/अनुबंध 'सी'/ एफ04)
5. एचआईआरए में परिवर्तन (एनएचपीसी–सीओ–एचआईआरए के अनुसार)
6. आईसा में परिवर्तन (एनएचपीसी–सीओ–आइसा के अनुसार)
7. कागज की खपत (एनएचपीसी–सीओ–आईएमएसएम/अनुबंध 'जी'/एफ01)
8. टोनर/कार्ट्रिज की खपत (एनएचपीसी–सीओ–आईएमएसएम/अनुलग्नक 'जी'/एफ02)
9. अंशांकन रिपोर्ट (एनएचपीसी–सीओ–आईएमएसएम/अनुबंध 'जी'/ एफ03)
10. घटना/दुर्घटना रिपोर्ट (एनएचपीसी–सीओ–आईएमएसएम/अनुलग्नक 'जी'/एफ04)
11. इच्छुक पार्टियां और उनकी आवश्यकताएं (एनएचपीसी–सीओ–आईएमएसएम/अनुबंध 'जी'/एफ05)
12. ईएमएस, चिकित्सा और आईटी के लिए कानूनी अनुपालन (एनएचपीसी–सीओ–एलआर/14/एफ01 से एफ03)
13. ग्राहक शिकायतें (एनएचपीसी–सीओ–आईएमएसपी/19/एफ01)

एकीकृत प्रबंधन प्रणाली के सफलतापूर्वक कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा / समितियाँ

(i) आंतरिक लेखापरीक्षा (आईएमएसपी:17)

आंतरिक लेखापरीक्षा के दौरान आईएमएस की सभी गतिविधियों का सत्यापन किया जाता है। सभी विभागों में आंतरिक लेखा परीक्षा आयोजित करने के लिए प्रबंधन समानुदेशिती विभाग एक विस्तृत योजना और कार्यक्रम (हर छह महीने में) तैयार करता है। आंतरिक लेखापरीक्षा के दौरान निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिंदुओं का ध्यान रखा जाता है :

- लेखापरीक्षा के लिए केवल प्रशिक्षित आंतरिक लेखापरीक्षकों की नियुक्ति की जाती है, जो उस विभाग की सभी गतिविधियों से स्वतंत्र होता है। लेखा परीक्षक ऑडिट की जाने वाली गतिविधियों की स्थिति और महत्व के साथ–साथ पिछले ऑडिट के परिणामों के आधार पर ऑडिट करता है। साथ ही साथ विभाग में गैर अनुपालन को दर्शाते हुए रिपोर्ट तैयार करता है।
- लेखापरीक्षक अनुवर्ती लेखापरीक्षा के दौरान की गई सुधारात्मक कार्रवाइयों के कार्यान्वयन को सत्यापित और रिकॉर्ड करते हैं।
- प्रबंधन समनुदेशिती आयोजित लेखापरीक्षा का सारांश तैयार कर प्रबंधन समीक्षा बैठक में प्रस्तुत करता है तथा उनके परिणामों का रिकॉर्ड रखता है।

सुरक्षा समिति (आईएमएसएम:5)

कर्मचारियों और प्रबंधन की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए एनएचपीसी निगम मुख्यालय में सुरक्षा समिति का गठन किया गया है, जो सभी प्रासंगिक बिंदुओं पर चर्चा करती है तथा आईएमएस कार्यान्वयन के लिए त्रैमासिक समीक्षा बैठक आयोजित करती है। इस बैठक की प्रमुख कार्यसूची निम्नलिखित है :

- सभी कार्मिकों के बीच स्वास्थ्य, सुरक्षा और पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करना और संभावित समस्याओं का व्यावहारिक समाधान सुनिश्चित करना।
- निगम मुख्यालय में निर्धारित आपातकालीन योजनाओं, आइसा, हिरा, व अन्य रिपोर्टों में की गई सिफारिशों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करना।
- स्वास्थ्य और सुरक्षा सर्वेक्षण करना और दुर्घटनाओं/घटनाओं के कारणों की पहचान करना।
- सभी कार्मिकों (संविदाकर्मी व आगंतुकों सहित) की सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए एक आसन्न खतरे की संभावना पर की गई किसी भी शिकायत/सुझाव को देखते हुए सुधारात्मक उपायों का सुझाव देना।

(ii) कैंटीन समिति(ओसीपी–13)

निगम मुख्यालय में सफलतापूर्वक कैंटीन के संचालन हेतु, कर्मचारी यूनियन और प्रबंधन (एक डॉक्टर सहित) की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए एक कैंटीन समिति का गठन किया गया है। इस समिति द्वारा मासिक निरीक्षण किया जाता है और समिति की रिपोर्ट के आधार पर कैंटीन में जरूरी सुधार और बदलाव की रूपरेखा तय की जाती है। इस बैठक की न्यूनतम कार्यसूची निम्नलिखित है :

- कैंटीन समिति द्वारा स्वास्थ्य और स्वच्छता के मामलों के बारे में अच्छी तरह से ध्यान रखना और उसे लागू कराना।
- कैंटीन समिति नियमित रूप से कार्यात्मक टीम को स्वस्थ और स्वच्छ कैंटीन प्रथाओं पर किसी भी बदलाव और मौजूदा प्रदर्शन के बारे में बताती है।
- कैंटीन समिति, कैंटीन ठेकेदार को बिना पूर्व

सूचना के, कैंटीन का औचक निरीक्षण करती है और निरीक्षण के दौरान प्रत्येक गतिविधि के लिए सभी महत्वपूर्ण चेकलिस्ट का उपयोग करते हुए और उसे अपने रिपोर्ट में दर्ज भी करती है।

- समिति द्वारा कैंटीन के सफल संचालन के लिए इन्वेंट्री रजिस्टर बनवाना, कैंटीन में स्वस्थ और स्वच्छ कार्य प्रथाओं को सुनिश्चित करना। कीड़ों और संक्रामक सामग्री से बचने के लिए कैंटीन के कचरे और बचे हुए कचरे का नियमित और समय पर निपटान सुनिश्चित करना इत्यादि।
- हर महीने की अपनी रिपोर्ट प्रबंधन को प्रस्तुत करना।

(iii) ऊर्जा संरक्षण टास्क फोर्स

निगम मुख्यालय में ऊर्जा संरक्षण व खपत के उदेश्य से एक टास्क फोर्स का गठन किया गया है, जिसके द्वारा त्रैमासिक समीक्षा बैठक की जाती है और उसकी रिपोर्ट के अनुसार ऊर्जा खपत और उसमें इस दिशा में जरूर सुधार और बदलाव की रूपरेखा तय की जाती है। टास्क फोर्स अपनी रिपोर्ट प्रबंधन को प्रस्तुत करती है।

(iv) निगरानी लेखा परीक्षा

प्रमाणन निकाय के द्वारा निगरानी लेखा परीक्षक नियुक्त किया जाता है जो सालाना निगरानी लेखा परीक्षा करता है। निगरानी लेखा परीक्षक द्वारा पूरे निगम मुख्यालय के सभी संबंधित विभागों और उसकी आईएमएस प्रक्रियाओं, विभागीय रिपोर्ट, रजिस्टर, समिति रिपोर्ट, ऑडिट रिपोर्ट और प्रबंधन समीक्षा बैठक रिपोर्ट इत्यादि का परीक्षण किया जाता है और संतुष्टि के उपरांत ही एकीकृत प्रबंधन प्रणाली के प्रमाणपत्र की वैधता अगले एक साल तक जारी रखने के लिए संस्तुत करता है।

(v) प्रबंधन समीक्षा बैठक (आईएमएसपी:18)

निगम मुख्यालय में एकीकृत प्रबंधन प्रणाली की आवश्यकताओं के अनुरूप और उसके प्रभावी ढंग से कार्यान्वयन की समीक्षा हेतु वार्षिक स्तर पर सभी विभागाध्यक्षों व सभी निदेशकों की उपस्थिति में माननीय अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक महोदय की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक आयोजित की जाती है। इस बैठक के महत्वपूर्ण बिन्दु निम्नलिखित है :

- प्रबंधन समनुदेशिता विभाग इस बैठक के लिए कार्यसूची और समीक्षा बैठक का कार्यवृत तैयार करता है।
- इस बैठक में एकीकृत प्रबंधन प्रणाली के कार्यान्वयन से संबंधित महत्वपूर्ण दस्तावेज/बिन्दु, रिपोर्ट, महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा/समितियों की रिपोर्ट पर विस्तृत चर्चा की जाती है। साथ ही इस बैठक में जरूरी सुधार के लिए दिशा–निर्देश जारी किए जाते हैं।

निष्कर्ष

चूंकि, एकीकृत प्रबंधन प्रणाली (आईएमएस) का प्रमाणन हमें गुणवत्ता, पर्यावरण और व्यावसायिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा प्रबंधन के क्षेत्र में पहचान दिलाती है। अतः निगम मुख्यालय में लागू आईएसओ 9001, आईएसओ 14001 और आईएसओ 45001 की सफलता सभी संबंधित विभागों के अधिकारियों व कर्मचारियों के सहयोग व जागरूकता पर निर्भर करती है। साथ ही यह सभी विभागों के द्वारा तैयार विभागीय प्रक्रियाओं व अन्य दस्तावेजों का समय–समय पर मूल्यांकन कर, उसमें आवश्यकतानुसार वदलाव कर, उसे अद्यतन कर के प्रमाती कार्यान्वियन सुनिश्चित करती है।

उठो जागो और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त नहीं हो जाता।

– स्वामी विवेकानंद

विशाल बैटरी : पम्प स्टोरेज हाइड्रो पावर प्लांट

शोभा कांत, वरिष्ठ प्रबंधक (विद्युत),
डिज़ाइन (ई. एंड एम.) विभाग, निगम मुख्यालय

भूमिका

किसी भी राष्ट्र के विकास में प्रति व्यक्ति ऊर्जा की खपत एक प्रमुख संकेत होता है। आर्थिक गतिविधियों को शक्ति प्रदान करने के लिए बिजली आवश्यक है और साथ ही प्रति व्यक्ति बिजली की खपत एवं देश में शिक्षा सूचकांक के बीच एक मजबूत संबंध होता है। भारत की ऊर्जा खपत 1947 में मात्र 16 यूनिट प्रति व्यक्ति थी, जो कि मार्च 2020 में बढ़कर 1208 यूनिट प्रति व्यक्ति हो गई।

जीवाश्म ईंधन आधारित बिजली स्रोत, विशेष रूप से कोयला, बिजली उत्पादन का पूरे विश्व में एक प्रमुख स्रोत है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि जीवाश्म प्रकृति में सीमित मात्रा में है और वे नियत समय में समाप्त हो जाएँगे। साथ ही, कोयला आधारित बिजली उत्पादन का पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इससे पर्यावरण प्रदूषित होता है और यह ग्लोबल वार्मिंग का एक कारण भी है।

स्वच्छ और हरित ऊर्जा समय की आवश्यकता है और जलविद्युत उत्पादन स्वच्छ और हरित ऊर्जा के रूपों में से एक है। बिजली उत्पादन के अन्य नवीकरणीय स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा उत्पादन और पवन ऊर्जा उत्पादन हैं लेकिन इन दोनों नवीकरणीय ऊर्जाओं की अपनी सीमाएँ हैं। इन स्रोतों से प्राप्त होने वाली बिजली की प्रकृति अनिरंतर होती है और मुख्य रूप से दिन के समय इसका उत्पादन किया जाता है।

मई 2021 तक, भारत में प्रमुख नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता लगभग सौर ऊर्जा से 41000 मेगावाट और पवन ऊर्जा से 39500 मेगावाट है। साथ ही भारत ने 2022 के अंत तक 175000 मेगावाट अक्षय ऊर्जा का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। नवंबर 2021 में ग्लासगो, स्कॉटलैंड में आयोजित 26 वें संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में, जिसे आमतौर पर CoP_{26} के रूप में जाना जाता है, भारत ने 2030 तक गैर–जीवाश्म आधारित उत्पादन 500000 मेगावाट की प्रतिबद्धता जताई है एवं 2070 तक नेट–ज़ीरो' कार्बन उत्सर्जन का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। नवीकरणीय ऊर्जा के इस बड़े पैमाने पर प्रवेश के कारण भविष्य में केंद्रीकृत सिंक्रोनस संयंत्र कम प्रभावी होंगे। इसके अलावा नवीकरणीय स्रोतों से प्राप्त ऊर्जा की आपूर्ति परिवर्तनशील है और वोल्टेज और आवृत्ति को स्थिर बनाए रखने के लिए केवल इन्वर्टर आधारित संसाधनों पर पूरी तरह निर्भर नहीं रहा जा सकता है। ग्रिड बैलेंसिंग में हाइड्रो पावर प्लांट की प्रमुख भूमिका रहती है। बड़े पैमाने पर स्टोरेज क्षमताओं एवं ग्रिड को स्थिर बनाए रखने की आवश्यकता को 'पम्प स्टोरेज हाइड्रो पावर प्लांट' के माध्यम से स्वाभाविक रूप से पूरा किया जा सकता है। 'पम्प स्टोरेज हाइड्रो पावर प्लांट' ग्रिड की आवृत्ति नियंत्रण, जड़ता और ब्लैक स्टार्ट में सहायक होता है। साथ ही 'पम्प स्टोरेज हाइड्रोपावर प्लांट' एक स्थायी तरीके से नेट–ज़ीरो' कार्बन उत्सर्जन लक्ष्य को प्राप्त करने में भी मदद करेगा।

पम्प स्टोरेज पावर प्लांट–अभिप्राय

पम्प स्टोरेज हाइड्रो पावर प्लांट, एक हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर प्लांट ही है, जिसमें सामान्यतः दो जलाशय– निचला जलाशय एवं ऊपरी जलाशय होते हैं। लीन पीरियड (ग्रिड में विद्युत की कम मांग की अवधि) के दौरान निचले जलाशय से पानी को ऊपरी जलाशय में पम्प किया जाता है और पीक आवर्स (ग्रिड में विद्युत के

अधिक मांग की अवधि) के दौरान इन पानी का उपयोग उसी तरह से बिजली पैदा करने के लिए किया जाता है, जैसे किसी भी अन्य पारंपरिक जलविद्युत संयंत्र में होता है।

यह तकनीक पहली बार 1890 के दशक की शुरुआत में स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख में प्रयोग की गई थी, जब एक स्थानीय नदी एक छोटे पम्प स्टोरेज बिजली संयंत्र के माध्यम से पास की झील से जोड़ी गई थी। पम्प स्टोरेज जलविद्युत परियोजना 1920 के दशक से व्यावसायिक रूप से ऊर्जा स्टोरेज एवं ग्रिड स्थिरता बनाए रखने में सहायता कर रही है।

भारत में पहला पम्प स्टोरेज हाइड्रो पावर प्लांट 'नागार्जुन सागर, तेलंगाना' में छठी पंचवर्षीय योजना में चालू किया गया था।

पम्प स्टोरेज पावर प्लांट के प्रकार

जलाशयों में अंतर प्रवाह के आधार पर पम्प स्टोरेज जलविद्युत संयंत्र दो प्रकार के होते हैं :–

1. **ऑफ रिवरः** इसमें कोई भी जलाशय (ऊपरी और निचली) नदी पर नहीं होता है। इसे 'क्लोज्ड लूप हाइड्रो पावर प्लांट' या 'प्योर पम्प स्टोरेज प्लांट' भी कहा जाता है।
2. **नदी परः** इसमें एक जलाशय (आमतौर पर निचला जलाशय) नदी पर होता है। इसे मिश्रित पम्प स्टोरेज पावर प्लांट भी कहा जाता है।

विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, जलाशय की मात्रा (छोटा या बड़ा) के आधार पर पम्प स्टोरेज जलविद्युत संयंत्र दो प्रकार के होते हैंः–

1. **दैनिक पीएसपी**– इनमें विद्युत उत्पादन के कुछ घंटों के बाद पम्पिंग की आवश्यकता होती है।
2. **साप्ताहिक पीएसपी**– इनमें बिना पम्पिंग के विद्युत उत्पादन 20 से 40 घंटे तक किया जा सकता है।

मशीन व्यवस्था के आधार पर एक पम्प स्टोरेज जलविद्युत संयंत्र को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता हैः

1. **क्लासिकल पम्प स्टोरेज प्लांटः**– इस प्रकार के पावर प्लांट में चार मशीनें होती हैं, पम्प, मोटर, जनरेटर और टर्बाइन।
2. **टर्नरी पम्प स्टोरेजः**– इस प्रकार के बिजली संयंत्रों में तीन मशीन क्रमशः पम्प, मोटर–जनरेटर और टर्बाइन होते हैं।
3. **प्रतिवर्ती पम्प टर्बाइनः** इस प्रकार के बिजली संयंत्रों में केवल दो मशीनें पम्प–टर्बाइन और मोटर–जनरेटर होती हैं। इसे पुनः तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया गया हैः
   (i) मोटर जनरेटर–निश्चित गति
   (ii) मोटर जनरेटर परिवर्ती गति – फुल पावर कन्वर्टर का उपयोग करते हुए।
   (iii) मोटर जनरेटर परिवर्ती गति – डीएफआईएम का उपयोग करते हुए।

रिवरसिबल पम्प स्टोरेज हाइड्रो इलैक्ट्रिक पावर प्लांट का एक विशिष्ट लेआउट

पम्प स्टोरेज हाइड्रो पावर प्लांट के लाभ

पम्प स्टोरेज प्लांट में पावर आउटपुट और ग्रिड बैलेंसिंग में प्रतिक्रिया करने की त्वरित क्षमता होती है। पम्प स्टोरेज हाइड्रो प्लांट के विशिष्ट लाभ निम्नलिखित हैः–

1. इसमें पारंपरिक जलविद्युत संयंत्र के सभी लाभ निहित हैं
   (i) उत्पादन क्षमता/पीकिंग पावर
   (ii) आवृत्ति रेग्युलेशन
   (iii) ब्लैक स्टार्ट
   (iv) मांग संचालित विविधताओं में ग्रिड संतुलन बनाए रखना
   (v) ग्रिड स्थिरता
   (vi) वोल्टेज रेग्युलेशन
   (vii) त्वरित प्रतिक्रिया
2. लगभग 80% साइकल दक्षता
3. अनिरंतर विद्युत ऊर्जा स्रोतों को एकीकृत करना
4. जलाशय भंडारण क्षमता का अनुकूलतम उपयोग
5. बेसलोड संयंत्रों की उच्च परिचालन क्षमता
6. चार परिचालन मोड–पम्पिंग, आईसोलेटिंग, कंडेनसर और जनरेटिंग

अनिरंतर ऊर्जा स्रोतों के साथ एकीकरण

ग्रिड में सौर और पवन सुविधा की बढ़ती मात्रा के एकीकरण के लिए संतुलन रणनीतियों और इष्टतम स्टोरेज प्रणाली की आवश्यकता है। जबकि, स्टोरेज सुविधा के कई रूप दुनिया भर में उपलब्ध हैं। उसमें से पम्प स्टोरेज जलविद्युत संयंत्र पीक पावर प्रदान करने और ग्रिड स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। पम्प स्टोरेज पावर प्लांट बड़े पैमाने पर ऊर्जा स्टोरेज का एकमात्र दीर्घकालिक तकनीकी रूप से सिद्ध, लागत प्रभावी, अत्यधिक दक्षता वाला, परिचालन में सरल और अल्प सूचना में विद्युत उत्पादन करने वाला साधन है। इन बिजली संयंत्रों से पर्यावरण में ग्रीनहाउस गैसों को कम करने के लिए अतिरिक्त लाभ भी लिया जा सकता हैं।

भारतीय संदर्भ में अक्षय ऊर्जा

नवीकरणीय स्रोतों से उत्पादन की संभावना ज्यादातर भारत के दक्षिणी और दक्षिण–पश्चिमी राज्यों तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान में केंद्रित है। ये राज्य 80% से अधिक नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन में योगदान करते हैं। पीक आवर्स के दौरान सामान्य तौर पर पवन और सौर ऊर्जा से विद्युत उत्पादन नहीं किया जा सकता है। ये नवीकरणीय ऊर्जा आवश्यक मात्रा में और आवश्यक समय पर भी ऊर्जा प्रदान नहीं कर सकते हैं। इन स्रोतों से उत्पादित विद्युत ऊर्जा की अधिकता को संग्रहित किया जा सकता है और आवश्यकता पड़ने पर इसका उपयोग किया जा सकता है।

भारत पहले ही 'एकीकृत नवीकरणीय ऊर्जा स्टोरेज परियोजनाओं' के क्षेत्र में प्रगति कर चुका है। इस श्रेणी में मैसर्स ग्रीनको वर्तमान में तीन (03) परियोजनाओं को विकसित कर रहा है। ये परियोजनाएं क्रमशः कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश राज्यों में स्थित हैं। ये परियोजनाएं राष्ट्रीय ग्रिड कनेक्टिविटी के साथ ग्रिड को चौबीसों घंटे बिजली प्रदान करने के लिए डिजिटल रूप से जुड़े पम्प स्टोरेज प्लांट के साथ सौर और पवन संसाधनों का उपयोग करेगी।

आईईए के अनुसार, भारत 390000 मेगावाट से अधिक उत्पादन क्षमता और 190000 मेगावाट से अधिक पीक डिमांड के साथ दुनिया के सबसे बड़े ग्रिडों में से एक का रखरखाव कर रहा है। 448000 सर्किट किमी. ट्रांसमिशन लाइन और 103000 मेगावाट से अधिक नवीकरणीय उत्पादन क्षमता है। साथ ही, वर्तमान में भारत में लगभग 15GW/hr की मांग परिवर्तनशीलता है।

भारतीय ग्रिड में नवीकरणीय ऊर्जा में वृद्धि के कारण स्टोरेज की आवश्यकता भी बढ़ी है और पम्प स्टोरेज जलविद्युत संयंत्र निम्नलिखित कारणों से इसके लिए सबसे उपयुक्त विकल्प हो सकते हैं:–

1. परिपक्व और भरोसेमंद तकनीक

2. संयंत्रों का 50 वर्ष से अधिक का कार्य करने की क्षमता
3. त्वरित रैंपिंग प्रदान करना
4. बड़े पैमाने पर बिजली स्टोरेज के लिए उपयुक्त होना
5. अनिरंतर जेनेरेशन के पूरक के लिए सबसे उपयुक्त सहायक सेवाएं प्रदान करना
6. पवन एवं सौर ऊर्जा उत्पादनों में रैम्पिग के कारण ग्रिड में उत्पन्न व्यवधानों को पम्प स्टोरेज प्लांट द्वारा त्वरित प्रतिक्रिया से ग्रिड को स्थिरता प्रदान किया जा सकता है।

भारत में लगभग 96524 मेगावाट के पम्प स्टोरेज हाइड्रो पावर प्लांट की क्षमता की पहचान की गई है। पम्प स्टोरेज हाइड्रो प्लांट की स्थापित क्षमता 9 स्टेशनों से लगभग 4785 मेगावाट है, जिनमें से 3 स्टेशन निचले जलाशयों की अनुपलब्धता के कारण पम्प मोड में काम नहीं कर रहे हैं। कुल कार्यरत पम्प स्टोरेज हाइड्रो प्लांट क्षमता 3305.6 मेगावाट है।

निष्कर्ष

अक्षय स्रोतों से विश्वसनीय ऊर्जा प्रदान करने के लिए, पम्प स्टोरेज हाइड्रो पावर प्लांट सबसे उपयुक्त तंत्र है, जहां बड़ी मात्रा में ऊर्जा को लगभग 80% की उच्च चक्र दक्षता और 50 वर्षों से अधिक सेवा जीवन के साथ संग्रहीत किया जा सकता है। इसलिए, अक्षय स्रोतों से ऊर्जा उत्पादन के लिए, विशेष रूप से सौर और पवन के लिए, पम्प स्टोरेज जलविद्युत संयंत्र एक 'विशाल बैटरी' के रूप में कार्य कर सकता है।

क्र. सं.	विवरण	संस्थापित क्षमता	
	वर्तमान में पम्प मोड में काम रही परियोजनाएं		
1	नागार्जुन सागर, तेलंगाना	7 X 100.8 मेगावाट	705.6 मेगावाट
2	श्रीशैलम एलबीएचपी	6 X 150 मेगावाट	900 मेगावाट
3	कदमापराय, तमिलनाडु	4 X 100 मेगावाट	400 मेगावाट
4	भीम, महाराष्ट्र	1 X 150 मेगावाट	150 मेगावाट
5	घाटगर, महाराष्ट्र	2 X 125 मेगावाट	250 मेगावाट
6	पुरुलिया, पश्चिम बंगाल	4 X 225 मेगावाट	900 मेगावाट
	कुल		3305.6 मेगावाट
वर्तमान में पम्प मोड में काम नहीं रही परियोजनाएं			
7	कड़ाना, गुजरात	4x60 मेगावाट	240 मेगावाट
8	सरदार सरोवर परियोजना, गुजरात	6x200 मेगावाट	1200 मेगावाट
9	पंचेत हिल, झारखंड	1x 40 मेगावाट	40 मेगावाट
	कुल		**1480 मेगावाट**
सक्रिय निर्माणाधीन परियोजनाएं			
10	टिहरी चरण–II, उत्तराखंड	4x250 मेगावाट	1000 मेगावाट
11	कुंडाह चरण–I, II, III एवं IV, तमिलनाडु	4x125 मेगावाट	500 मेगावाट
			1500 मेगावाट
रुकी हुई निर्माणाधीन परियोजना			
12	कोयना लेफ्ट बैंक, महाराष्ट्र	2x40 मेगावाट	80 मेगावाट
	कुल		**80 मेगावाट**

ध्यान - विज्ञान

कविता धमेजा, सहायक प्रबंधक (सचिव)
डिजाइन एवं इजीनियरिंग विभाग, निगम मुख्यालय

ध्यान का अर्थ है, मन का पूरी तरह निर्विचार होना अर्थात् निर्विकार व विचार शून्य मन। ध्यान चितदशा और एक जीवन शैली है। जब मन विचार शून्य हो जाता है तो वैश्विक ऊर्जा हमारे शरीर मे प्रवेश करती है जिससे हम संपूर्ण स्वास्थ, विचारों में स्पष्टता, आनंदमय जीवन और आत्मिक विकास की अवस्था को प्राप्त कर लेते है तथा हम दिव्यता से जुड़ जाते हैं।

ध्यान की जरूरत क्यों?

आज लगभग हर व्यक्ति अशांत, तनावग्रस्त, चिंताग्रस्त, उद्विग्न, अनिद्रा से ग्रस्त जीवन जी रहा है। आज शहर तो शहर पर देहातों में रहने वाले व्यक्ति भी उदास व चिंताग्रस्त हैं, सभी कुछ न कुछ पाने की दौड़ में भाग रहे हैं। सफलता पाने के लिए जो भाग–दौड़, उठापटक, श्रम के साथ–साथ आज का व्यक्ति छल और दावपेचों के बलबूते अपनी आत्मा की आवाज़ को दबाकर कार्य कर रहा है और परिणामस्वरूप मानसिक रूप से विक्षिप्त बना रहता है। ध्यान का अर्थ है सदैव सचेत रहना, द्रष्टा बने रहना।

ध्यान हमारी आत्मा का भोजन है

ध्यान करना अत्यंत सरल एवं सहज है। किसी भी सुखासन में बैठे–बैठे भी ध्यान कर सकते हैं। अपनी आंखे बंद कर..पांव क्रॉस करें.. अंगुलियों को दूसरे हाथ की अंगुलियों में फंसा लें। यदि चश्मा पहना हो तो उतार दें.. शरीर को शिथिल छोड़ दें.. और अपनी स्वाभाविक आती जाती साँसों (जो एक स्वाभाविक प्रक्रिया है) को महसूस करें। साँसों के प्रति जागरूक रहें। जब भी मन इधर–उधर भटके, जो कि शुरुआत में होता है, तो हमें बार–बार बिना ध्यान भटकाए मन वापस सांस पर लगाना है। यह ध्यान की एक वैज्ञानिक विधि है।

हाथों से हमारी 10% ऊर्जा जाती है, पैरों से भी 10% ऊर्जा और आंखों से 80% ऊर्जा जाती है। न कोई मंत्र जाप, न कोई कल्पना करें, न विचारों का पीछा। मन में जब भी विचार उठें पुनः अपनी सांसों को महसूस करें।

अपनी उम्र के हिसाब से उतनी मिनट ध्यान अवश्य करें–

30 साल वाले .. 30 मिनट ..50 साल वाले .. 50 मिनट

उपरोक्त समय सीमा कम से कम है। आप इससे अधिक ध्यान भी कर सकते हैं। एक घंटे का ध्यान छः घंटे की नींद से ज्यादा ऊर्जा देता है। ध्यान एक ऐसा उपहार है जो आप स्वयं ही स्वयं को दे सकते हैं। ध्यान किसी भी समय और किसी भी स्थान एवं किसी भी परिस्थिति में किया जा सकता है। यात्रा के दौरान भी किया जा सकता है। ध्यान के लिए संयम और निरंतर अभ्यास अति आवश्यक है।

ध्यान विज्ञान ऊर्जा का विज्ञान है। इसमें श्वांस ही हमारा गुरू है।

ध्यान के फायदे

- शारीरिक बीमारियों को कम किया जा सकता है।
- ध्यान से एकाग्रता और स्मरणशक्ति मे वृद्धि होती है।
- अवांछित आदतें जैसे ज्यादा खाना, सोना, बोलना, आलस्य और भी अनेक प्रकार की आदतों का अंत हो जाता है।
- हम अपने सभी कार्य कुशलता से कर सकते हैं।
- मन सदा प्रफुलिल्त रहता है।
- विचारों में शुद्धि होने से हमारी संकल्प शक्ति मे वृद्धि होती है।
- किसी भी परिस्थिति में हम आसानी से उचित निर्णय ले सकते हैं।

अब हमारा एक ही सपना, आत्मनिर्भर हो भारत अपना

माला आनन्द, महाप्रबंधक (विद्युत)
डिज़ाइन (ई एंड एम), निगम मुख्यालय

महात्मा गांधी जी का था एक सपना
आत्मनिर्भर हो हर गांव अपना,
हरित क्रांति से भरे रहें खेत हमारे
फल फूलों से लदे रहें बगीचे सारे।
दूध दही छलकती रहे हर घर में
मुस्कुराहट दमकती रहे सभी के चेहरों पर।
अब हमारा एक ही सपना, आत्मनिर्भर हो भारत अपना।

जरूरत का कोई भी सामान कम ना पड़े
संसार के आगे हाथ फैलाने की नौबत ना आन पड़े
कोई गरीबी में ना जिए और कोई भूखे पेट न सोए
ऐसा आत्मनिर्भर हो भारत, अब हमारा एक ही सपना।

धान से परिधान तक, ज्ञान से विज्ञान तक
धरती से आकाश तक
आत्मनिर्भर हो भारत अपना, अब हमारा यही है सपना।

सुई से लेकर जहाज़ तक हम बनाएंगे,
मंगल पर बस्ती हम बसाएंगे
जनजीवन को सहज़ हम बनाएंगे
स्वदेशी को ही अपनाएंगे।
अब हमारा एक ही सपना, आत्मनिर्भर हो भारत अपना

कुटीर उद्योग को बढ़ावा दें, लोकल पर वोकल बनें,
कला और संस्कृति को बढ़ायें, ऑर्गेनिक खेती को ही अपनाएं।
ऐसा आत्मनिर्भर हो भारत अपना, अब हमारा यही है सपना।

स्किल इंडिया का गान हो, 'मेक इन इंडिया' का तान हो,
सीमाओं की सुरक्षा में नवीनतम साजों सामान हो
चारों ओर सतत विकास हो, सतत विकास हो ,
ऐसा आत्मनिर्भर हो भारत अपना, अब हमारा यही है सपना।

मिलकर चले हम, मिलकर लड़े हम,
एक बने हम, श्रेष्ठ बने हम।
अब हमारा एक ही सपना, आत्मनिर्भर हो भारत अपना
अब हमारा एक ही सपना, आत्मनिर्भर हो भारत अपना।।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

इन्दु शर्मा, सहायक प्रबंधक (आईटी)
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

इस देश के वीरों ने चाही थी आज़ादी,
भूख से आज़ादी और दर्द से आज़ादी,
हानि से आज़ादी और दमन से आज़ादी,
निराशा से आज़ादी,आशा की आज़ादी,
जरूरतमंदों को देने की आज़ादी।

परिश्रम करने वालों को शोषण से आज़ादी,
बोलने की आज़ादी, सोचने की आज़ादी,
कुछ बनने की आज़ादी, आगे बढ़ने की आज़ादी,
पढ़ने की आज़ादी, जरूरतमंदों को पढ़ाने की आज़ादी,

आने की आज़ादी, जाने की आज़ादी,
संघर्ष से आज़ादी, वैमनस्य से आज़ादी,
जातकर्म से आज़ादी, जुल्म से आज़ादी,
पराधीनता से आज़ादी, अज्ञान के अंधकार से आज़ादी,
आनंदपूर्वक जीवन जीने की आज़ादी,
प्रसन्न करने और खुश रहने की आज़ादी।

असफलता से आज़ादी और उत्सव की आज़ादी,
स्वतंत्र इनकार की आज़ादी और पहुंच की आज़ादी,
भ्रम से आज़ादी और वास्तविकता की आज़ादी,
हम जो वास्तविकता में हैं, वह बनने की आज़ादी।

जीने की आज़ादी, जीने देने की आज़ादी,
हँसने की आज़ादी, रोने की आज़ादी,
बोलने की आज़ादी, सुनने की आज़ादी,
अपने फैसलों पर काम करने की आज़ादी।

नफरत से आज़ादी और प्यार की आज़ादी,
दलित की आज़ादी और उत्कृष्ट की आज़ादी,
अतीत की आज़ादी और वर्तमान की आज़ादी,
भविष्य की आज़ादी, प्रतिनिधित्व की आज़ादी।

युद्ध से आज़ादी और शांति की आजादी,
प्रारम्भ की आजादी और अंत की आजादी,
बीमारी से आज़ादी, स्वस्थ रहने की आज़ादी,
गरीबी और कुप्रबंधित धन से आज़ादी।

गलत होने से आज़ादी और सही होने की आज़ादी,
दिन की आज़ादी और रात की आज़ादी,
चुनने की आज़ादी और नकारने की आज़ादी,
कल्पना करने की स्वतंत्रता की आज़ादी।

लोभ से आज़ादी, क्रोध से आज़ादी,
द्वेष से आज़ादी, अहंकार से आज़ादी,
भीतर से और बाहर से आज़ादी,
हमेशा कुछ न छिपाने की आज़ादी।

आविष्कार की आज़ादी, बहिष्कार की आज़ादी,
काम करने की आज़ादी और खेलने की आज़ादी,
मानने की आज़ादी और इबादत करने की आज़ादी,
किसी दिन पुनर्जन्म का अनुभव करने की आज़ादी।

शरीर से परिश्रम करने की आज़ादी और मन से आज़ादी,
अहंकार से आज़ादी, आध्यात्मिक–अतिक्रमण से आज़ादी,
सार्वभौमिक आज़ादी, शाश्वत और अनंत आनंद प्राप्त करने की आज़ादी,
इस सबको महसूस करने की आज़ादी।

लाखों करोड़ों लोगों को सपने सँजोने की आज़ादी,
मेरी आज़ादी, तुम्हारी आज़ादी,
हम सब की प्यारी माता, भारत माँ की आज़ादी,
भारत के प्रांगण में अनगिनत वीरों के नाम यह आज़ादी,
आज़ादी के महोत्सव की 75वीं वर्ष गांठ पर,
नम आँखों से श्रद्धांजलि देते हुए
महसूस करते हैं हम आज आज़ादी।

हास्य योग अपनाएं और टेंशन-डिप्रेशन दूर भगाएं

कविता धमेजा, सहायक प्रबंधक (सचिव)
डिजाइन एवं इंजीनियरिंग विभाग, निगम मुख्यालय

जीवन में हास्य नहीं है तो जीवन नीरस और व्यर्थ लगता है। हंसने से कई तरह के शारीरिक और मानसिक रोग दूर होते हैं। सेहत के लिए जीवन में हास्य और मनोरंजन होना जरूरी है। जानवर हंसते हैं या नहीं लेकिन आदमी में ही यह क्षमता है कि वह खुलकर हंस सकता है। जीवन में हास्य और मनोरंजन की बहुत आवश्यकता होती है इससे शरीर और मन में शांति मिलती है। इसके लिए 'हास्य योग' का अभ्यास करें।

कैसे करें : हास्य योग को योग शिक्षक कई तरह से सिखाते हैं। आप अकेले में या सामूहिक रूप से निष्प्रयोजन हंसे। छोटी छोटी बातों को भी हंसने का कारण बनाकर जोर से हंसने का अभ्यास करें। शुरू में आपको यह नकली लगेगा लेकिन धीरे–धीरे असली में हंसते रहने की आदत हो जाएगी जो महत्वपूर्ण बदलाव लाएगी।

आपका छोटा–सा प्रयास ही आपके जीवन में बदलाव ले आएगा। स्वयं को दुख–दर्द से अलग करके देखना सीखें और हर जगह मुस्कुराहट बिखेरते रहें। हास्य योग से आपका दिल, दिमाग और रक्त तो स्वस्थ और शुद्ध रहता ही है। इससे पेट सहित संपूर्ण शरीर में खिंचाव होने से भीतर के अंग स्वस्थ होने लगते हैं। व्यक्ति बगैर किसी एक्सरसाइज़ के युवा बना रह सकता है।

तो प्रतिदिन सुबह, दोपहर, शाम और रात को सोने से पहले एक बार अकेले में और फिर सामूहिक रूप से खिलखिलाकर जोर से हंसे जरूर। यह मत सोचें कि कोई क्या सोचेगा। सबसे बड़ा रोग, क्या कहेंगे लोग। हंसी तो संक्रामक रोग है इस रोग तो जितना हो सके फैलाएँ।

स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त

1. शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक का शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास हो सके।
2. शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक के चरित्र का निर्माण हो, मन का विकास हो, बुद्धि विकसित हो तथा बालक आत्मनिर्भर बने।
3. बालक एवं बालिकाओं दोनों को समान शिक्षा देनी चाहिए।
4. धार्मिक शिक्षा, पुस्तकों द्वारा न देकर आचरण एवं संस्कारों द्वारा देनी चाहिए।
5. पाठ्यक्रम में लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के विषयों को स्थान देना चाहिए।
6. शिक्षक एवं छात्र का सम्बन्ध अधिक से अधिक निकट का होना चाहिए।
7. सर्वसाधारण में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार किया जाना चाहिए।
8. देश की आर्थिक प्रगति के लिए तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था की जाए।
9. मानवीय एवं राष्ट्रीय शिक्षा परिवार से ही शुरू करनी चाहिए।
10. शिक्षा ऐसी हो जो सीखने वाले को जीवन संघर्ष से लड़ने की शक्ति दे।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन झलकियां

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

- मन का संकल्प और शरीर का पराक्रम यदि किसी काम में पूरी तरह लगा दिया जाए तो सफलता मिल कर रहेगी।
- जिस समय जिस काम के लिए प्रतिज्ञा करो, ठीक उसी समय पर उसे करना ही चाहिये, नहीं तो लोगों का विश्वास उठ जाता है।

– स्वामी विवेकानंद

एनएचपीसी NHPC

एनएचपीसी लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

सैक्टर–33, फरीदाबाद, हरियाणा

वेबसाइट : http://nhpcindia.com

https://www.facebook.com/NHPCIndiaLimited https://twitter.com/nhpcltd https://www.instagram.com/nhpclimited

बिजली से संबंधित शिकायतों के लिए 1912 डायल करें।

Designed and Printed by: Viba Press Pvt. Ltd. -9810049515